mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-29 अंक-159 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

रीवा

11 जून 2025 बुधवार

दैनिक
मीडियाऑडीटर

रीवा, सतना से एक साथ प्रकाशित

आईपीएल से करोड़ों...
@ पेज 7

रीवा के सरकारी संजय गांधी अस्पताल में नाबालिग अटेंडर के साथ गैंगरेप

हैदराबाद (एजेंसी)। रीवा के संजय गांधी अस्पताल में रविवार-सोमवार की दरमियानी रात नाबालिग लड़की के साथ गैंगरेप की खबर सामने आई है। आरोप है कि अस्पताल के ही 3 आउटसोर्स कर्मचारियों ने ईएनटी विभाग और किचन के बीच बने गलियारे में रेप किया। हालांकि अभी इस मामले में पीड़िता सामने नहीं आई है, न ही पुलिस ने केस दर्ज किया है। रीवा एसपी विवेक सिंह ने कहा कि अपुष्ट सूत्रों से वारदात की जानकारी मिली है। इस संबंध में अभी पीड़िता की ओर से पुलिस को शिकायत नहीं मिली है। पुलिस पीड़िता तक पहुंचने की कोशिश कर रही है।

पीड़िता के पिता बोले- आरोपी को सजा मिले: वहीं, पीड़िता के पिता ने कहा कि मेरी बेटी के साथ गलत हुआ है। मैं आरोपी महेंद्र पर कार्रवाई और गिरफ्तारी की मांग करता हूं। पुलिस सुबह घर पर पूछताछ के लिए आई थी। अब रात में गोविंदगढ़ रेस्टहाउस में बयान के लिए बुला रही है।

अस्पताल अधीक्षक बोले- मां के साथ आई थी: अस्पताल अधीक्षक डॉ. राहुल मिश्रा ने कहा कि 2 लोगों द्वारा घटना करने की जानकारी मिली है। लड़की को इलाज के लिए अस्पताल के गायनी वॉर्ड में भर्ती कराया गया था। हालत ठीक नहीं थी तो तत्काल उपचार दिया गया। बाद में लड़की अस्पताल से कहीं चली गई। हमने पुलिस को सारे साक्ष्य सौंप दिए हैं। हम भी मामले में कड़ी कार्रवाई की मांग करते हैं। डॉ. राहुल मिश्रा के मुताबिक पीड़िता की मां अस्पताल के ईएनटी विभाग में भर्ती थी। वह भी मां के साथ अटेंडर के रूप में आई थी। ईएनटी वार्ड में ही शायद कुछ वार्ड बॉय से उनका संपर्क हुआ है।

स्ट्रेचर पर ले जाते हुए पीड़िता का सीसीटीवी फुटेज सामने आया: इसी दौरान स्ट्रेचर पर ले जाते हुए एक सीसीटीवी फुटेज सामने आया। इसको लेकर दावा किया जा रहा है कि स्ट्रेचर पर वही पीड़िता लेटी है और उसे ले जा रहे लोग आरोपी ही हैं, जो उसे अस्पताल के ही एक अन्य विभाग के सामने छोड़कर मौके से फरार हो गए। वहीं इस मामले मेंकलेक्टर बोलीं-जांच के बाद कार्रवाई करेंगे।

पटवारी बोले-मामले को दबाने का प्रयास कर रहे: इस मामले के सामने आने के बाद कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष जीतू पटवारी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ङ्क पर लिखा- रीवा जिले के सरकारी अस्पताल में नाबालिग लड़की के साथ गैंगरेप की खबर ने एक बार फिर मध्यप्रदेश के जंगलराज की भयावह तस्वीर सामने ला दी है। बताया जा रहा है कि अस्पताल के ही 3 कर्मचारियों ने अस्पताल परिसर के गलियारे में नाबालिग के साथ सामूहिक दुष्कर्म किया है। पटवारी ने आगे लिखा- यह प्रदेश के उपमुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल का गृह जिला है। स्वास्थ्य विभाग के मंत्री भी राजेंद्र शुक्ल ही हैं और जिस अस्पताल में गैंगरेप की वारदात हुई है, उस अस्पताल का अधीक्षक राजेंद्र शुक्ल का भांजा राहुल मिश्रा है। उप मुख्यमंत्री पूरे मामले को दबाने का प्रयास कर रहे हैं।जीतू पटवारी ने आगे लिखा है- मुख्यमंत्री जी, यहां भी पीड़ित लाडली को न्याय दिलवाने की बजाय आपके मंत्री आरोपियों को ही बचाने में जुट गए हैं? जुल्म के इस जंगलराज को कौन संरक्षण दे रहा है?

संक्षिप्त समाचार

ऑपरेशन सिंदूर से बौखलाया पाकिस्तान, अपने रक्षा बजट में की बढ़ोतरी

इस्लामाबाद (एजेंसी)। भारत के साथ तनावपूर्ण संबंधों के बीच पाकिस्तान ने रक्षा बजट में 20त्न की बढ़ोतरी की है। गौरतलब है कि भारत की ओर से चलाए गए ऑपरेशन सिंदूर के बाद पाकिस्तान बौखलाया हुआ है। ऐसे में उसका रक्षा बजट में बढ़ोतरी करना ये दर्शाता है कि वह भारत की ताकत को भलीभांति जान गया है और अब उसे लगता है कि भारत के सामने टिके रहने के लिए उसे रक्षा बजट बढ़ने की जरूरत है। पाकिस्तान ने मंगलवार को अपने रक्षा बजट में 20 फीसदी की वृद्धि की और

वित्त वर्ष 2025-26 के लिए 2,550 बिलियन पाकिस्तानी रुपए (9 अरब अमेरिकी डॉलर) आवंटित किए। वित्त मंत्री मुहम्मद औरंगजेब ने नेशनल असेंबली में वित्त वर्ष 2025-26 के लिए 17,573 बिलियन पाकिस्तानी रुपए का संघीय बजट पेश किया। उन्होंने नेशनल असेंबली में वित्त विधेयक के रूप में बजट दस्तावेज भी पेश किया। अपने भाषण में, मंत्री ने कहा कि सरकार ने देश की रक्षा के लिए 2,550 बिलियन पाकिस्तानी रुपए आवंटित करने का फैसला किया है। उन्होंने रक्षा खर्च के बारे में कोई और जानकारी नहीं दी क्योंकि परंपरागत रूप से रक्षा बजट पर संसद द्वारा चर्चा नहीं की जाती है। पिछले साल, सरकार ने रक्षा के लिए 2,122 बिलियन पाकिस्तानी रुपये आवंटित किए थे, जो वित्त वर्ष 2023-24 के लिए बजट किए गए 1,804 बिलियन पाकिस्तानी रुपये से 14.98 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाता है। पाक मंत्री ने हालही में पाकिस्तान-भारत संघर्ष का उल्लेख करते हुए कहा, %यह बजट ऐसे ऐतिहासिक समय में पेश किया जा रहा है ।

भारत की चाल से पस्त हो जाएगा पाकिस्तान

नई दिल्ली (एजेंसी)। तुर्किए जब भूकंप जैसी भीषण आपदा से कराह रहा था तो सबसे पहले मदद के लिए भारत ने हाथ बढ़ाया था। भारत ने महज 12 घंटों के भीतर राहत सामग्री और बचाव दल को तुर्किए में

उतार दिया था। भारत ने एनडीआरएफ की तीन टीमों को भी तुर्की में तैनात किया था। लेकिन, तुर्किए ने इस मदद के जवाब में भारत के साथ जो किया है वो दुनिया ने देखा है। भारत और पाकिस्तान के बीच बढ़ी टेंशन में तुर्किए खुलकर पाकिस्तान के समर्थन में खड़ा है। तुर्किए ने ना सिर्फ खुलकर पाकिस्तान के सपोर्ट में बयान दिए बल्कि भारत के खिलाफ संघर्ष में पाकिस्तान को ड्रोन और अन्य सैन्य उपकरण भी दिए हैं। तुर्किए की इस हरकत का विरोध पूरे देश में देखने मिला है। अब भारत ने भी तुर्किए को घेरने की तैयारी कर ली है और इसकी शुरुआत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की साइप्रस यात्रा होने वाली है। प्रधानमंत्री मोदी 15 से 17 जून तक कनाडा में होने वाले त्न 7 समिट में शामिल होंगे। कनाडा से पहले पीएम मोदी साइप्रस जाएंगे और वापसी में क्रोएशिया से होते हुए भारत आएंगे। समझने वाली बात यह है कि साइप्रस के साथ तुर्किए की दुश्मनी पुरानी है। अब ऐसे में जब पीएम मोदी साइप्रस में होंगे तो टर्किश राष्ट्रपति एर्दोगन की टेंशन जरूर बढ़ेगी। पीएम मोदी भारत के तीसरे प्रधानमंत्री होंगे जो साइप्रस का दौरा करेंगे। इससे पहले साल 2002 में तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने यहां का दौरा किया था। साल 1983 में पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने भी साइप्रस का दौरा किया था. तुर्किए और साइप्रस का विवाद दशकों पुराना है। साइप्रस एक भूमध्यसागरीय द्वीप है जो तुर्किए के दक्षिण में, सीरिया के पश्चिम और इजरायल के उत्तर पश्चिम में पड़ता है।

मैहर में दो भाइयों को कार ने टक्कर मारी-एक की मौत

मीडिया ऑडीटर, मैहर (निप्र)। मैहर में सोमवार रात करीब 10 बजे एनएच 30 पर एक दर्दनाक सड़क हादसा हुआ। ग्राम रगौली से दो सगे भाई अपने लड़के के साले की बारात में शामिल होने ग्राम पोड़ी आए थे। जन्माश के पास

सड़क किनारे बाइक से खड़े कंधीलाल पटेल (60) और रामलाल पटेल (58) को पीछे से आ रही तेज रफ्तार कार ने टक्कर मार दी। हादसे में कंधीलाल पटेल की मौके पर ही मौत हो गई। रामलाल पटेल गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना के बाद परिजनों ने कार चालक को पकड़ लिया और पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने घायलों को एंबुलेंस से मैहर सिविल अस्पताल पहुंचाया। डॉक्टरों ने कंधीलाल को मृत घोषित कर दिया। कार नंबर रुक्क्र 7ष्ह्र5299 के चालक शरद मिश्रा ने बताया कि वह नागपुर से दवा लेकर लौट रहे थे। उन्होंने कहा कि ग्राम पोड़ी के पास अचानक मोटरसाइकिल सवार दो लोग सामने आ गए, जिससे दुर्घटना हो गई। पुलिस ने मौके से कार चालक को गिरफ्तार कर लिया है और मामला दर्ज कर लिया है। रामलाल का इलाज जारी है।

ऑल पार्टी डेलिगेशन से पीएम मोदी ने की मुलाकात

विभिन्न देशों में हुई बैठकों पर पीएम ने लिया फीडबैक

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मंगलवार शाम अपने आधिकारिक आवास 7, लोक कल्याण मार्ग पर उन विभिन्न प्रतिनिधिमंडलों के सदस्यों की मेजबानी की, जिन्होंने हाल ही में विभिन्न देशों का दौरा किया था। इन प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने विभिन्न राष्ट्रों में हुई अपनी बैठकों और अनुभवों के बारे में प्रधानमंत्री को जानकारी दी।

इन प्रतिनिधिमंडलों में विभिन्न दलों के सांसद, पूर्व सांसद और प्रतिष्ठित राजनयिक शामिल थे। अपनी विदेश यात्राओं के दौरान इन प्रतिनिधिमंडलों ने आतंकवाद के खिलाफ भारत के कड़े रुख और विश्व शांति के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया था।यह बैठक ऐसे समय में हुई है जब भारत अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी भूमिका को लगातार मजबूत कर रहा है। प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने अपनी यात्राओं के दौरान भारत के हितों और मूल्यों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया, जिसकी सराहना की गई।

आतंकवाद पर पाक को बेनकाब करने का टास्क

सात सांसदों की अगुवाई में भेजे गए प्रतिनिधिमंडल को खासतौर पर आतंकवाद पर पाकिस्तान को दुनिया के सामने बेनकाब करने का टास्क दिया गया था। जिन सात सांसदों ने डेलिगेशन का नेतृत्व किया उनमें कांग्रेस से शशि थरूर, बीजेपी से रविशंकर प्रसाद, जदयू से संजय कुमार झा, बीजेपी से बैजयंत पांडा, डीएमके से कनिमोझी करुणानिधि, एनसीपी-एसपी से सुप्रिया सुले और शिंदे शिवसेना से श्रीकांत शिंदे शामिल थे।

आतंकवाद पर जीरो टॉलरेंस की नीति को बताना

दरअसल, ऑपरेशन सिंदूर के बाद आतंकवाद पर भारत का रुख दुनिया के सामने रखने के लिए अलग-अलग देशों में सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल भेजा गया था। इस डेलिगेशन के जरिए भारत ने आतंकवाद पर जीरो टॉलरेंस की नीति की जानकारी दी। यह मुलाकात ऐसे समय में हुई है जब अगले महीने मानसून सत्र शुरू होने जा रहा है और तमाम विपक्षी दल %ऑपरेशन सिंदूर% के बाद से ही सरकार के विशेष संसद सत्र बुलाने की मांग कर रहे हैं।

बता दें कि 22 अप्रैल को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम के बैसरन घाटी में पर्यटकों पर पाकिस्तानी आतंकवादियों ने हमला किया था। इस आतंकवादी हमले में 26 लोगों की मौत हो गई थी, जिनमें ज्यादातर टूरिस्ट थे।

भारत की आबादी पहुंची 1.46 बिलियन के करीब मगर फर्टिलिटी रेट में हुई गिरावट

नई दिल्ली (एजेंसी)। संयुक्त राष्ट्र ने विश्व जनसंख्या स्थिति रिपोर्ट 2025 जारी की है। इस रिपोर्ट में यह बताया गया है कि साल 2025 के अंत तक भारत की आबादी 1.46 अरब तक पहुंच सकती है और यह आबादी पूरी दुनिया में सबसे ज्यादा होगी। वहीं इस रिपोर्ट में फर्टिलिटी रेट को लेकर भी एक खुलासा किया गया है। रिपोर्ट में बताया गया है कि देश की प्रजनन दर यानी फर्टिलिटी रेट कुल प्रजनन दर से नीचे आ गई है। इस रिपोर्ट में यह कहा गया है कि देश में लाखों लोग ऐसे हैं जो अपनी प्रजनन लक्ष्य को पाने में सक्षम नहीं हैं और कम या फिर बढ़ती जनसंख्या की जगह इसी स्थिति को असली समस्या बताया गया है। संयुक्त राष्ट्र की तरफ से जो रिपोर्ट जारी हुई है उसमें बताया गया है कि भारत में कुल प्रजनन दर घटकर प्रति महिला 1.9 हो गई है जो प्रतिस्थापन स्तर 2.1 से नीचे है। इससे यह समझ में आता है कि भारत की महिलाएं एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक आबादी को बनाए रखने के लिए कम बच्चों को जन्म दे रही हैं। इसे हम ऐसे भी समझ सकते हैं कि प्रति दिन जितने लोगों इस दुनिया से जा रहे हैं, उतने नए जन्म नहीं हो रहे हैं। आपको बता दें कि रिपोर्ट के मुताबिक देश में जन्म दर में कमी है मगर फिर भी भारत की युवा जनसंख्या अभी भी देश की आबादी का एक बहुत बड़ा हिस्सा है।

3 हजार की रिश्वत लेते पकड़ाया बाबू कलेक्ट्रेट में रंगे हाथों धराया

स्टे ऑर्डर दिलाने के लिए मांगी थी रकम

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा कलेक्ट्रेट स्थित तहसील बनकुईया सर्किल में रीवा लोकायुक्त की बड़ी कार्यवाही हुई है। जहां कार्यालय में पदस्थ बाबू विनोद शुक्ला को तीन हजार रिश्वत लेते हुए रीवा लोकायुक्त ने पकड़ा है। जमीन का स्टे आर्डर दिलाने के नाम पर रिश्वत की डिमांड की गई थी। फिलहाल रीवा लोकायुक्त पुलिस की कार्यवाही लगातार जारी है। कार्यालय में पदस्थ बाबू अखिलेश शुक्ला ने 3 हजार की रिश्वत मांगी थी। उप पुलिस अधीक्षक प्रवीण सिंह परिहार ने बताया कि शिकायतकर्ता राजेश कुमार पांडेय निवासी ग्राम सगरा ने शिकायत दर्ज कराई थी कि राजेश पांडेय ने अपने बंद निजी रास्ते को खुलवाने और उस पर स्टे दिलवाने के लिए अर्जी दिलवाई गई थी। जिसके बदले फरियादी से लगातार 3 हजार रुपए रिश्वत की मांग की थी। रिश्वत की यही रकम लेते हुए आज कलेक्ट्रेट परिसर में आज विनोद शुक्ला को रंगे हाथों ट्रैप किया गया है। शिकायतकर्ता की शिकायत के बाद पहले लोकायुक्त ने अपने सूत्रों से इसकी पुष्टि की और जिसके बाद ट्रैप की कार्यवाही की गई है। फिलहाल मामले की वैधानिक कार्रवाई लगातार जारी है।

रीवा में शादी का झांसा देकर युवती से दुष्कर्म

वीडियो बनाकर करता रहा ब्लैकमेल, पीड़िता की शिकायत पर आरोपी गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा में शादी का झांसा देकर एक युवती के साथ दुष्कर्म करने का मामला सामने आया है। आरोपी ने पीड़िता का अश्लील वीडियो बनाकर उसे ब्लैकमेल भी किया। पीड़िता की शिकायत पर पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है।

मामले में एएसपी विवेक लाल ने बताया कि पीड़िता ने मनगवां थाने में शिकायत दर्ज कराई। शिकायत में बताया कि युवक पहले शादी का झांसा देकर युवती के साथ शारीरिक संबंध बनाता रहा। इस दौरान उसने पीड़िता का अश्लील वीडियो बना लिया और वायरल करने की धमकी देकर लगातार दुष्कर्म करता रहा। जब पीड़िता ने शादी की बात की तो वो टालमटोल करने लगा।

पीड़िता ने परेशान होकर परिजनों को सारी बात बताई। इसके बाद परिजनों के साथ थाने पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने तत्काल कार्रवाई करते हुए तिवनी निवासी अभिषेक उपाध्याय(25) को गिरफ्तार कर लिया। न्यायालय में पेशी के बाद आरोपी को जेल भेज दिया गया।

भीषण गर्मी में सतना में लेटी परिक्रमा कर कलेक्ट्रेट पहुंचे किसान

कहा- मुआवजा दिलाएं या इच्छा मृत्यु की अनुमति दें राष्ट्रपति, पावर ग्रिड कंपनी के खिलाफ प्रदर्शन

सतना (एजेंसी)। सतना में पावर ग्रिड कंपनी से खेत में लगाए टावर का मुआवजा नहीं मिलने से नाराज सैकड़ों किसान मंगलवार को लेटी परिक्रमा और पदयात्रा निकालकर विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। लगभग 42 डिग्री के तापमान पर सैकडों किसान हाथ में पोस्टर बैनर लेकर नागौद थाना क्षेत्र के पौड़ी तिराहा से लेटी परिक्रमा शुरू की, जो लगभग 35 किलोमीटर चलकर कलेक्ट्रेट पहुंची।

महिला कृषक लेट कर परिक्रमा लगाते हुए सतना कलेक्ट्रेट की ओर रवाना हुई। किसानों का कहना है कि उन्हें न्यायालय द्वारा दिए गए आदेश के आधार पर मुआवजे का भुगतान किया जाए। उन्होंने कहा कि अगर शासन-प्रशासन और सरकार ये करने में नाकाम है तो राष्ट्रपति हम सभी किसानों को इच्छा मृत्यु की अनुमति दें।

उच्च न्यायालय द्वारा दिए गए मुआवजा आदेश का तत्काल पालन किया जाए।

प्रशासन किसानों की जमीनों पर हुए नुकसान का सत्यापन कर मुआवजा दिलाए।

अगर कार्रवाई संभव नहीं है, तो राष्ट्रपति से इच्छामृत्यु की अनुमति दी जाए।

न्यायालय का आदेश, फिर भी नहीं मिला मुआवजा

किसानों का कहना है कि सतना कलेक्टर और न्यायालय दोनों के आदेश के बावजूद उन्हें मुआवजा नहीं मिला। बता दें कि पॉवर ग्रिड कॉरपोरेशन ने वर्ष 2012 से 2015 के बीच उचेहरा तहसील के लगभग 13 गांवों - जैसे अत्तरबेदिया खुर्द, पिथौराबाद, लालपुर, अमिलिया, नंदहा, अटरा, अमदरी, धनेह, कोनी, कोलगढ़ी, गोबराव कला, करही आदि में 765 केवी की विद्युत पारेषण लाइन का निर्माण किया था। किसानों के खेतों में टावर खड़े किए गए, लेकिन कई को मुआवजा नहीं मिला।

137 किसानों को दिया जाना था मुआवजा

इस पर तत्कालीन कलेक्टर अजय कटेसरिया ने 2 नवंबर 2021 को किसानों के पक्ष में फैसला देते हुए 12 लाख रुपए प्रति टावर और 3 हजार रुपए प्रति रनिंग मीटर वायर का मुआवजा देने का आदेश दिया था। लगभग 137 किसानों को ये मुआवजा दिया जाना था। पावर ग्रिड ने इस आदेश को चुनौती देते हुए उच्च न्यायालय में याचिका दाखिल की, जिसे हाल ही में उच्च न्यायालय जबलपुर ने खारिज कर दिया।

मैहर में अल्ट्राटेक सीमेंट फैक्ट्री का कन्वेयर बेल्ट टूटा, चार मजदूर गंभीर रूप से घायल

मैहरर (एजेंसी)। मैहर जिले की अल्ट्राटेक सीमेंट फैक्ट्री में सोमवार शाम करीब 5 बजे फैक्ट्री का कन्वेयर बेल्ट टूटने से 4 मजदूर घायल हो गए। सभी घायल मजदूर झारखंड के रहने वाले हैं। सिमकोन कंपनी की ओर से फैक्ट्री में दो कन्वेयर बेल्ट लगाए गए हैं। ये बेल्ट माइंस से प्लांट तक पत्थर पहुंचाने का काम करते हैं। इन बेल्ट की निगरानी के लिए मजदूरों की नियमित ड्यूटी लगाई जाती है। दुर्घटना के बाद सभी घायलों को फैक्ट्री की एम्बुलेंस से जबलपुर और रीवा के अस्पतालों में भेजा गया है। सीमेंट फैक्ट्री प्रबंधन की ओर से इस घटना पर कोई आधिकारिक बयान नहीं दिया गया है।

केन्द्रीय सचिव हरिरंजन राव और डॉ. पल्लवी जैन गोविल ने खेल और युवा कल्याण की गतिविधियों और योजनाओं का किया अवलोकन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। सचिव खेल मंत्रालय एवं महानिदेशक भारतीय खेल प्राधिकरण श्री हरिरंजन राव और सचिव युवा कल्याण डॉ. पल्लवी जैन गोविल ने सोमवार को भोपाल में मध्यप्रदेश की खेल और युवा कल्याण की गतिविधियों का अवलोकन किया और योजनाओं की विस्तृत जानकारी ली। सचिव श्री हरिरंजन राव ने सुबह उद्धवदास मेहता भाईजी सेन्ट्रल रीजनल सेन्टर, भारतीय खेल प्राधिकरण गौरा-गांव, बिशनखेड़ी की सुविधाओं का अवलोकन किया। उन्होंने खेल और युवा कल्याण विभाग की शूटिंग, घुड़सवारी अकादमी, स्पोर्ट्स सांइस सेन्टर का भी अवलोकन किया। अतिरिक्त मुख्य सचिव खेल और युवा कल्याण श्री मनु श्रीवास्तव के साथ तात्याटोपे स्टेडियम स्थित ध्यानचंद कॉन्फ्रेन्स हॉल में बैठक हुई। बैठक में सचिव खेल मंत्रालय श्री हरिरंजन राव, संचालक खेल

और युवा कल्याण श्री राकेश गुप्ता, संचालक रीजनल सेन्ट्रल सेन्टर श्री अभिषेक सिंह, सचिव साई श्री विष्णुकांत तिवारी सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे। बैठक में खेल संचालक श्री राकेश गुप्ता द्वारा विभाग की खेल और युवा कल्याण गतिविधियों एवं योजनाओं का प्रेजेन्टेशन दिया गया। खेल अकादमियों पर आधारित लघु फिल्म और खेलो बढ़ो अभियान की फिल्म को भी प्रदर्शित किया गया। सचिव श्री हरिरंजन राव ने मध्यप्रदेश के खेल और युवा कल्याण की गतिविधियों की मुक्त कंठ से सराहना करते हुए भारत सरकार से हर संभव मदद का अश्वासन दिया।

सचिव, युवा कार्यक्रम मंत्रालय डॉ. पल्लवी जैन गोविल ने यूथ हॉस्टल भोपाल का अवलोकन किया और तात्याटोपे स्टेडियम में एन.वॉय.के. और माय भारत के अधिकारियों से भेंट कर गतिविधयों की जानकारी ली। डॉ. गोविल ने टी.टी. नगर खेल स्टेडियम पहुँचकर माय भारत योजना की राज्य स्तरीय समीक्षा की। उन्होंने युवाओं की भागीदारी को सशक्त करने के लिए सुझाव दिए। %माय भारत% पोर्टल एवं एप के उपयोग को सशक्त करने के लिये तकनीकी सुधार के बारे में भी चर्चा की। उन्होंने प्रदेश के विभिन्न विभागों को माय भारत प्लेटफॉर्म से जोड़ने पर बल दिया। बैठक में राज्य निदेशक श्री अतुल निकम ने माय भारत (मेरा युवा भारत) योजना की गतिविधियों और उद्देश्यों पर प्रस्तुति दी। बैठक के समापन पर जिला युवा अधिकारी भोपाल श्रीमती निक्की राठौर ने आभार माना। बैठक में उपनिदेशक श्री रोहित यादव, श्री विनोद चतुर्वेदी, श्री हर्षल तलस्कर, श्री पंकज गोस्वामी, श्री राजेंद्र शर्मा, श्री सागर वाधवानी एवं खेल विभाग के अधिकारी उपस्थित रहे।

डीपी का ढक्कन टूटा था, 4 लाख रुपए मुआवजे की सिफारिश

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। शाहपुरा (ई 7 अरेरा कॉलोनी) स्थित एक ट्रांसफार्मर की डीपी के खुले ढक्कन के कारण करंट लगने से 11 वर्षीय बालक वंश की मौत हो गई थी। इस मामले में बिजली कंपनी के पश्चिम संभाग के शाहपुरा जोन के मैनेजर सुबोध इंगले ने डीजीएम एल एन पाटीदार को रिपोर्ट सौंप दी है। इस रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से जिक्र किया गया है कि डीपी का ढक्कन किसी अज्ञात व्यक्ति ने तोड़ दिया था। बच्चा नाबालिग था। जानकारी के अभाव में मैच खेल रहे बालक ने वहां पहुंची गेंद उठाने के लिए हाथ डीपी के अंदर डाल दिया था, जिससे उसे करंट लग गया। जांच कर रही शाहपुरा जोन की टीम मृत बालक के परिजनों के बयान लेने उनके घर पहुंची थी। ऊर्जा विभाग की संबल योजना के तहत बिजली करंट के ऐसे मामलों में मृतक के परिजनों को ?4 लाख तक मुआवजा देने का प्रावधान है। जोन की रिपोर्ट में इस बारे में सिफारिश भी की गई। 10 दिन पहले ई 7 अरेरा कॉलोनी के एक खेल मैदान के पास लगे ट्रांसफार्मर की डीपी के खुले ढक्कन की जद में आने से इंदिरा नगर के 11 वर्षीय बालक वंश जोगी की 440 वोल्ट के करंट ने मौत हो गई थी। 6मेन डिस्ट्रीब्यूशन बॉक्स के आसपास 10 बाई 4 की फैंसिंग होनी चाहिए। 6ट्रांसफार्मर के पास गिट्टी डाली होनी चाहिए। 6डिस्ट्रीब्यूशन बॉक्स खुला नहीं हो। 6यदि वह खुला भी हो तो फेंसिंग लॉक होनी चाहिए।

मुख्य सचिव ने की 23 हजार करोड़ की पीएमजी/प्रगति परियोजनाओं की समीक्षा की

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन एवं भारत सरकार के सचिव (समन्वय) डॉ. मनोज गोविल की संयुक्त अध्यक्षता में भोपाल में समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में दूरसंचार, सड़क परिवहन, आवास एवं शहरी कार्य तथा रेल मंत्रालय से जुड़ी 9 परियोजनाओं एवं 10 मुद्दों की समीक्षा की गई। इनमें से झांसी-खैरार-माणिकपुर एवं खैरार-भीमसेन रेल परियोजना, रामगंजमंडी-भोपाल नई रेल लाइन परियोजना, ललितपुर-सतना, रीवा-सिंगरौली एवं महोबा-खजुराहो रेल परियोजनाएँ, तथा भोपाल मेट्रो रेल परियोजना से संबंधित चार प्रकरण राज्य सरकार की समयबद्ध कार्रवाई से सफलतापूर्वक निराकृत किए गए। समीक्षित परियोजनाओं की अनुमानित लागत लगभग 23,000 करोड़ है। शेष प्रकरणों के त्वरित निराकरण के लिये मुख्य सचिव श्री जैन द्वारा संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए गए। डॉ. गोविल ने मध्यप्रदेश सरकार के प्रयासों की सराहना करते हुए सुझाव दिया कि योजना के अंतर्गत प्राथमिकता प्राप्त परियोजनाओं के लिए ब्याजमुक्त ऋण प्राप्त करने की संभावना पर विचार किया जाए। समीक्षा के उपरांत भोपाल मेट्रो तथा रामगंजमंडी-भोपाल रेल परियोजना का स्थलीय निरीक्षण भी किया गया।

जनजातीय कार्य विभाग ने स्थानांतरण को लेकर दायर की केविएट

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। कार्यालय आयुक्त जनजातीय कार्य विभाग ने विभागीय अधिकारी-कर्मचारी और शिक्षकों के विधि संगत स्थानांतरण प्रदेश के विभिन्न कार्यालयों और शिक्षण संस्थाओं में किए हैं। स्थानांतरण को लेकर अधिकारी-कर्मचारी और शिक्षकों द्वारा संभावित न्यायालयीन रिट याचिकाओं को ध्यान में रखते हुए विभाग ने उच्च न्यायालय जबलपुर के साथ खंडपीठ इंदौर और ग्वालियर में शासन के पक्ष में केविएट दायर की है। विभाग ने अधिकारी-कर्मचारी एवं शिक्षकों को इस संदर्भ में विधिवत सूचित किया है कि उनके द्वारा दायर किये जाने वाले संभावित न्यायालयीन प्रकरणों में शासन का पक्ष प्रभावी ढंग से रखा जायेगा।

बावड़ियों का संरक्षण जल संवर्धन के लिए जरूरी

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उप मुख्यमंत्री श्री जगदीश देवड़ा ने सोमवार को निवास कार्यालय में जल गंगा सवंर्धन अभियान के अंतर्गत जन अभियान परिषद द्वारा प्रकाशित पुस्तक % बूंद सहेजे बावड़ी% का विमोचन किया। उन्होंने कहा कि जल संरक्षण की दिशा यह में एक सतत प्रयास है जिसमें प्रदेश की बावड़ियों की जानकारी प्राप्त कर उसे स्वच्छ एवं निर्मल जल में परिवर्तित किया जाना है।

श्री देवड़ा ने कहा कि मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद् की यह अनूठी पहल है। श्री देवड़ा ने कहा कि बावड़ियाँ हमारी प्राचीन जलस्त्रोत धरोहर हैं और यही जल संरक्षण का आधार रही हैं। हमारा दायित्व है कि प्रदेश में बावड़ियों की खोज कर उन्हें संरक्षित कर पीने योग्य बनाया जाए। उन्होंने कहा कि नगरिकों को यह पुस्तक धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक महत्व को समझने और समझाने का अवसर होगा। श्री देवड़ा ने कहा कि जल का संरक्षण आवश्यक है क्योंकि जल ही जीवन है इसके बगैर मनुष्य की कल्पना करना बेकार है । जन अभियान परिष्द जल स्त्रोतों के संरक्षण और संवर्धन के लिये जनभागीदारी में कर रही है। जन जागरूकता से बावड़ियों को सहेजने का कार्य हो रहा है।

इस अवसर पर म.प्र. जनअभियान परिषद् के उपाध्यक्ष श्री मोहन नागर एवं निर्देशक डॉ. बकुल लाड़ उपस्थित रहे।

चैक-लिस्ट बनाकर करें बाढ़-राहत और बचाव संबंधी निर्देशों का पालन : मुय सचिव श्री जैन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन ने बाढ़ राहत एवं बचाव संबंधी राज्य स्तरीय समिति की बैठक में निर्देश दिये हैं कि बाढ़ राहत और बचाव संबंधी निर्देशों के दृष्टिगत एक चेक लिस्ट बनाई जाये और उक्त अनुसार सभी विभाग अगले 15 दिनों के अंदर सौंपे गये दायित्वों को पूरा करें।

उन्होंने कहा कि उड़ीसा में आपदा प्रबंधन पर हुए अच्छे कार्यों को मॉडल बनाकर राज्य में उसी तरह का सिस्टम विकसित किया जाये, जिससे जनहानि से बचा जा सके। उन्होंने राजस्व, गृह, कृषि, जल संसाधन, और मौसम विभाग को मिलकर समन्वय के साथ कार्य करने के निर्देश दिये। बैठक मेंगृह विभाग को बाढ़ राहत संबंधी कार्यों का नोडल विभाग बनाये जाने का निर्णय लिया गया। मुख्य सचिव श्री जैन ने विभिन्न विभागों को बाढ़ से बचाव और राहत संबंधी अनेक दायित्व सौंपे हैं। मानसून पूर्व बाढ़ एवं अतिवृष्टि से निपटने के लिए हुई राज्य स्तरीय समिति की बैठक में गृह विभाग को सेना से समन्वय, बाढ़ बचाव उपकरणों की तैयारी, प्रशिक्षित तैराकों की सूची और नियंत्रण कक्ष से समन्वय की जिम्मेदारी दी गई। राजस्व विभाग को सभी कलेक्टर को चैक-लिस्ट अनुसार तैयारी, आपदा की स्थिति में क्षति आकलन और समय पर राहत वितरण सुनिश्चित करने का कार्य सौंपा गया है। पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग को अस्थायी शिविरों के लिए भवन चयन, जर्जर भवनों के चिंहांकन की कार्रवाई, निचले क्षेत्रों से आबादी का स्थानांतरण और खुले बोरवेल/कुओं की सुरक्षा के निर्देश दिए गए हैं।

बेटियाँ अब किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं-राज्यमंत्री श्री जायसवाल

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। कुटीर एवं ग्रामोद्योग राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री दिलीप जायसवाल ने सेवा भारती माधव मंडल, भोपाल द्वारा बालिकाओं के आत्मरक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर सहभागिता की।

उन्होंने बालिकाओं को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि बेटियां अब किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं और वे विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रही हैं। श्री जायसवाल ने कहा कि राज्य सरकार ने बेटियों को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित कर समान अवसर उपलब्ध कराए जा रहे हैं। उन्होंने महिला सशक्तिकरण पर जोर देते हुए कहा कि महिलाओं को समाज में बराबरी का दर्जा दिलाने के लिए काम किया जा रहा है। बालिकाओं की शिक्षा और स्वास्थ्य पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है। राज्यमंत्री श्री जायसवाल ने कहा कि सेवा भारती द्वारा 13 वर्ष से 18 वर्ष की बालिकाओं को जूडो, मार्शल आर्ट एवं कराटे का प्रशिक्षण देकर आत्मरक्षा की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। श्री जायसवाल ने कहा कि सेवा भारती का यह प्रयास बालिकाओं को आत्मनिर्भर और सुरक्षित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। उन्होंने कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारंभ किया।

15 दिन में बदली आंगनवाड़ी की तस्वीर....

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। बाहर बच्चों के लिए प्ले जोन। अंदर ट्रांसफॉर्मेशन जोन में तस्वीरों के साथ फल-सब्जी और जानवर-? पक्षियों के नाम हैं। टॉय कॉर्नर खिलौनों से भरा है। यह प्राइवेट स्कूल नहीं, बल्कि आंगनवाड़ी की तस्वीर है। कभी यहां कचरे का ढेर था। यह कायाकल्प महज 15 दिन में हुआ है। राजधानी में आंगनवाड़ी ट्रांसफॉर्मेशन प्रोजेक्ट की शुरुआत हुई। इसमें राजधानी की न्यू शबरी नगर बाणगंगा, मोतिया पार्क बैरागढ़, जेपी नगर हाउसिंग बोर्ड, फंदा खजूरी, कोलार बागमुगलिया, बैरसिया, चांदबड़ भानपुर आंगनवाड़ी चुनी गई हैं। इनकी सूरत बदलने का फायदा ये हुआ कि जहां बच्चों को घर से बुलाकर लाना पड़ता था, अब वहां से बच्चों का घर जाने का मन नहीं करता। 6शासकीय स्कूल के पास स्थित इस केंद्र की देखरेख स्थानीय लोग कर रहे हैं। बच्चों के लिए प्ले जोन है, जिसे तार फेंसिंग से सुरक्षित किया गया है। अंदर एजु जोन, टॉय कॉर्नर और महिलाओं के लिए फीडिंग कॉर्नर बनाया गया है। अभी इसमें और काम हो रहे हैं। 6मुख्य द्वार से घुसते ही प्ले जोन दिखता है। लूडो, सांप-सीढ़ी, शतरंज जैसे पारंपरिक खेल हैं। पास में पोषण वाटिका और सैंड पिट बनी है। अंदर एजु जोन, टॉय कॉर्नर, टीचर और डॉक्टर डेस्क हैं। स्टोरी डब्बा में पपेट्स हैं, जिनसे स्टोरी टेलिंग की जाती है।

सिपरी साटवेयर एवं प्लानर ऐप का अध्ययन करने भोपाल आएगा महाराष्ट्र का 9 सदस्यीय दल

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। जल गंगा संवर्धन अभियान में मनरेगा परिषद द्वारा किए गए नवाचार को देखने महाराष्ट्र सरकार के पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग का 9 सदस्यीय दल दो दिवसीय दौरे पर मध्यप्रदेश आएगा। इस दल में महाराष्ट्र शासन के मंत्रालय, जिला और विकास खंड स्तर के अधिकारी शामिल है। वाटर शेड विभाग के अतिरिक्त मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री कमलाकर रानादेवी के नेतृत्व में दल के सदस्य 12 जून को भोपाल एवं 13 जून को रायसेन जिले के सांची विकासखंड का भ्रमण करेंगे।

दल के सदस्य फील्ड में जाकर सिपरी साफ्टवेयर खेत तालाब और अमृत सरोवरों के निर्माण स्थल चयन में किस तरह से काम करता है, इसका अध्ययन करेंगे। साथ ही मनरेगा परिषद द्वारा कार्ययोजना को लेकर तैयार किए गए प्लानर ऐप के बारे में भी जानकारी प्राप्त करेंगे। जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत बारिश के पानी को बचाने के लिए बनाए जा रहे खेत तालाब, अमृत सरोवर और कूप रिचार्ज पिट का कार्य भी देखेंगे। केन्द्र सरकार के ग्रामीण विकास मंत्रालय भूमि संसाधन विभाग द्वारा बीते दिनों राष्ट्रीय समीक्षा कार्यक्रम आयोजित किया गया था। समीक्षा कार्यक्रम में मनरेगा आयुक्त-संचालक वाटरशेड मिशन श्री अवि प्रसाद ने मध्यप्रदेश में जल संरक्षण व संवर्धन और अन्य प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के कार्यों के चयन तथा मॉनिटरिंग के लिए किए गए नवाचार सिपरी सॉफ्टवेयर का प्रस्तुतीकरण किया, जिसकी केन्द्र सरकार के अधिकारियों द्वारा प्रशंसा की गई है। केन्द्र सरकार ने राज्य के इस नवाचार को समीक्षा कार्यवाही विवरण में रेखांकित किया है। राष्ट्रीय समीक्षा में अन्य राज्यों के प्रमुख सचिवों और मुख्य कार्यपालन अधिकारियों ने भी सिपरी की उपयोगिता की सराहना की और अपने राज्यों में भी इसके उपयोग की रुचि दिखाई। अब अन्य राज्यों से भी सिपरी के अध्ययन के संबंध में प्रस्ताव प्राप्त हो रहे हैं प्रदेश में पहली बार खेत-तालाब और अमृत सरोवरों के निर्माण के लिए स्थल का चयन वैज्ञानिक पद्धति से किया गया है। इसके लिए मनरेगा परिषद द्वारा सिपरी सॉफ्टवेयर की मदद ली गई है। जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग की मनरेगा योजना में सभी जिलों में 78 हजार 950 खेत तालाब, 99 हजार 320 कूप रिचार्ज पिट और 1 हजार 254 अमृत सरोवरों का निर्माण कराया जा रहा है। साथ ही 2 लाख 30 हजार 749 जलदूतों ने पंजीयन कराया है।

सिपरी (सॉफ्टवेयर फॉर आइडेंटिफिकेशन एंड प्लानिंग ऑफ रूरल इन्फ्रास्ट्रक्चर) सॉफ्टवेयर एक उन्नत तकनीक का सॉफ्टवेयर है, जिसे महात्मा गांधी नरेगा, मध्यप्रदेश राज्य रोजगार गारंटी परिषद, भोपाल द्वारा एमपीएसईडीसी और इसरो के सहयोग से तैयार कराया गया है। इस साफ्टवेयर का मुख्य उद्देश्य जल संरक्षण के लिए उपयुक्त स्थलों की सटीक पहचान कर गुणवत्तापूर्ण संरचनाओं का निर्माण सुनिश्चित करना है। साथ ही यह भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस) आधारित वैज्ञानिक पद्धतियों से जल सरंचना स्थलों के चयन को अधिक सटीक बनाता है।

जल जीवन मिशन में ग्वालियर, भिंड, नर्मदापुरम और शहडोल जिले एफएचटीसी उपलध कराने में अग्रणी

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रदेश में जल जीवन मिशन के अंतर्गत प्रत्येक ग्रामीण परिवार को नल के माध्यम से शुद्ध एवं सुरक्षित पेयजल की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए पीएचई विभाग द्वारा सतत एवं मिशन मोड में कार्य किया जा रहा है। इस कड़ी में 8 जून 2025 को प्रदेश के पाँच जिलों-मुरैना, ग्वालियर, भिंड, नर्मदापुरम और शहडोल-ने फंक्शनल हाउसहोल्ड टैप कनेक्शन प्रदान करने की दिशा में राज्य स्तरीय प्रदर्शन में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है।

इन जिलों ने जल जीवन मिशन के निर्धारित मापदंडों के अनुरूप हर-घर जल कनेक्शन उपलब्ध कराने में उल्लेखनीय कार्य करते हुए प्रदेश स्तर पर मिशन के उद्देश्यों को गति प्रदान की है। इंडेक्स आधारित मानिटरिंग के अनुसार, इन जिलों द्वारा 8 जून को सबसे अधिक एफएचटीसी दर्ज किए गए, जो ग्रामीण पेयजल आपूर्ति व्यवस्था को सशक्त और प्रभावी बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण संकेतक है। प्रदेश में मिशन की सफलता का आधार जमीनी स्तर पर की जा रही सुव्यवस्थित योजना, क्रियान्वयन की सघनता, तथा विभागीय कर्मचारियों और जिला प्रशासन के समन्वयपूर्ण प्रयास हैं। मुरैना, ग्वालियर, भिंड, नर्मदापुरम और शहडोल जिलों की पीएचई टीमों ने चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति के लिये अभियानात्मक गति से कार्य करते हुए यह उपलब्धि हासिल की है। इन जिलों की प्रगति यह भी दर्शाती है कि स्थानीय जनप्रतिनिधियों, ग्राम जल एवं स्वच्छता समितियों और सामुदायिक सहभागिता के साथ समन्वय से जल जीवन मिशन की प्रभावशीलता बढ़ी है। तकनीकी अमले द्वारा गुणवत्तापूर्ण नल कनेक्शन प्रदान करने, जल स्त्रोतों की नियमित निगरानी करने तथा जल गुणवत्ता की जांच सुनिश्चित करने जैसे आयामों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

प्राचीन बावड़ियों को चिन्हित कर किये जा रहे हैं जल संरक्षण के कार्य

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रदेश स्तर पर 30 मार्च से शुरू हुआ जल गंगा संवर्धन अभियान लगातार जारी है। अभियान में 30 जून तक निरंतर गतिविधियाँ हों, इसके लिये जिला प्रशासन द्वारा लगातार प्रयास किये जा रहे हैं। अभियान में चिन्हित की गयीं बावड़ियों की सफाई कर अंतिम रूप दिया जा रहा है। जन-सामान्य को इनके ऐतिहासिक महत्व के बारे में भी जानकारी दी जा रही है। राजस्व अधिकारियों की समीक्षा बैठक में भी अब तक किये गये कार्यों की समीक्षा की गयी है। मंडला जिले में जल गंगा संवर्धन अभियान में जन-भागीदारी से नदी-तालाबों के आस-पास सफाई कार्य किये जा रहे हैं। महाराजपुर संगम घाट स्थित बावड़ी में बावड़ी उत्सव का आयोजन कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा के निर्देर्शन में हुआ। परम पूज्य संत श्री भीमदेव जी आचार्य काशी विश्वनाथ वैदिक गुरुकुल और माँ नर्मदा गौशाला जिलहरी घाट,

गाजीपुर और अन्य संतों के साथ बावड़ी उत्सव मनाया गया। कार्यक्रम की शुरूआत में माँ नर्मदा के चित्र पर माल्यार्पण कर दीप प्रज्वलित किया गया। कार्यक्रम में बताया गया कि प्राचीन काल में बावड़ियाँ वर्षा के पानी को एकत्रित करने और भूजल स्तर को बनाए रखने के लिए बनाई जाती थीं। शुष्क क्षेत्रों में, वे जल उपलब्धता में मौसमी उतार-चढ़ाव से निपटने में मदद करती थीं।

जिस फ्लोर पर फ्लैट है नया भी वहीं मिले, बढ़े एरिया के लिए शुल्क न लें

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। जवाहर चौक के समीप स्थित सरस्वती नगर के रिडेवपमेंट को लेकर रहवासियों ने अपनी तरफ से कुछ शर्तें रखी हैं। समिति के लोगों ने रीडेवलपमेंट प्रोजेक्ट के लिए साफ कहा कि अभी जिस रहवासी का फ्लैट जिस फ्लोर पर है, रीडेवलपमेंटके बाद भी उसी फ्लोर पर फ्लैट दिया जाए। ऐसा ना हो कि जो व्यक्ति अभी दूसरे या तीसरे फ्लोर पर रह रहा है उसे 10 वीं या 11 वीं फ्लोर पर फ्लैट मिल जाए इसके साथ ही प्रोजेक्ट के दौरान रहवासियों को मार्केट दर पर मकान का किराया दिया जाए। स्थानीय रहवासी कैलाश मिश्रा ने कहा कि प्रोजेक्ट में समिति, हाउसिंग बोर्ड और बिल्डर के बीच पूरी पारदर्शिता रखी जाए। अभी हाउसिंग बोर्ड 10.41 रुपए प्रति वर्ग फीट के हिसाब से किराया देने की बात कर रहा है, जबकि इस क्षेत्र में किराया इससे अधिक है। नए मकान में 20 प्रतिशत अधिक स्थान देने की बात भी स्पष्ट रूप से नहीं लिखी गई है। रहवासियों ने कहा कि अतिरिक्त निर्माण का कोई अतिरिक्त शुल्क नहीं लिया जाए। रहवासियों ने कहा कि यदि हमारी मांगें नहीं मानी गई तो हम कोर्ट की शरण लेंगे।

विकसित कृषि संकल्प अभियान देश की कृषि और किसानों को सम्पन्न बनाने का अभियान है-सांसद

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सांसद डॉ राजेश मिश्रा के मुख्य आतिथ्य में जिले के ग्राम पंचायत गांधीग्राम में विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत कृषक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कृषि वैज्ञानिकों ने किसान भाइयों के साथ कृषि के क्षेत्र में नवीन तकनीकी के संबंध में सार्थक चर्चा की।

सांसद डॉ राजेश मिश्रा ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मंशानुरूप कृषकों से प्रत्यक्ष जुड़ाव तथा संवाद के माध्यम से देश के कृषि और किसान को सम्पन्न बनाने यह अभियान चलाया जा रहा है। प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री के नेतृत्व में यह अभियान निश्चित तौर पर किसानों के लिए वरदान साबित हो रही है। स्थानीय कृषि-जलवायु, मृदा की गुणवत्ता, पोषक तत्वों की स्थिति, बीज चयन, उर्वरक उपयोग और कीट प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर किसानों को वैज्ञानिक सलाह देते रहे तथा किसानों की समस्याओं को समझकर समाधान की दिशा में कार्य करें।

सांसद ने कहा कि किसान हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। किसान खुशहाल होंगे तभी देश की असली तरक्की होगी। विकसित कृषि संकल्प अभियान का उद्देश्य कृषकों को नवविकसित फसल किस्मों एवं कृषि तकनीकों की जानकारी, फसल विविधीकरण को प्रोत्साहन, मृदा स्वास्थ्य पत्रक की अनुशंसाओं के आधार पर रसायनिक उर्वरकों के संतुलित तथा वैकल्पिक उपयोग के संबंध में जागरूक करे।

इसके साथ ही कृषकों से प्रत्यक्ष संवाद कर उनकी समस्याओं एवं कृषकों द्वारा किये जा रहे नवाचारों का संकलन करते हुए अनुसंधान की कार्यनीति का निर्धारण करे। सांसद ने बैगा जनजातीय तथा अन्य जनजातीय परिवारों के विकास के लिए विशेष पहल करने को कहा है। सांसद ने कहा कि इन परिवारों को शासन की सभी योजनाओं का लाभ दें। उन्हे जैविक कृषि के लिए प्रोत्साहित करें। अरहर, उड़द, दलहन के बीज बैगा परिवारों को प्राथमिकता पर दें। पशुपालन विभाग बैगा परिवारों को पशुपालन सु जुड़ी योजनाओं का लाभ प्राथमिकता पर दें।

इस दौरान ड्रोन तथा नैनो यूरिया ,नैनो डी ए पी का जीवंत प्रदर्शन का भी आयोजन किया गया। इस अवसर पर देवकुमार सिंह चौहान, उप संचालक कृषि संजय श्रीवास्तव, वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ ए श्रीवास्तव, कृषि विज्ञान केंद्र सीधी, डॉ अलका सिंह, सहायक संचालक मछली पालन, पशुपालन, उद्यानिकी विभाग, महिला बल विकास, राजस्व, सहित विभागीय अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

जिला निर्वाचन अधिकारी ने किया ईवीएम वेयरहाउस का निरीक्षण

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री स्वरोचिष सोमवंशी द्वारा ईवीएम वेयरहाउस का त्रैमासिक निरीक्षण मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में किया गया। इस अवसर पर मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि के रूप में भाजपा से श्री अमित प्रधान, सीपीएम से श्री सुंदर सिंह, उप जिला निर्वाचन अधिकारी एवं संयुक्त कलेक्टर श्री नीलेश शर्मा सहित संबंधित अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

जनसुनवाई में कलेक्टर ने सुनी 171 आवेदकों की समस्याएं

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। नागरिकों के समस्याओं के त्वरित निराकरण के लिये शासन के निर्देशानुसार प्रत्येक मंगलवार को जिला पंचायत सभागार में सुबह 11 बजे से दोपहर 1 बजे तक जनसुनवाई आयोजित की जाती है। इस बार आयोजित जनसुनवाई में कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी द्वारा जिले के विभिन्न अंचलों से आए 171 आवेदकों की समस्याओं को ध्यानपूर्वक सुनते हुए संबंधित अधिकारियों से संपर्क कर शिकायत की वस्तुस्थिति की जानकारी प्राप्त की गई तथा उसके निराकरण के लिए निर्देश दिए गए। अनिराकृत आवेदनों के लिये समय-सीमा निर्धारित कर अधिकारियों को समय-सीमा में निराकरण करने के निर्देश दिए गए हैं।जनसुनवाई में संयुक्त कलेक्टर एसपी मिश्रा सहित सभी विभागों के जिला अधिकारी उपस्थित रहे। आज आयोजित जनसुनवाई में समस्त उपखण्ड अधिकारी, तहसीलदार और मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत भी वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से जिला स्तरीय जनसुनवाई से जुड़े रहे।

स्व सहायता समूह सदस्यों को दी गई सुरक्षा बीमा एवं लखपति आवर्ती योजना की जानकारी

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी तथा मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अंशुमन राज के निर्देशन में आजीविका मिशन के जिला परियोजना प्रबंधक पुष्पेन्द्र सिंह एवं मध्य प्रदेश ग्रामीण बैंक के क्षेत्रीय अधिकारी आशीष पाण्डेय के मार्गदर्शन में मझौली सामुदायिक प्रशिक्षण केंद्र में स्व सहायता समूह की महिलाओं को बैंक से संबंधित विभिन्न योजनाओं की जानकारी प्रदान करने का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रमुख प्रशिक्षक के रूप में रजत सिंह तिवारी शाखा प्रबंधक मध्य प्रदेश ग्रामीण बैंक मड़वास के द्वारा सभी महिलाओं को व्यवस्थित रूप से सुरक्षा बीमा योजना, जीवन ज्योति बीमा योजना एवं लखपति आवर्ती योजना के साथ-साथ स्व सहायता समूह को अपनी आय किस प्रकार से बढ़ाई जा सके है, उसकी जानकारी प्रदान की गई। स्व सहायता समूह के अलावा बैंक के द्वारा अन्य योजना से कौन सी राशि लोगों को अपने जीवन में सुधार लाने के लिए एवं लखपति दीदी बनने के लिए दी जा सकती है, क्या-क्या डॉक्यूमेंट लगेंगे, उसकी क्या प्रक्रिया है, उसको व्यवस्थित रूप से मध्य प्रदेश ग्रामीण बैंक के मैनेजर के द्वारा समझाया गया।

कार्यक्रम में प्रमुख रूप से जिला प्रबंधक आजीविका मिशन अजय सिंह, युवा सलाहकार हरिराम त्रिपाठी, कुसमी विकासखंड प्रबंधक सुरजीत सिंह, सहायक विकासखंड प्रबंधक भरत सोनी, आजीविका मिशन के विकासखंड मझौली के प्रबंधक चंद्रकांत सिंह उपस्थित रहे। चंद्रकांत सिंह के द्वारा संपूर्ण कार्यक्रम का संचालन किया गया। कार्यक्रम में व्यवस्थित रूप से बैंक से संबंधित आने वाली समस्याओं का समाधान भी किया गया। कोई भी समस्या बैंक संबंधी हो सीधे शाखा प्रबंधक से संपर्क करें किसी अन्य व्यक्ति को किसी तरह से अपनी ओटीपी ना दे। बिना जानकारी के एवं बैंक से राशि निकालते वक्त क्या-क्या सावधानी रखें इस संबंध में भी जानकारी प्रदान की गई।

जल गंगा संवर्धन अभियान का आयोजन

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। जल ही जीवन है, यह हम सब जानते है। यह सत्य है कि जल के बिना हम धरती अथवा किसी भी अन्य ग्रह पर जीवन की परिकल्पना नही कर सकते है। संसार के प्रत्येक प्राणी के जीवन का आधार जल ही है। धरती पर कोई ऐसा कोई प्राणी नही है जिसे जल की आवश्यकता न हो। जल जीवन के लिए नितांत आवश्यक है।

जल संरक्षण एवं जल संवर्धन को विशेष महत्व देने के लिए मुख्यमंत्री द्वारा 30 मार्च 2025 को पवित्र क्षिप्रा नदी के तट से जल गंगा संवर्धन अभियान का भव्य शुभारंभ किया गया। जल गंगा संवर्धन अभियान का मुख्य उद्देश्य राज्य की जल संरचनाओं, नदियाँ, तालाब, कुएँ, बावड़ियाँ आदि का संरक्षण एवं पुनरुद्धार करना है। अपर मुख्य सचिव पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग मध्यप्रदेश शासन भोपाल के निर्देशानुसार कलेक्टर एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत सीधी के द्वारा निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार आज जनपद पंचायत कुसमी की ग्राम पंचायत केशलार,जनपद पंचायत मझोली की ग्राम पंचायत महखोर, जनपद पंचायत सीधी की ग्राम पंचायत रामगढ़ नं.1 तथा जनपद पंचायत सिहावल की ग्राम पंचायत समरदह एवं महुआर में जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसके अंर्तगत पूर्व से निर्मित जल संरचनाओं के संरक्षण तथा संवर्धन के कार्य कराये गये साथ ही नवीन जल संरचनाओं के निर्माण हेतु आवश्यक कार्यवाही की गई।

विद्युत आपूर्ति रहेगी बाधित

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। अधीक्षण अभियंता (संचा-संघा) म.प्र.पू.क्षे.वि.वि.कं.लिमि. सीधी ने जानकारी देकर बताया है कि 132 के.व्ही. सीधी-मऊगंज लाइन में पश्चिम मध्य रेलवे द्वारा निर्माणाधीन रीवा-सीधी-सिंगरौली ब्राडगेज रेलवे लाईन के कारण उस क्षेत्र से गुजर रही लाईन का निर्माण एवं विस्थापन का कार्य ग्राम मधुरी में होने के कारण 33/11 के.व्ही कुर्वाह फीडर, 33 के.व्ही. सीधी (ग्रामीण) विद्युत वितरण केन्द्र अंतर्गत 33/11 के.व्ही की विद्युत आपूर्ति दिनांक 11.06.2025 को समय सुबह 08 बजे से शाम 05 बजे तक बाधित रहेगी।

इसी प्रकार 132/33 के.व्ही., 50 एम.व्ही.ए टाल जेमर 132 के.व्ही. सबस्टेशन मड़वास में दिनांक 12.06.2025 को समय सुबह 08 बजे से शाम 06 बजे तक एवं दिनांक 13.06.2025 को समय सुबह 09 बजे से 10 बजे एयर रिलीज कार्य किया जाना प्रस्तावित है। जिसके कारण 33 के.व्ही. कमचढ़ 33 के.व्ही. कुसमी एवं 33 के.व्ही. मड़वास उपकेन्द्र से संबंधित समस्त ग्रामों की विद्युत आपूर्ति बन्द बाधित रहेगी।

प्रिया गोयल ने किया रक्तदान

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना सिन्धु विकास समिति द्वारा लगातार चलाए जा रहे रक्तदान अभियान के सहयोगी आकाश बनर्जी की प्रेरणा से प्रेरित होकर समाजसेवीका प्रिया गोयल जी ने विगत दिवस जिला अस्पताल में भर्ती जरूरतमंद को अपने रक्त की सेवा देकर मानव धर्म निभाया।

उल्लेखनीय है समिति संस्थाध्यक्ष विनोद गेलानी ने के कुशल मार्गदर्शन में पिछले कई वर्षों से रक्तदान जीवनदान की अलख ज्योति जलाकर इंसानियत का धर्म निभाते हुए मानवता की सेवा कर रही है एवं अभी तक 6623 यूनिट रक्तदान करवाने का एक रिकॉर्ड भी कायम किया है रक्तदान करवाने मे आकाश बनर्जी जी का उल्लेखनीय योगदान रहा।

प्रिया जी के रक्तदान करने पर संस्था के संरक्षक श्री गोपी गेलानी श्रीचंद मनवानी मनोहर डिगवानी अध्यक्ष विनोद गेलानी ज्ञान खटवानी मुस्कान चंदानी सिमरन होतचंदानी निशा गोयल आभा सिंह जया जायसवाल रशिम जैन प्रेरणा जादवानी अनामिका सोनी ने गोयल जी को बधाई देते हुए उज्जवल भविष्य की कामना की हैं

जिला पंचायत सदस्य संजय सिंह कछवाह ने उठाया जल संकट का मुद्दा

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना जिले के वार्ड क्रमांक 23 में आदिवासी गांवों में पानी की समस्या विकराल रूप धारण कर चुकी है, जिससे ग्रामीण हाहाकार कर रहे हैं। जिला पंचायत सदस्य संजय सिंह कछवाह ने इस गंभीर मुद्दे पर शासन-प्रशासन की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाते हुए तत्काल हस्तक्षेप की मांग की है। कछवाह के अनुसार, इन गरीब आदिवासी परिवारों के पास न तो बोर कराने के लिए पैसे हैं और न ही मोटर लगवाने के लिए, जिसके कारण वे पूरी तरह से हैंडपंप पर निर्भर हैं। हालांकि, सरकारी योजनाओं के तहत हैंडपंपों की मरम्मत का कार्य कागजों तक ही सीमित है।

हैंडपंप रिपेयरिंग में 'पाइप का खेल': संजय सिंह कछवाह ने आरोप लगाया है कि हैंडपंप रिपेयरिंग के नाम पर बड़ा भ्रष्टाचार हो रहा है। पुरानी पाइपों को बदला नहीं जा रहा है और सिर्फ कागजों में ही काम पूरा दिखाया जा रहा है। नई पाइपों की जगह पुरानी और खराब पाइपों को ही रबड़ से बांधकर इस्तेमाल किया जा रहा है, जो दो-चार दिन में ही लीकेज हो जाती हैं। इससे जल संकट लगातार गहराता जा रहा है।

भागवत कथा के छठवें दिन मनाया गया श्रीकृष्ण रुक्मणि विवाह

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)।सरभंग मुनि की पावन तपोस्थली में सरभंगा टाइगर रिजर्व बनाए जाने हेतु आशुतोष द्विवेदी सेवा संस्थान द्वारा संकल्पित श्रीमद भागवत कथा के षष्ठम दिवस में कथा व्यास श्री बड़े देव स्वामी आश्रम के महंत भागवत भास्कर आचार्य डॉ श्री विपिन कृष्ण महाराज जी ने भगवान कृष्ण की मथुरा गमन कंस वध और गोपी उद्धव संवाद की मार्मिक कथा का श्रवण कराया और सांय की बेला में भगवान कृष्ण और रुक्मिणी जी का विवाह सानंद संपन्न हुआ जिसमे सभी भक्तो ने धूमधाम से विवाह का आनंद लिया जिसमें प्रमुख रूप से प्रमुख रूप से रमेश मिश्रा अमिरती,कैलाश सिंह बुंदेला,ठाकुर प्रसाद मिश्रा,कुलदीप सिंह पगार,जय सिंह खोरढ़ी,राजेंद्र सिंह खोरढ़ी,अंकित शुक्ला सभापुर,मंटी मिश्रा, बिब्बी मिश्रा,शिवा यादव, रोहित केवट,विक्रम पांडेय,पंकज मिश्रा का अतुलनीय सहयोग प्राप्त हो रहा वहीं इस समय सरभंगा आश्रम में सरभंगा टाइगर रिजर्व के समर्थकों व प्रेमियों का जान सैलाब देखने को मिलता है ।

जवाहर नवोदय विद्यालय चुरहट में कक्षा 6वीं में आवेदन की अंतिम तिथि 29 जुलाई

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)।प्रभारी प्राचार्य जवाहर नवोदय विद्यालय चुरहट, जिला-सीधी के कक्षा 6वीं में सत्र 2026-27 में प्रवेश हेतु ऑनलाइन आवेदन हेतु आवेदन प्रक्रिया प्रारंभ हो गई है। ऑनलाइन आवेदन करने की अंतिम तिथि 29.07.2025 है।

अभ्यर्थी का जन्म दिनांक 01.05.2014 से 31.07.2016 के बीच होना चाहिए, अभ्यर्थी सीधी जिले का निवासी होना चाहिए एवं सीधी जिले में ही 5वीं में अध्ययनरत होना चाहिए, पात्रता पूर्ण करने वाले अधिक से अधिक अभ्यर्थी ऑनलाइन आवेदन करें।

विकसित कृषि संकल्प अभियान में सांसद, कमिश्नर, कलेक्टर सहित कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों से किया सीधा संवाद

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। विकसित कृषि संकल्प अभियान कार्यक्रम के तहत दीनदयाल शोध संस्थान कृषि विज्ञान केंद्र मझगवां एवं जिला प्रशासन के सहयोग से मंगलवार को सोहावल विकासखंड के ग्राम पंचायत माँद के श्याम गौशाला में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में सांसद गणेश सिंह, जिला पंचायत अध्यक्ष राम खेलावन कोल, जिला पंचायत उपाध्यक्ष श्रीमती सुस्मिता सिंह, दीनदयाल शोध संस्थान के संगठन सचिव अभय महाजन, कमिश्नर रीवा संभाग बीएस जामोद, कलेक्टर डॉ. सतीश कुमार एस, सीईओ जिला पंचायत संजना जैन, मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के कृषि विज्ञान केंद्रों के अटारी निदेशक डॉ. एसआरके सिंह उपस्थति रहे।

कार्यक्रम का शुभारंभ भारतमाता, राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख तथा पंडित दीनदयाल के चित्र पर पुष्पांजलि एवं दीप प्रज्वलन कर किया गया। कार्यक्रम में डीएसआर पद्धति से धान की सीधी बीजाई की विधि का प्रदर्शन अतिथियों एवं किसानों के सामने किया गया। बताया गया कि सतना जिले मे पानी एवं श्रमिकों की कमी को देखते हुए यह पद्धति बहुत ही लाभकारी सिद्ध हो रही है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सांसद गणेश सिंह ने कहा कि भारत सरकार के कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान के निर्देशन मे पूरे देश मे विकसित कृषि संकल्प अभियान चल रहा है। इस कार्यक्रम से किसानों को अच्छा लाभ होगा। कृषि वैज्ञानिकों के माध्यम से हमारे क्षेत्र के किसानों के लिए उपयोगी तकनीकी एवं बीजों की जानकारी दी जा रही है। यह बहुत ही फायदे मंद साबित होगी। प्राकृतिक खेती एवं गौ मूत्र से बनी कीटनाशक दवाओ का उपयोग करें और रासायनिक दवाओ का कम उपयोग करें। सांसद ने कहा कि मोटे आनाजो की खेती को भी बढ़ावा देने के लिए केंद्र एवं राज्य सरकार द्वारा बहुत सारी लाभकारीं योजनाए संचालित की जा रही है।

कार्यक्रम मे जिला पंचायत अध्यक्ष राम खेलावन कोल ने बताया की सीधी बिजाई बहुत ही लाभकारी है। विकसित कृषि संकल्प अभियान सफल कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम मे वैज्ञानिकों के साथ-साथ विभाग के अधिकारी जाकर अपने अपने विभाग की जानकारी देते है। दीनदयाल शोध संस्थान के संगठन सचिव अभय महाजन ने बताया कि किसान सबसे ज्यादा अनुभवी है। हमारा परंपरागत ज्ञान हम भूलते जा रहे है। उन्होंने श्रीअन्न के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि आने वाले दिनों मे पानी की समस्या दिन ब दिन बढ़ती जा रही है। जब तक वर्षा का जल भू गर्भ जल से नहीं मिलेगा तब तक पानी की स्थित नहीं सुधरेगी। हमें पानी के लिए भी आत्म निर्भर बनना पड़ेगा। साथ ही किसानों से अपील की ग्रामीण स्तर मे जन सहयोग से नदी नालों तालाबों का संरक्षण करें।

आयुक्त रीवा संभाग बीएस जामोद ने वर्षा जल संचयन, जल गंगा संवर्धन अभियान पर बताया कि सतना में पानी की कमी को देखते हुए फसलों का उत्पादन करें। साथ ही समूह बनाकर छोटे-छोटे प्रयोग करें और पानी का संरक्षण करें। उन्होंने कहा कि कीटनाशक दवा का छिड़काव करने के लिए ड्रोन का उपयोग करें जिससे समय और पैसा दोनों बचेगा। कलेक्टर डॉ. सतीश कुमार एस ने बताया कि यहां की गौशाला का संचालन स्व-सहायता समूह द्वारा किया जा रहा है। यह अच्छी पहल है। इससे गौवंश के अपशिस्ट से गोबर की खाद एवं प्राकृतिक खेती के लिए खाद तैयार की जा सकती है।

जनसुनवाई में सुनी गई 155 आवेदकों की समस्यायें

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। कलेक्टर डॉ. सतीश कुमार एस के निर्देशन मंगलवार को होने वाली जनसुनवाई में अपर कलेक्टर स्वप्निल वानखडे, सहायक कलेक्टर अनिकेत शाडिल्य तथा एसडीएम एलआर जांगडे ने जिले के दूर-दराज के क्षेत्रों से आये 155 आवेदकों से उनकी समस्यायें सुनी और अधिकारियों को तत्काल निराकरण के निर्देश दिये। जनसुनवाई में जमीन का सीमांकन कराने, अनुकंपा नियुक्ति, खाद्यान पात्रता पर्ची, दाखिल-खारिज कराने, प्रधानमंत्री आवास योजना, अवैध कब्जा हटाने, विद्युत समस्या, जमीन का कब्जा दिलाने, सीमांकन कराने, चिकित्सा सहायता, रोजगार दिलाने, भरण-पोषण और संबल योजना के लाभ संबंधी आवेदन लेकर जनसुनवाई में पहुंचे।

आम सूचना

सर्व साधारण, व्यक्ति, संस्थाए निकाय एवं वित्तीय संस्थान को इस आम सूचना के माध्यम से सूचित किया जाता है कि श्री शिद्धविनायक द्वारा पार्टनर श्री अमरजीत सिंह पिता श्री कुलदीप सिंह निवासी– आनंद बिहार खैरी, तहसील– हुजूरनगर जिला–रीवा म0प्र0 विकेता / अनुबंधकर्ता के अधिपत्य की संपत्ति भूमि खसरा 68/2/2/1/1 रकवा 0.0139 हे0, भूमि खसरा 68/2/2/1/2 रकवा 0.0139 हे0 भूमि खसरा 68/2/2/1/3 रकवा 0.0139 हे0 कुल 3 कित्ता रकवा 0.417 हे0 स्थित ग्राम बिरसिंहपुर, पटवारी हल्का सेमरिया तह0 रामपुर बघेलान जिला सतना (म.प्र.) को भावी क्रेता / अनुबंध ग्रहीता अल्का सिंह निवासी आर.एच. 44 क्लासिक पुर्णिमा स्टेट इन्दौर म0प्र0 के साथ विक्रय हेतु अनुबंध किया जा रहा है।

अतः उक्त भूमि से संबंधित कोई व्यक्ति, संस्था निकाय एवं वित्तीय संस्थान यदि कोई हित रखता हो तो प्रकाशन दिनांक से 7 दिवस के अंदर मो न0 9826086504 या अधिकृत अभिभाषक के समक्ष आपत्ति कर सकता है, अन्यथा उक्त अवधि के उपरांत उक्त संपत्ति को पाक साफ होना मानते हुए मेरे पक्षकार अलका सिंह क्रय करने हेतु स्वतंत्र होगे एवं बाद में कोई आपत्ति व उज्रमान्य न होगा ।

विचार

क्या 'ट्रम्प-मस्क' की तल्खी और बढ़ेगी?

एक ओर दुनिया में कई अंतर्राष्ट्रीय समीकरण बदल रहे हैं। दूसरी ओर दुनिया का सबसे शक्तिशाली बल्कि दारोगा कहलाने वाला देश खुद आपसी कलह और निजी होड़ की तपिश झेल रहा है। क्या इसके मायने ये हैं कि इन सबके लिए राष्ट्रपति ट्रम्प ही जिम्मेदार हैं या बिजनेसमैन ट्रम्प? यह प्रश्न खुद अमरीकियों के लिए बड़ी पहेली और उससे ज्यादा अमरीका की खनक और धमक भरे भविष्य को लेकर परेशानी का सबब बना हुआ है। ट्रम्प-मस्क विवाद राजनीति और व्यापार के स्वार्थ भरे घालमेल के चलते उस मोड़ पर आ खड़ा हुआ है जिसका सीधा असर वहां अंदरूनी राजनीति पर पड़ना तय है। एक तरफ सबसे अमीर इंसान, टेस्ला और स्पेसएक्स जैसी कम्पनियों का मालिक एलन मस्क है तो दूसरी तरफ दुनिया का सबसे ताकतवर इंसान, अमरीकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प। यह तो समझ आ गया कि सिर्फ भारत ही नहीं, अमरीका में भी अमीरों का असर कैसे राजनीति का रुख बदलता है।

ट्रम्प का चर्चित वन बिग ब्यूटीफुल बिल तो एक तरफ रह गया लेकिन दुनिया के बड़े कारोबारी और अमरीकी राजनीति और अर्थव्यवस्था पर असर डाल सकने वाले एलन मस्क की नई पार्टी बनाने की घोषणा ने कहीं न कहीं बड़बोले ट्रम्प को नई चुनौती तो दे ही डाली। मस्क ने नई पार्टी का संभावित नाम 'द अमरीका पार्टी' बता अपने एक्स खाते पर पोल तक करा लिया। इसमें 56 लाख लोग शामिल हुए और करीब 80.4 प्रतिशत यानी 44 लाख ने समर्थन किया। ट्रम्प के खिलाफ बदले रुख के साथ वहां की राजनीति ने बड़े उथल-पुथल की जनभावनाओं को हवा दे दी। क्या यह पोल वहां स्थापित दो दलीय व्यवस्था के लिए भी चुनौती साबित होगा? अनचाहे ही सही, इससे यह संकेत भी मिले कि अमरीकी राजनीति की दोनों प्रमुख पाॅटयों ने वहां की जनता के असली मुद्दों से ध्यान भटकाया है। यह भी सच है कि ट्रम्प के चुनाव के बाद मस्क की संपत्ति में बहुत ज्यादा इजाफा हुआ। महज 45 दिन में उनकी संपत्ति 170 बिलियन डॉलर बढ़ी। जबकि मस्क ने ट्रम्प के चुनाव अभियान में 277 मिलियन डॉलर खर्चे। निश्चित रूप से इसे गिव एंड टेक कह सकते हैं। शायद ट्रम्प को लगा हो कि अतिमहत्वकांक्षी मस्क हर मोर्चों पर उनसे आगे न निकल जाएं? यही तो मस्क के पर कतरने की वजह नहीं?

सच्चाई ट्रम्प जानें लेकिन बात बहुत आगे जा चुकी है। इसका खामियाजा तय है। ट्रम्प का दूसरा कार्यकाल शुरू से विवादित रहा। शपथ लेते हीउन्होंने जो कदम उठाए उससे अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में उथल-पुथल मची। पहले कनाडा को अमरीका का 51वां राज्य बताया फिर मैक्सिको खाड़ी का नाम बदला, पनामा नहर को वापस मांगा, गाजा पर कब्जे की बात कही, यूक्रेन को भरोसे में लिए बिना युद्ध खत्म कराने खातिर रूस के साथ सऊदी अरब में बातचीत की। इससे भी अधिक अमरीका पहुंचे यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की के साथ नोंक-झोक की जिसे यूरोपीय देशों ने गंभीरता से लिया। इतना ही नहीं यह ट्रम्प की व्यापारिक मानसिकता थी जो यूक्रेन से मदद के बदले खनिजों की हिस्सेदारी मांग बैठे जिससे खूब किरकिरी हुई। रूस-यूक्रेन युद्ध रुका भी नहीं और ट्रम्प की गुटरगूं बेकार हुई। अभिव्यक्ति की आजादी यानी 'फ्री स्पीच' पर दुनिया का चौधरी बनने की अमरीकी कोशिशें भी चर्चाओं में रहीं।

नेत्रदान मर के भी जिंदा रहने का अनमोल वरदान है

वैश्विक स्तरपर पृथ्वी पर विचलित 84 लाख योनियों की काया में यूं तो सभी अंग महत्वपूर्ण है,परंतु हर जीव की आंखें एक ऐसा कुदरत का दिया हुआ अनमोल गिट है, जिससे पूरी खूबसूरत दुनियाँ को सभी जीव देख सकते हैं, खास करके विशेष अद्भुत बुद्धिजीवी मानव योनि के लिए आंखें तो मानो एक खूबसूरत अद्भुत अंग है जिसके द्वारा वह जीते जी तो अपने परिवार साथियों सहित पूरी दुनियाँ को तो देख सकता है परंतु वह चाहे तो मृत्यु के बाद भी अपनी इन दोनों खूबसूरत आंखों से पूरी दुनियाँ को देख सकता है,बस फर्क केवल इतना है, अपना शरीर त्यागने के बाद वह दूसरे के शरीर से खूबसूरत दुनियाँ को देख सकता है।

आज हम इस विषय पर चर्चा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि 10 जून 2025 को विश्व नेत्रदान दिवस है, इसलिए हमें समझना होगा कि,आँखों और दृष्टि का हमारें जीवन में बहुत बड़ा महत्व है। यदि व्यक्ति के जीवन में दृष्टि न हो तो उसके जीने का कोई मतलब ही नहीं होता और उसे प्रत्येक कार्य के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। ऐसे तो सभी आंखों के महत्व को समझते हैं और इसीलिए इसकी सुरक्षा भी सभी बड़े पैमाने पर करते हैं। हममें से कुछ लोग ऐसे भी हैं जो दूसरों के बारे में भी सोचते हैं।आंखें ना सिर्फ हमें रोशनी दे सकती हैं बल्कि हमारे मरने के बाद वह किसी और की जिंदगी में उजाला भी भर सकती हैं। लेकिन कुछ लोग अंधविश्वास के कारण, ऑय डोनेशन नहीं करते। उनका मानना हैं कि अगले जन्म में वे नेत्रहीन ना पैदा हो जाएं?। इस अंधविश्वास की वजह से दुनियां के कई नेत्रहीन लोगों को जिंदगी भर अंधेरे में ही रहना पड़ता है।

सभी लोगोंको इस बात को समझना होगा और नेत्रदान अवश्य करना चाहिए।हमारा एक सही फैसला लोगों के जिंदगी में उजाला ला सकता हैं।चूँकि नेत्रदान महादान है व नेत्रदान मर के भी जिंदा रहने का अनमोल वरदान है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, आओ अपनी आंखें दान करने का संकल्प लेकर अपनी जिंदगी के बाद दूसरों की दुनियाँ रोशन करें, आत्मा की खिड़की रूपी आंखों को मृत्यु के बाद भी जीवित रखें।

साथियों बात अगर हम भारत में दृष्टिहीन या नेत्रहीन बांधवों का कॉर्नय प्रत्यर्पण कर 1 वर्ष में ही भारत को अंधत्व मुक्त भारत बनाने में सहयोग की करें तो, एक आंकड़े के अनुसार भारत में लगभग 1.25 करोड़ लोग दृष्टिहीन हैं, जिसमें करीब 30 लाख व्यक्ति नेत्र प्रत्यारोपण के माध्यम से नवदृष्टि प्राप्त कर सकते हैं, आकलन बताता है कि एक वर्ष में देश में जितने लोगों की मृत्यु होती है, अगर सभी के नेत्रों का दान हो जाए तो देश के सभी नेत्रहीन लोगों को एक ही साल में आंखें मिल जाएंगी, मगर लोग नेत्रदान करते नहीं हैं और कार्निया प्रत्यारोपण की प्रतीक्षा सूची लंबी होती जाती हैं,कोरोना काल में तो नेत्रदान की संख?या और कम हो गई थी,खतरा केवल यही नहीं है, अपनी लापरवाही के कारण दुनियाँ धीरे-धीरे अंधत्व की तरफ बढ़ रहीहै,विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार मोतियाबिंद और ग्लूकोमा के बाद कॉर्निया की बीमारियां (आंखों की अगली परत कार्नियाका क्षतिग्रस्त होना) आंखों की रोशनी जाने की प्रमुख वजहें हैं,अंधत्व की समस्या से गुजर रहे 92.9 पेर्सेंट लोगों को अंधा होने से बचाया जा सकता है,इसे प्रिवेंटेबल ब्लाइंडनेस यानी रोका जा सकने वाला अंधत्व भी कहा जाता है,लेकिन मानवीय आदतों,जरूरत होनेपर भी आंखों का चश्मा नहीं लगाना, मोतियाबिंद का ऑपरेशन नहीं करवाना और ग्लूकोमा की समय-समय पर जांच नहीं करवाने, कंप्यूटर और मोबाइल पर ज्यादा काम करने से अधिकांश लोगों की आंखों को नुकसान पहुंच रहा है, बदलती लाइफस्टाइल,अनियमितदिनचर्या प्रदूषण और बहुत ज्यादा स्ट्रेस होने की वजह से ज्यादातर लोग आंख से जुड़ी समस्याओं का शिकार होने लगे हैं,ऑन लाइन क्लासेस और कंप्यूटर का इस्तेमाल बढ़ने से बच्चों और युवाओं की आंखों में सूखेपन की समस्या बढ़ी है।आज देश के कई नेत्रहीनों को हमारी आंखें नई रोशनी दे सकती हैं,मगर इसके लिए सबसे पहले हमें जीवित रहते हुए अपनी आंखों और उनकी रोशनी का ध्यान रखना और मृत्यु उपरांत नेत्रदान करना जरूरी है, जिस तरह से हमारी दिनचर्या बिगड़ रही हैं, हमें अपनी आंखों की देखभाल करने के लिए कुछ कार्य जरूर करना चाहिए जैसे, अच्छी दृष्टि के लिए संतुलित आहार का सेवन करें, अपने आहार में हरी पत्तेदार सब्जियों, अंडे, फलियों एवं गाजर को अधिक से अधिक मात्रा में शामिल करें, आंखों की सुरक्षा के जतन करें, आंखों के बेहतर स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए अपनी आंखों की नियमित जांच कराएं,यदि हम कंप्यूटर और मोबाइल पर लंबे समय तक काम करते हैं तो आंखों का सूखापन बढ़ सकता है।

साथियों बात अगर हम नेत्रदान की प्रक्रिया व पात्रता को समझने की करें तो,भारत में नेत्रदान की प्रक्रिया कैसे काम करती हैभारत में नेत्रदान की प्रक्रिया सरल है। (1) नेत्रदान की ओर पहला कदम किसी पंजीकृत नेत्र बैंक में नेत्रदान प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर करना है। (2) नेत्र बैंक द्वारा उपलब्ध कराए गए फॉर्म में अपनी सभी जानकारी भरें। (3) इसके बाद,और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि अपने प्रियजनों को अपने निर्णय के बारे मेंसूचित करें ताकि वे जान सकें कि हमारी मृत्यु के बाद किसे फोन करना है (क्योंकि आंख निकालने की प्रक्रिया मृत्यु के लगभग तुरंत बाद होनी चाहिए)। (4) स्वस्थ जीवनशैली अपनाकर अपनी आंखों की देखभाल करें ताकि दान के समय वे अच्छी स्थिति में हों। (5) यदि हमने नेत्रदान करने का संकल्प लिया है, तो सुनिश्चित करें कि हमारे प्रियजन मृत्यु के 6 घंटे के भीतर नेत्र बैंक को दान के लिए संपर्ककरें।उन्हेंनिम्नलिखित प्रक्रिया का पालन करना होगा-(1) निकटतम नेत्र बैंक को कॉल करें। जितनी जल्दी हम कॉल करेंगे, उतना बेहतर होगा। (2) मृत व्यक्ति की दोनों आंखें बंद रखें तथा सूखने से बचाने के लिए नम रुई से ढक कर रखें। (3) हम शव को हवा से दूर बंद कमरे में रख सकते हैं, तथा सुनिश्चित कर सकते हैं कि पंखा बंद हो। (4) यदि संभव हो तो शरीर के ऊपरी आधे हिस्से को लगभग 6 इंच ऊपर उठाएं। (5) जब उपयुक्त कर्मचारी आएं,तो उन्हें आंखें निकालने में 20 मिनट से ज़्यादा समय नहीं लेनाचाहिए। वे यह भी सुनिश्चित करते हैं कि आंख निकालने के कोई भी निशान न रह जाएं।नेत्रदान के लिए कौन पात्र है सभी उम्र और लिंग के लोग नेत्रदान के लिए पात्र हैं। यहां तक कि मायोपिया और हाइपरोपिया जैसी अपवर्तक त्रुटियों वाले लोग या मोतियाबिंद की सर्जरी करवाने वाले लोग, उच्च रक्तचाप जैसी अन्य समस्याओं वाले लोग भी अपनी आंखें दान कर सकते हैं। कौन अपनी आंखें दान नहीं कर सकताजिन लोगों को संक्रामक रोग हैं,वेअपनी आंखें दान नहीं कर सकते। नेत्र बैंक के कर्मचारी ऐसी आंखों का उपयोग करने से पहले इन बीमारियों की जांच करते हैं। ये कर सकते हैं नेत्रदान,अधिकतर मामलों में हर कोई नेत्रदान कर सकता है,इसमें ब्लड ग्रुप, आंखों के रंग, आई साइट, साइज, उम्र, लिंग आदि से कोई फर्क नहीं पड़ता है, डोनर की उम्र, लिंग, ब्लड ग्रुप को कॉर्नियल टीश्यू लेने वाले व्यक्ति से मैच करने की कोई आवश्यकता नहीं होती है,जिन रोगियों ने मोतियाबिंद, काला पानी या अन्य आंखों का ऑपरेशन करवाया है, वे भी नेत्रदान कर सकते हैं, नजर का चश्मा पहनने वाले, मधुमेह, अस्थमा, उच्च रक्तचाप और अन्य शारीरिक विकारों जैसे सांस फूलना, हृदय रोग, क्षय रोग आदि के रोगी भी नेत्रदान कर सकते हैं। कौन नहीं कर सकता नेत्रदान-कई सारे गंभीर रोगों से पीड़ित व्यक्ति नेत्रदान नहीं कर सकते हैं,जैसे एड्स, हैपेटैटिस, पीलिया, ब्लड केन्सर, रेबीज (कुत्ते का काटा), सेप्टीसिमिया, गैंगरीन, ब्रेन टयूमर, आंख के आगे की काली पुतली (कार्निया) की खराबी हो, जहर आदि से मृत्यु हुई हो या इसी प्रकार के दूसरे संक्रामक रोग हों, तो इन्हें नेत्रदान की मनाही होती है- नेत्रदान करने की सावधानी (1) परविार वालों को जतिना जल्दी हो सके नेत्रदान की प्रक्रयिा पूरी करवानी चाहए,आंखों को डोनेट के बाद जल्द से जल्द ट्रांसप्लांट कर दयिा जाता है। (2) यदि समय लगता है तो कॉर्नयिा को कोल्ड स्टोरेज में रखा जाता है जहां से 7 दनिों के अंदर उसका इस्तेमाल कर लयिा जाता है।(3) नेत्रदान सरल और आसान प्रक्रयिा है, इसमें महज 10 से 15 मनिट का समय लगता है।

पुरस्कारों का सौदा-साहित्य के बाज़ार में बिकती संवेदनाएं

साहित्य आज साधना नहीं, सौदेबाज़ी का बाज़ार बनता जा रहा है। नकली संस्थाएं ?1000-?2500 लेकर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार बांट रही हैं। यह केवल साहित्य नहीं, भाषा की भी हत्या है। सहयोग राशि के नाम पर सम्मान बिक रहा है, और सच्चे साहित्यकारों की साधना उपेक्षित हो रही है। अब समय आ गया है-इन आयोजनों का बहिष्कार करें, पर्दाफाश करें, और साहित्य को बाज़ारू अपवित्रता से बचाएं। पुरस्कार रचना की गरिमा हों, न कि डिजिटल भुगतान का पुरस्कार! यदि कोई पुरस्कार सहयोग राशि से खरीदा जा सकता है, तो वह पुरस्कार नहीं, एक बाजारू तमाशा है। साहित्य आत्मा की भाषा है, न कि ट्रॉफियों की भीड़। नकली आयोजनों की नक़ल से हिंदी ही नहीं, साहित्य की आत्मा घायल हो रही है। अब समय आ गया है कि हम साहित्य को सेल्फी इवेंट से निकालकर सच्ची साधना के मंच पर वापस लाएं।

साहित्य, आत्मा की पुकार है। वह सर्जक की साधना का फल होता है - तप, त्याग और संवेदना की अभिव्यक्ति। लेकिन आज, जब हम चारों ओर नज़र डालते हैं, तो पाते हैं कि यह साधना अब सहयोग राशि और नामांकन शुल्क की दुकान पर बिक रही है। पुरस्कार अब साधना की स्वीकृति नहीं, पैसे की नीलामी हो गए हैं। ऐसे में प्रश्न उठना स्वाभाविक है - क्या सचमुच साहित्य का मूल्य अब बैंक ट्रांजैक्शन से तय होगा?

साहित्य के नाम पर चलती मंडी

आजकल सोशल मीडिया, व्हाट्सएप और मेल पर साहित्यिक आयोजनों के नाम पर संदेश आते हैं - सिर्फ ?1000 में नामित हों, ?2500 में पुरस्कार पाएं। कुछ तथाकथित संस्थाएं और व्यक्ति 'राष्ट्रीय', 'अंतरराष्ट्रीय', 'गौरव', 'रत्न' जैसे भारी-भरकम शब्दों से सजे पुरस्कारों का जाल बिछाकर साहित्यप्रेमियों को लुभाते हैं। सच्चाई यह है कि पुरस्कार नहीं, सम्मान की नीलामी हो रही है। इन आयोजनों के अधिकांश आयोजक एक जैसी वेबसाइटें, नकली अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के नाम और सोशल मीडिया प्रचार का सहारा लेकर लोगों को भ्रमित करते हैं। वे एक निश्चित शुल्क लेकर एक ट्रॉफी, सर्टिफिकेट और कभी-कभी एक ऑनलाइन समारोह की व्यवस्था करते हैं, जो केवल आत्मप्रशंसा का साधन होता है, न कि वास्तविक मान्यता।

सहयोग राशि या पुरस्कार की दलाली?

इन आयोजनों के पीछे अक्सर एक चतुर चाल होती है - इसे सहयोग राशि या प्रेस रिलीज़ खर्च कहकर नैतिक जामा पहनाया जाता है। पुरस्कार एक साधक को उसके योगदान पर दिया जाना चाहिए, न कि उसकी जेब देखकर। जब कोई लेखक अपनी मेहनत से एक रचना गढ़ता है, वह अपने समय, जीवन और संवेदना का अंश उसमें उड़ेलता है। और फिर कुछ लोग आते हैं - पैसा दो, पुरस्कार लो - क्या यह साहित्य की आत्मा का अपमान नहीं? यहां साहित्य एक उत्पाद बन गया है और लेखक उपभोक्ता। पुरस्कार की शर्तें तय नहीं होतीं उनके रचनात्मक मापदंड पर, बल्कि क्ब्ध् भुगतान और स्क्रीनशॉट की पुष्टि पर होती हैं।

भाषा की दुर्गति के सौदागर

ऐसे आयोजनों के ज़रिए न सिर्फ साहित्य को ठगा जा रहा है, बल्कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के नाम पर योजनाबद्ध गिरावट फैलाई जा रही है। जो सम्मान कभी राष्ट्रगौरव का प्रतीक होता था, वह अब टिकट खरीदकर पाई जाने वाली वस्तु बन गया है। यह भाषाई संस्कृति पर हमला है, जिसका संगठित बहिष्कार आवश्यक है। अनेक फर्जी अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार विदेशी नामों की आड़ में भारत के भीतर ही संचालित हो रहे हैं। इन आयोजनों का एक ही उद्देश्य होता है - नाम की आड़ में पैसा कमाना और साहित्यिक गंभीरता का शोषण करना।

साहित्य को साधना ही रहने दो, सौदा मत बनाओ

सच्चा साहित्यकार पुरस्कार के लिए नहीं, समाज के लिए लिखता है। वह पुरस्कार के पीछे नहीं भागता, पुरस्कार उसकी साधना के पीछे भागते हैं। आज ज़रूरत है ऐसे छलछंद को उजागर करने की, जो साहित्य को सिर्फ एक सेल्फी इवेंट बना रहे हैं। पुरस्कारों की गारंटी देने वाले लोग दरअसल साहित्य की आत्मा के हत्यारे हैं। ऐसे पुरस्कारों से न केवल साहित्यिक गरिमा घटती है, बल्कि युवा लेखकों को एक गलत प्रेरणा मिलती है - कि रचना से अधिक महत्वपूर्ण है, उसकी मार्केटिंग और भुगतान। समाज को सजग बनाइए, बहिष्कार कीजिए। अब समय आ गया है कि हम ऐसे आयोजनों का बहिष्कार करें, पैसे लेकर पुरस्कार बेचने वालों का सामाजिक पर्दाफाश करें, सोशल मीडिया और पत्रिकाओं में इनके नाम उजागर करें, सच्चे साहित्यकारों और पाठकों के बीच चेतना फैलाएं, साहित्य को आत्मा की अभिव्यक्ति बनाए रखें, उसकी बोली न लगने दें।

नकली पुरस्कारों का जाल कैसे पहचानें?

पुरस्कार पाने से पहले नामांकन शुल्क या सहयोग राशि मांगी जाए तो सतर्क हो जाइए। जिन आयोजनों के पीछे कोई प्रतिष्ठित संस्थान न हो, केवल फेसबुक पेज या गूगल फॉर्म हो - वे संदिग्ध होते हैं। किसी भी इंटरनेशनल पुरस्कार का आयोजन यदि केवल भारत के छोटे शहरों में हो रहा हो, तो जांच जरूरी है। वेबसाइट पर संस्थापक या निर्णायक मंडल की पारदर्शिता न हो, तो यह लाल झंडी है।

साहित्य बिके नहीं, बचे

हम यह नहीं कह रहे कि पुरस्कार न दिए जाएं - बल्कि पुरस्कार तपस्वी लेखकों की साधना की स्वीकृति होनी चाहिए, न कि किसी क्ब्ध् भुगतान का रसीद। भाषा की गरिमा बचानी है तो ऐसे नकली संस्थानों से मुक्ति पानी होगी। साहित्य कोई काजल की कोठरी नहीं कि कोई भी चला आए, काजल लगा ले और चला जाए।

यह साधना है, सेवा है, संघर्ष है। साहित्य की दुनिया में यह जो बनावटी रोशनी जगाई जा रही है, वह दरअसल एक अंधेरा है - आत्मा से दूर, पैसे के करीब। सच्चे लेखक और पाठक ही मिलकर इस अंधकार को मिटा सकते हैं। अगर साहित्य की आत्मा को जीवित रखना है, तो जरूरी है कि हम ऐसे नकली पुरस्कारों के खिलाफ आवाज़ उठाएं। यह न केवल लेखन की प्रतिष्ठा की रक्षा करेगा, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी सिखाएगा कि पुरस्कार नहीं, सृजन और संवेदना ही साहित्य की असली पूंजी है।

हम साहित्य के उस युग में प्रवेश कर रहे हैं जहाँ आत्मा से अधिक महत्वपूर्ण पुरस्कारों का बायोडेटा हो गया है। आवश्यकता है उस धैर्य, विवेक और विवेचना की जो सच्चे रचनाकार को भीतर से मजबूत करे। ऐसे माहौल में सच्चे साहित्यकारों का मौन अपराध होगा।

विकासखंड शिक्षा अधिकारी को पद दुरुपयोग पर किया गया निलंबित

विकासखंड शिक्षा अधिकारी सुरेन्द्र जायसवाल को पद दुरुपयोग और कुटरचना के आरोप पर किया गया निलंबित

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। राज्य शासन के निर्देशों के तहत शालाओं एवं शिक्षकों के युक्तियुक्तकरण के संबंध में गंभीर अनियमितताएं पाए जाने पर मनेन्द्रगढ़ विकासखंड के शिक्षा अधिकारी श्री सुरेन्द्र प्रसाद जायसवाल को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया है। यह कार्रवाई कार्यालय आयुक्त सरगुजा द्वारा, कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर के पत्र के आधार पर की गई है।

जांच में पाया गया कि श्री जायसवाल ने माध्यमिक शाला लेदरी में वरिष्ठता क्रमांक 4393 वाली शिक्षिका श्रीमती गुंजन शर्मा को अतिशेष घोषित कर दिया, जबकि उनके बाद क्रमांक 4394 की शिक्षिका श्रीमती बेबी धृतलहरे को यथावत रखा गया। इसी प्रकार प्राथमिक शाला चिमटीमार में कार्यभार ग्रहण तिथि के अनुसार श्रीमती संध्या सिंह को यथावत रखना था, लेकिन उन्हें अतिशेष की सूची में रखा गया, जबकि बाद में नियुक्त श्रीमती अर्णिमा जायसवाल को यथोचित नहीं माना गया।

इसके अलावा माध्यमिक शाला साल्ही में पदस्थ शिक्षक श्री सूर्यकांत जोशी के विषय का विवरण गलत दर्शाया गया तथा विषय चक्र का भी पालन नहीं किया गया। श्री जायसवाल द्वारा वरिष्ठ शिक्षक को कनिष्ठ दर्शाना कूटरचना की श्रेणी में आता है, जो उनके पद पर रहते हुए गंभीर लापरवाही और स्वेच्छाचारिता को दर्शाता है। उनका यह कृत्य छत्तीसगढ़ सिविल सेवा (आचरण) नियम, 1965 के नियम 3 का स्पष्ट उल्लंघन है।

अतः छत्तीसगढ़ सिविल सेवा (वर्गीकरण, नियंत्रण एवं अपील) नियम, 1966 के नियम 9(1)(क) के अंतर्गत श्री सुरेन्द्र प्रसाद जायसवाल को तत्काल प्रभाव से निलंबित किया गया है । निलंबन अवधि में उन्हें नियमानुसार जीवन निर्वाह भत्ता प्रदान किया जाएगा तथा उनका मुख्यालय जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर नियत किया गया है।

जिला पंचायत एमसीबी की स्थायी समितियों का निर्वाचन हुआ संपन्न

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। जिला पंचायत मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर में स्थायी समितियों के गठन की प्रक्रिया पूर्ण हो गई है। छत्तीसगढ़ जनपद तथा जिला पंचायत स्थायी समितियों (सदस्यों का निर्वाचन, शक्तियां, कर्तव्य, कार्यकाल एवं संचालन प्रक्रिया) नियम 1994 के अंतर्गत जिला पंचायत की स्थायी समितियों के निर्वाचन कार्यक्रम को आज विधिवत रूप से सम्पन्न किया गया।

इस अवसर पर अपर कलेक्टर एवं पीठासीन अधिकारी अनिल कुमार सिदार ने निर्वाचन प्रक्रिया का संचालन करते हुए कार्यक्रम की औपचारिक घोषणा की। निर्वाचन की शुरुआत पूर्वान्ह 11 बजे कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में हुई, जहां जिला पंचायत के सदस्यों की उपस्थिति दर्ज की गई। तत्पश्चात सामान्य प्रशासन, कृषि, शिक्षा, संचार एवं संकर्म, सहकारिता एवं उद्योग, महिला एवं बाल विकास, वन तथा स्वच्छता एवं स्वास्थ्य समितियों के लिए नाम निर्देशन पत्रों की स्वीकृति, परीक्षण एवं वैध-अवैध नामों की घोषणा की गई।

निर्वाचन परिणाम के अनुसार सामान्य प्रशासन समिति की पदेन सभापति जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती यशवंती सिंह बनीं। वहीं शिक्षा समिति का सभापति जिला पंचायत उपाध्यक्ष श्री राजेश साहू को मनोनीत किया गया, जिसमें श्रीमती प्रिया और श्रीमती अनीता चौधरी को सदस्य बनाया गया। इसके साथ ही कृषि समिति का सभापति पद श्रीमती सुखमंती सिंह को सौंपा गया, जबकि श्रीमती ममता सिंह और श्री रामजीत लकड़ा सदस्य बनाए गए। इसके साथ ही संचार एवं संकर्म समिति की बागडोर श्री रामजीत लकड़ा को दी गई, साथ ही श्रीमती अनीता सिंह और श्रीमती ममता सिंह को समिति का सदस्य नियुक्त किया गया।

वहीं सहकारिता एवं उद्योग समिति के सभापति श्री उजीत नारायण सिंह बन, जबकि श्रीमती सुखमंती सिंह और श्रीमती प्रिया सदस्य नियुक्त हुईं। वहीं महिला एवं बाल विकास समिति की सभापति श्रीमती अनीता सिंह को सौंपी गई, जिसमें श्रीमती प्रिया और श्रीमती बेलाकुंवर सदस्य बनाई गईं। वन समिति का नेतृत्व श्रीमती अनीता चौधरी को मिला और उनके साथ श्रीमती अनीता सिंह तथा श्रीमती बेलाकुंवर आयाम को सदस्य नियुक्त किया गया।

अंततः स्वच्छता एवं स्वास्थ्य समिति की जिम्मेदारी श्रीमती बेलाकुंवर आयाम को दी गई, वहीं श्री उजीत नारायण सिंह और श्री रामजीत लकड़ा को इस समिति का स्थायी सदस्य बनाया गया। जिला पंचायत की स्थायी समितियों के गठन से पंचायत व्यवस्था को नया आयाम मिलेगा और शासन की योजनाओं के क्रियान्वयन में अधिक पारदर्शिता और कार्यकुशलता आएगी।

पीठासीन अधिकारी अनिल कुमार सिदार ने निर्वाचन प्रक्रिया को शांतिपूर्ण, लोकतांत्रिक और समयबद्ध रूप से संपन्न कराने के लिए सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया और नवगठित समितियों को

नोडल/सहायक नोडल अधिकारियों के प्रशिक्षण का हुआ आयोजन

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। लोक शिक्षण संचालनालय इन्द्रावती भवन अटल नगर नवा रायपुर के संदर्भ में जिला शिक्षा अधिकारी एमसीबी श्री अजय मिश्रा के निर्देशानुसार शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के सफल क्रियान्वयन हेतु जिले के सभी आरटीई नोडल प्राचार्यों का प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

प्रशिक्षण का आयोजन जिला मुख्यालय स्थित स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट अंग्रेजी माध्यम विद्यालय मनेन्द्रगढ़ के ऑडिटोरियम में आज पूर्वाह्न 11.00 बजे से अपरान्ह 1.00 बजे तक आयोजित किया गया। डीपीआई रायपुर से प्रशिक्षण प्राप्त विकासखण्ड के मास्टर प्रशिक्षक क्रमशः कलीराम श्रीवास (शा. हाई स्कूल नई लेदरी वि.खं. मनेन्द्रगढ़) एम.एच.अंसारी (शा.उ.मा.वि.डोमनहिल वि.खं. खड़गवां) उमेश कुमार द्विवेदी (शा.उ.मा.वि. कंजिया वि.खं. भरतपुर) द्वारा प्रशिक्षण दिया गया।

प्रशिक्षण में प्रशिक्षकों द्वारा बिन्दुवार मौखिक एवं प्रोजेक्टर के माध्यम से आर.टी.ई के तकनीकी कार्यवाही दिखाई गई। प्रशिक्षण के मुख्य बिन्दु जिसमें अशासकीय शालाओं से बसाहटों की मैपिंग, अशासकीय शालाओं की प्रोफाइल

अपडेट, आर.टी.ई. सीटों का प्रकटीकरण, आरक्षित सीटों हेतु प्राप्त आवेदनों में संलग्न दस्तावेजों की जांच, लॉटरी पश्चात् प्रवेश प्रक्रिया, शुल्क प्रतिपूर्ति राशि का दावा एवं सत्यापन, अशासकीय शाला स्तर पर किये जाने वाले कार्य, नोडल प्राचार्य द्वारा शुल्क प्रतिपूर्ति दावा का सत्यापन, ड्राप आउट सर्वे, नियमित मॉनिटरिंग एवं नोडल के ऑनलाइन कार्यों के विषयों पर आर.टी.ई. अधिनियम अंतर्गत विस्तार से प्रशिक्षण दिया गया।

जिला स्तर पर नोडल प्राचार्यों के प्रशिक्षण उपरांत अशासकीय विद्यालयों के नियमित मॉनिटरिंग हेतु नियुक्त मेटरों का प्रशिक्षण आयोजित किया जाएगा। नोडल प्राचार्यों के प्रशिक्षण उपरांत आगामी दिनों में नोडल प्राचार्यों द्वारा अपने विद्यालय अंतर्गत आने वाले अशासकीय विद्यालयों के संचालकों को प्रशिक्षण दिया जाएगा। प्रशिक्षण को जिले में आर.टी.ई. के जिला सहा. नोडल अधिकारी टी. विजय गोपाल राव द्वारा भी उद्बोधन दिया गया एवं संजीव कुमार प्राचार्य शा.बा.उ.मा.वि. मनेन्द्रगढ़ द्वारा संबोधन कर प्रशिक्षण का समापन किया गया।

प्रशिक्षण में नोडल प्राचार्य भरत जायसवाल, सत्येन्द्र कुमार सिंह, सूर्यकान्त सिंह, रामचन्द्र नामदेव, मधुबाला कश्यप, श्रीमती रेखा पाण्डेय, मनीषा किण्डो, अनिल कुमार तिवारी, प्रमाद कुमार पाण्डेय, श्यामलाल राजवाड़े, राजेश कुमार द्विवेदी, प्रभात रंजन विश्वास, सत्तर सिंह, जीएस पोर्ते, कौशिक भद्रा एवं कार्यालयीन शाखा प्रभारी शैलेश कुमार खाखा उपस्थित रहे।

अपर कलेक्टर ने आमजनों की सुनी समस्याएं, निराकरण के दिए निर्देश

कलेक्टर जनदर्शन में 36 आवेदन हुए प्राप्त

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। कलेक्टर डी. राहुल वेंकट के निर्देशन में अपर कलेक्टर अनिल कुमार सिदार नें आज कलेक्ट्रेट कार्यालय में जनदर्शन के माध्यम से आम नागरिकों की समस्याओं को सुना। जिले के ग्रामीण जन और नागरिकों ने जनदर्शन में अपनी छोटी-बड़ी समस्याओं को सीधे अपर कलेक्टर के समक्ष रखा। अपर कलेक्टर ने संबंधित अधिकारियों को प्राप्त सभी आवेदनों को प्राथमिकता के साथ शीघ्रता से समय-सीमा में निराकरण करने के निर्देश दिए हैं।

आज की जनदर्शन में कुल 36 आवेदन प्राप्त हुए। इस जनदर्शन में आवेदक दलप्रताप सिंह निवासी हस्तिनापुर भूमि के संबंध में, प्रेमवती निवासी खोंगापानी पटवारी द्वारा आदेश का परिपालन नहीं किये जाने के संबंध में, सुदामा निवासी पेन्ड्री घर से बेदखल करने के संबंध में, राधे कृष्ण निवासी पहाड़हंसवाही भूमि के संबंध में, जीवन यादव निवासी शंकरगढ़ भूमि के संबंध में, मंजू देवांगन निवासी मनेन्द्रगढ़ रोजगार दिलाये जानें के संबंध में, सुनील सोनी निवासी चनवारीडांड नल कनेक्शन दिलवाये जाने के संबंध में, रामसाय सिंह निवासी कोटाडोल वन अधिकार पट्टा सुधार कराने के संबंध में, मनराज सिंह निवासी खड़गवां भूमि के संबंध में, परमसुखी निवासी घटई भूमि के संबंध में, मोनिका निवासी सलका भूमि के संबंध में, सुमार साय निवासी बरबसपुर भूमि के संबंध में, रामानुज निवासी लालपुर भूमि के संबंध में, शंकर प्रसाद निवासी सलका भूमि के संबंध में, रामसहाय निवासी बुलाकीटोला पट्टा निरस्त करने के संबंध में, सुन्दर सिंह निवासी धवलपुर भूमि सीमांकन के संबंध में, मोती लाल निवासी नागपुर पीएम आवास का पैसा दूसरे के खातें में जाने के संबंध में, नर्मदा प्रसाद निवासी नागपुर फर्जी तरीके से राशि स्वीकृत करा के आहरण करने के संबंध में, शांति बाई निवासी रोकड़ा भूमि के संबंध में, भैया लाल निवासी बरकेला भूमि बिक्री के स्थगन लगाए जाने के संबंध में, बन्ने लाल निवासी नई लेदरी शिकायत के संबंध में, उजरिया बाई निवासी नई लेदरी भूमि के संबध में, राजू राय निवासी पेन्ड्री भूमि के संबंध में, लालजी निवासी लालपुर भूमि के संबंध में, फूलमनी निवासी लाईपारा काबिज पट्टा बनवाने के संबंध में, मोनिका निवासी सलका पट्टा ऑनलाईन करने के संबंध में, केवला प्रसाद निवासी भूमका सोलर पंम्प विक्रेता करने के संबंध में, सुरेन्द्र पटेल निवासी सलवा फर्जी तरीके से राशि निकलवाने के संबंध में, लल्लू लाल निवासी सलवा शासन की राशि का दुरूपयोग करने के संबंध में, सुरेन्द्र कुमार सलवा डबरी निर्माण के नाम से राशि आहरित करने के संबंध में, ममता शिवहरें निवासी मनेन्द्रगढ़ भूमि के संबंध में, बिलसिया निवासी ताराबहरा मरम्मत कार्य का भुगतान करने के संबंध में, लल्लाराम निवासी गिद्धमुड़ी भूमि के संबंध में, जगदीश निवासी बेला भूमि के संबंध में, कपिल निवासी नागपुर निराकरण करने के संबंध में, प्रहलाद गुप्ता निवासी मुकाम जीओ कम्पनी द्वारा गहरी नाली खोदे जाने के संबंध में, अपनी शिकायत लेकर उपस्थित हुए थे।

अपर कलेक्टर ने प्राप्त सभी आवेदनों को पूरी गंभीरता से सुनते हुए संबंधित विभागों को उचित कार्यवाही करते हुए त्वरित निराकरण करने के निर्देश दिए।

कलेक्टर ने ग्राम पंचायतों में हितग्राही मूलक योजनाओं की समीक्षा और सुधार के लिए दिए निर्देश

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। कलेक्टर डी. राहुल वेंकट की अध्यक्षता में आज कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में साप्ताहिक समय-सीमा की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में जिले के लंबित कार्यों, विकास योजनाओं की प्रगति, हितग्राहीमूलक योजनाओं के क्रियान्वयन, विभागीय समन्वय और पंचायत स्तर की समस्याओं पर विस्तृत चर्चा की गई।

कलेक्टर ने निर्देशित किया कि डीएमएफ मद से स्वीकृत पुराने और नए कार्यों की अद्यतन स्थिति की जानकारी संबंधित विभाग तत्काल दें तथा लापरवाही बरतने वालों पर कड़ी कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। कलेक्टर ने स्पष्ट निर्देश दिए कि ग्राम पंचायतों में हितग्राही मूलक योजनाओं की 100 प्रतिशत सतत निगरानी अटल मॉनिटरिंग पोर्टल के माध्यम से की जाए। उन्होंने राजस्व और वन विभाग को संयुक्त रूप से सीमांकन और सर्वेक्षण कार्य शीघ्र पूर्ण करने के लिए निर्देशित किया। मनेन्द्रगढ़, खड़गवां, केल्हारी और भरतपुर के चारों एसडीएम को अपने-अपने क्षेत्रों में भौगोलिक स्तर पर कार्यों की जांच सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए गए।

बैठक में विकासखंड मनेन्द्रगढ़ के ग्राम पंचायत बुंदेली, बुलाकीटोला, खैरबना, पाराडोल, शंकरगढ़ और खड़गवां के रतनपुर, बाड़ेमुड़ा, कदरेवा, नेवरी और फुनगा में पीएम किसान योजना, लैंड सीडिंग, ई-केवाईसी और किसान क्रेडिट कार्ड (च्ष्टष्ट) में शत-प्रतिशत पंजीयन सुनिश्चित करने के निर्देश जारी किए गए। साथ ही नगर निगम एवं नगर पालिका क्षेत्रों में ई-केवाईसी की स्थिति की समीक्षा कर अभियान चलाकर इसे पूर्ण करने के निर्देश दिए गए।

इस बैठक में आधार लिंकिंग, ओपीटी, डीएमएफ, लोक निर्माण विभाग, हाउसिंग बोर्ड से जुड़े कार्यों की भी समीक्षा की गई और निर्देश दिए गए कि सभी नए प्रस्तावों की अद्यतन जानकारी प्रस्तुत की जाए। साथ ही यह तय किया गया कि कैंप सह समीक्षा बैठक बुंदेली में 14 जून, खैरबना में 21 जून, शंकरगढ़ में 27 जून और पाराडोल में 28 जून 2025 को आयोजित की जाएगी, जहां सभी विभाग अपनी योजनाओं की जानकारी ग्रामवासियों को देंगे। इसके साथ ही आधार शिविर आयोजित कर आधार लिंकिंग का कार्य पूर्ण करने तथा राशन कार्डों में आधार जोड़ने की प्रक्रिया तेजी से पूरी करने के निर्देश दिए गए।

इस बैठक में निर्देश दिए गए कि हफ्ते में पांच ग्राम सभाओं का दौरा आयोजित कर ग्रामीणों को योजनाओं की जानकारी दी जाए तथा 8वीं,9वी, 10वी तथा 12वीं तक के विद्यार्थियों के जाति प्रमाणपत्र चिन्हांकित पांचों पंचायतों में प्राथमिकता से बनाए जाएं। जनपदों से आरसीसी कार्यों की प्रगति की जानकारी शीघ्र भेजने को भी कहा गया। साथ ही सुशासन

तिहार के दौरान प्राप्त शिकायतों का पंचायत और जिला स्तर पर प्राथमिकता से निराकरण करने को कहा गया, तथा जो प्रकरण स्थानीय स्तर पर हल न हो सकें, उनकी सूची बनाकर राज्य स्तर पर भेजने की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। जनप्रतिनिधियों, विशेष रूप से जनपद एवं जिला पंचायत सदस्यों की मांगों का शीघ्र समाधान करने के निर्देश भी जारी किए गए।

कलेक्टर ने यह भी स्पष्ट किया कि सुशासन तिहार में प्राप्त वन अधिकार पत्रों से संबंधित ट्राइबल, एसईसीएल, फॉरेस्ट और रिन्यू से जुड़े प्रकरणों का तत्काल निराकरण हो। बैठक में जिला अस्पताल चिरमिरी और खड़गवां में सीएससी, आयुष चिकित्सा और खेल गतिविधियों की प्रगति पर भी चर्चा हुई। ग्राम सभाओं की कार्यसूची, बरदर समाज कल्याण और पीएमजीएसवाई से जुड़ी योजनाओं की समीक्षा की गई। सभी जनपद सीईओ को ग्राम पंचायतों में कार्यरत बीसी सखी के कार्यों की निगरानी सुनिश्चित करने को कहा गया, साथ ही विकसित कृषि अभियान को प्रभावी ढंग से क्रियान्वित करने के निर्देश दिए गए

। बैठक में भल्लौर, तिलोखन, अमृतधारा, कुंवारपुर और पोड़ीडीह में अतृत सरोवर की प्रगति की जानकारी के साथ बंदोबस्त, ऋण सुधार की दिशा में काम करने को भी कहा गया। इसके अलावा शिक्षा विभाग के अतिरिक्त कक्षों, कृषि, खेल और स्वास्थ्य विभाग के लिए भूमि आवंटन, गर्ल्स कॉलेज, नवोदय विद्यालय, लाइवलिहुड कॉलेज, हॉर्टिकल्चर कॉलेज, एग्रीकल्चर कॉलेज, नागपुर-चिरमिरी रेलवे लाइन, कोटाडोल हाउसिंग बोर्ड और सड़क निर्माण से जुड़े लंबित कार्यों को शीघ्र पूरा करने के निर्देश दिए गए। पीडीएस भवनों की आवश्यकता के अनुसार विधानवार सूची तैयार करने तथा नए राशन दुकानों की स्वीकृति और संचालन शीघ्र आरंभ करने के निर्देश दिए गए।

कलेक्टर ने कहा कि भूमिहीन परिवारों को आवास आवंटन के बाद जनपद सीईओ, तहसीलदार और पटवारी मिलकर सर्वे कर बी-1, नक्शा और खसरा संलग्न कर आवश्यक प्रक्रिया पूर्ण करें। सभी विभागों को यह भी निर्देश दिए गए कि भर्ती प्रक्रिया में लंबित स्वीकृत पदों की स्थिति स्पष्ट करें और आवश्यकता अनुसार प्रक्रिया शीघ्र शुरू करें। मुख्यमंत्री जनदर्शन के पुराने और नए प्रकरणों की समीक्षा, निराकरण और घोषणाओं की अद्यतन जानकारी तैयार करने के निर्देश भी बैठक में दिए गए।

राजस्व विभाग को लंबित जांच प्रतिवेदनों के शीघ्र निराकरण के लिए विशेष अभियान चलाने को कहा गया। इस महत्वपूर्ण बैठक में जिला पंचायत सीईओ अंकिता सोम शर्मा, अपर कलेक्टर अनिल कुमार सिदार,डिप्टी कलेक्टर इंदिरा मिश्रा, एसडीएम लिंगराज सिदार, विजयेन्द्र सारथी, जिले के सभी तहसीलदार, जनपद सीईओ, नगर पंचायतों के सीएमओ सहित सभी विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

रीवा/सतना की खबरें

जिला पंचायत सदस्य सजंय सिंह कछवाह ने लगाई जन चौपाल

मीडिया ऑडीटर, सतना (एजेंसी)। सतना जिले के वार्ड क्रमांक 23 से जिला पंचायत सदस्य संजय सिंह कछवाह बार्ड क्र. 23 ने भगवान बिरसा मुंडा शहीद दिवस के अवसर पर ग्राम पंचायत पिंडरा के बरहा मवान के दोनों आंखों से नेत्रहीन जीवन लाल मवासी के घर पहुंचकर गृहस्थी का सामान देकर मानवता की मिशाल कायम किया। विदित हो कि जीवन लाल मवासी के घर में रविवार 8 मई,025 की दरम्यानी रात 3 से 4 बजे के बीच अज्ञात कारणों से आग लग जाने के कारण घर गृहस्थी का सामान जलकर राख हो गया था। जिसकी जानकारी क्राई फैलो आनंद ने श्री संजय भइया जी जिलापंचायत सदस्य वार्ड क्र.23 को अवगत करवाया था व राशन सामाग्री उपलब्ध करवाने का आग्रह किया था।

उन्होंने कल दिनांक 09/06/025 को बिरसा मुंडा शहीद दिवस के अवसर पर बरहा मवान पहुंचकर जनचौपाल कार्यक्रम के दौरान आटा बोरी , चावल, दाल, तेल ,मशाला, सब्जियां, खाना बनाने के बर्तन जिसमें तवा, चिमटा,कर्चुली, लोटा, गिलास, चम्मच, थाली, भगौना, चटाई, चद्दर, बाल्टी आदि सामाग्री प्रदान किया। इसके साथ ही घर की वैकिल्पक व्यवस्था छांव बनाने हेतु त्रिपाल देने को भी कहा। जीवनलाल गृहस्थी का सामान पाकर उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा कि भइया मुझे भी प्रधानमंत्री आवास दिला दो जिससे मेरी झोपड़ीदार घर में बार-बार आग लगने की घटना न हो और पक्के घर में रह संकू,क्यों कि यह आग लगने की दूसरी घटना थी।

उन्होंने कहा कि में ईश्वर का शुक्र गुजार हूँ कि उस रात मेरी पत्नी राधा जो दोनों आंखों से दृष्टि बाधित है वह दोनों बच्चों के साथ मायके में थी। संजय सिंह ने उपर्युक्त प्रकरण को गंभीरता से लेते हुए उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि जीवनलाल मवासी को शासन से मिलने वाला हर संभव लाभ दिलवाया जाए। इसके साथ ही जनचौपाल कार्यक्रम के दौरान लोगों से सीधा संवाद कर शासन द्वारा चलाई जा रही विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी।

इसके अतिरिक्त श्री कछवाह ने ग्रामीणों द्वारा उठाए गए जल संकट के मुद्दे को भी संज्ञान में लिया। उन्होंने बताया कि जल आपूर्ति बाधित होने का कारण जली हुई मोटर थी, जिसे डलवाकर पुनः चालू करवा दिया गया है, जिससे क्षेत्र में पानी की समस्या का समाधान हो सके। उन्होंने गांव का भृमण करते हुए देखा कि गांव से स्कूल जाने वाले नाले में बच्चों को बरसात के दिनों में आने जाने में आ रही दिक्कतों से निपटे के लिए बरसात के पहले पुलिया निर्माण कराने एवं कुआं से पानी लेकर महिलाओं को चढ़ने उतरने में नाले के कारण आ रही महिलाओं को मुशीबतों से बचने के लिए डोला डलवाकर रास्ता बनाये जाने हेतु मौके में मौजूद सरपंच सरमनियां मवासी से कहा।

इसके साथ ही उन्होंने गांव कीआंगनवाड़ी केंद्र की छपाई, फर्स करवाने सहित प्राथमिक विद्यालय की जर्जर हो चुकी बिल्डिंग को नया भवन विद्यालय भवन बनवाने के लिए सम्बंधित विभागों को पत्र लिखने का अश्वासन प्रदान किया। गांव वालों के आये सवाल पर जो कि पिंडरा से बरहा मवान पहुंच मार्ग खराब हो चुका है पूरी सड़क उखड़ चुकी है के सम्बंध में कहा कि यह सड़क पीडब्लूडी के द्वारा बहुत जल्दी ही बनेगी शासन से मंजूर हो गई है ।कार्यक्रम के इस मौके पर गांवों के ग्रामीणों सहित संजय सिंह कछवाह , सरपंच सरमनियां मवासी, क्राई फैलो आनद, एफीकोर संस्था से मयंक आदि लोग उपस्थित रहे।

"विकसित कृषि संकल्प अभियान" के अंतर्गत सांसद ने किया किसानों से संवाद

मीडिया ऑडीटर, सतना (एजेंसी)। ग्राम पंचायत मांद स्थित श्याम गौशाला में मंगलवार को विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत आयोजित कार्यक्रम में सांसद गणेश सिंह, कमिश्नर बीएस जामोद, कलेक्टर डॉ. सतीश कुमार एस, जिला पंचायत अध्यक्ष राम खेलावन कोल, उपाध्यक्ष सुस्मिता सिंह, दीनदयाल शोध संस्थान के संगठन सचिव अभय महाजन सहित जिले व कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों और अधिकारियों ने किसानों से सीधा संवाद किया।

कार्यक्रम में डीएसआर पद्धति से धान की सीधी बीजाई का प्रदर्शन किया गया, जिसे जिले में पानी और श्रमिकों की कमी को देखते हुए लाभकारी बताया गया। सांसद गणेश सिंह ने किसानों से प्राकृतिक खेती, गौमूत्र से बने जैविक कीटनाशकों के उपयोग और मोटे अनाजों की खेती को बढ़ावा देने की अपील की। उन्होंने कहा कि केंद्र व राज्य सरकार किसानों को लाभ पहुंचाने के लिए अनेक योजनाएं चला रही हैं।

अभय महाजन ने जल संरक्षण पर बल देते हुए कहा कि ग्रामीणों को जल स्रोतों–नदी, नाले, तालाब–का जन सहयोग से संरक्षण करना चाहिए ताकि जल संकट से निपटा जा सके। आयुक्त बीएस जामोद ने वर्षा जल संचयन, समूह आधारित खेती और ड्रोन से कीटनाशक छिड़काव जैसे उपायों की सलाह दी।

कलेक्टर डॉ. सतीश कुमार एस ने गौशाला संचालन को स्व-सहायता समूहों से जोड़ने की सराहना करते हुए इसे प्राकृतिक खाद और खेती की दिशा में सकारात्मक कदम बताया। सीईओ संजना जैन ने किसानों को खेत-तालाब योजना और प्राकृतिक संसाधनों के समुचित उपयोग के लिए प्रेरित किया।

डॉ. एसआरके सिंह (अटारी निदेशक) ने मौसम के अनुकूल और प्राकृतिक खेती को समय की मांग बताया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. हेमराज द्विवेदी (वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केंद्र मझगवां) ने किया और आभार श्रीमती साधना तिवारी ने व्यक्त किया।इस अवसर पर 343 पुरुष किसान और 78 महिला कृषक सहित कुल 421 किसान उपस्थित रहे।

जिलेभर में 2653 किसानों ने लिया भाग

अभियान के अंतर्गत सतना व मैहर जिले के सभी विकासखण्डों की 3-3 ग्राम पंचायतों में भी कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिसमें कुल 2653 किसान एवं 30 जनप्रतिनिधि शामिल हुए। इन कार्यक्रमों में मृदा परीक्षण, बीज उपचार, प्राकृतिक खेती, नैनो यूरिया, संतुलित खाद, जैविक कृषि जैसे विषयों पर विशेषज्ञों ने विस्तार से जानकारी दी और किसानों की समस्याओं के समाधान पर चर्चा की गई।

चंद्रशेखर आजाद पूर्व सैनिक संगठन की बैठक 15 जून को

मीडिया ऑडीटर, सतना (एजेंसी)। चंद्रशेखर आजाद पूर्व सैनिक संगठन सतना के सभी सम्मानित पदाधिकारी एवं सदस्यों को सूचित किया जाता है कि संगठन की विशेष बैठक दिनांक 15 जून 2025 दिन रविवार को सुबह ठीक 11 बजे होटल प्रतिहार (नियर सिविल लाइन चौक) में रखी गई है। सभी से आग्रह है कि समय को ध्यान में रखते हुए ज्यादा से ज्यादा संख्या में मीटिंग में पहुंचे और अपने सुझाव दें। कोई भी गिला शिकवा हो वो भी बताए उसका भी जबाव संगठन के अध्यक्ष श्री सुनील सिंह परिहार जी द्वारा दिया जाएगा।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु 19 जून को आएंगी मध्यप्रदेश : मुयमंत्री डॉ. यादव

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने बताया कि राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु का आगामी 19 जून को मध्यप्रदेश आगमन प्रस्तावित है। राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मु विश्व सिकल सेल दिवस पर बड़वानी जिले की ग्राम पंचायत तालुन में आयोजित कार्यक्रम में शामिल होंगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि प्रदेश में शासकीय सेवकों के स्थानांतरण अब 17 जून तक किए जा सकेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव मंगलवार को मंत्रालय में मंत्रि-परिषद की बैठक प्रारंभ होने के पहले मंत्रीगण से चर्चा कर रहे थे। उन्होंने राज्य सरकार की प्राथमिकताओं के संबंध में मंत्रीगण से विचार विमर्श किया। केंद्र सरकार के 11 वर्ष और राज्य सरकार के डेढ़ वर्ष के कार्यकाल पर होंगे कार्यक्रम मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार के सफल कार्यकाल के 11 वर्ष पूर्ण होने पर मंत्रि-परिषद प्रसन्नता

व्यक्त करती है। सुशासन के संकल्प के प्रति मंत्रि-परिषद प्रधानमंत्री का अभिनंदन का प्रस्ताव पारित करती है। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में अन्नदाता, नारी, युवा और गरीब सहित विभिन्न वर्गों का जीवन बदलने के लिए और उन्हें अधिक से अधिक रोजगार एवं विकास के अवसर उपलब्ध करवाने के लिए कार्य किया जा रहा है। इस अवधि में केंद्र सरकार द्वारा हासिल की गई उपलब्धियों का प्रचार-प्रसार किया जाएगा। सभी मंत्रीगण केंद्र की 11 वर्ष की योजनाओं की उपलब्धियां और मध्यप्रदेश शासन की डेढ़ वर्ष की उपलब्धियां नागरिकों तक पहुंचाएंगे। इस संबंध में संकल्प से सिद्धि अभियान भी संचालित होगा, जिसमें जनप्रतिनिधियों को दायित्व सौंपे जाएंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि गत 5 जून को उज्जैन में स्पिरिचुअल एंड वैलनेस समिट का आयोजन हुआ।

दिल्ली की पूर्व सीएम आतिशी पुलिस हिरासत में

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस ने मंगलवार को पूर्व सीएम आतिशी को हिरासत में ले लिया। वे कालकाजी के भूमिहीन कैंप में झुग्गियों को तोड़े जाने का विरोध कर रही थीं। पूर्व सीएम ने कहा, बीजेपी इन झुग्गियां को तोड़ने वाली है। आज मुझे जेल लेकर जा रही है, क्योंकि मैं इन झुग्गी वालों की आवाज उठा रही हूं। बीजेपी, सीएम रेखा गुप्ता जी आप लोगों को झुग्गी वालों की हाय लगेगी। बीजेपी कभी वापस नहीं आएगी, इन गरीबों की हाय लगेगी।

आप के संयोजक अरविंद केजरीवाल ने एक्स पर कहा, मात्र तीन महीनों में इन्होंने दिल्ली को बर्बाद कर दिया। बीजेपी सरकार पूरी दिल्ली में गरीबों के आशियाने उजाड़ रही है, लोगों को बेघर कर रही है। जब आम आदमी पार्टी गरीबों के साथ खड़ी होती है और उनकी आवाज़ उठाती है, तो हमारे नेताओं को गिरफ्तार कर लिया जाता है।

डीडीए ने पहले ही दे दिया था नोटिस सोमवार को दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए) ने दक्षिण दिल्ली के कालकाजी एक्सटेंशन में भूमिहीन कैंप के सभी निवासियों को एक आधिकारिक नोटिस जारी किया था। हाईकोर्ट के आदेश के बाद जारी इस नोटिस में अवैध झोपड़ियों के खिलाफ बुलडोजर एक्शन के चलते परिसर खाली करने का निर्देश दिया गया था।

नोटिस के अनुसार, निवासियों को तीन दिनों के अंदर स्वेच्छा से मकान-दुकान खाली करने के लिए कहा गया है। नोटिस में कहा गया है कि इसका पालन न करने पर डिमॉलिशन की कार्रवाई की जाएगी। डीडीए ने आगे लिखा कि तोड़फोड़ के दौरान झोपड़ियों के अंदर छोड़ा गया सामान हटा दिया जाएगा और एजेंसी को व्यक्तिगत संपत्ति को किसी भी तरह के नुकसान या क्षति के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाएगा।

पानीपत में 2 फर्जी अस्पताल पकड़े

पानीपत। हरियाणा के पानीपत में 2 फर्जी अस्पतालों का भंडाफोड़ हुआ है। मंगलवार को सीएम फ्लाइंग टीम और स्वास्थ्य विभाग की टीम ने इन अस्पतालों पर रेड मारी। इस दौरान मौके से फर्जी डॉक्टरों और स्टाफ को पकड़ा गया है। जांच में पता चला है कि ये अस्पताल कई महीनों से चल रहे थे। टीम को अस्पतालों में कई मरीज भी मिले, जिनका इलाज चल रहा था। स्वास्थ्य विभाग की टीम ने इन मरीजों को निगरानी में ले लिया है। मौके से बड़ी मात्रा में दवाइयां और अन्य मेडिकल इक्विपमेंट भी बरामद किए गए हैं। इसके अलावा बिल्डिंग में मेडिकल इंस्टीट्यूट भी चल रहा था, जिसमें मोटी फीस लेकर बच्चों को एडमिशन दिया जाता था। जानकारी के अनुसार, स्वास्थ्य विभाग और सीएम फ्लाइंग टीम की यह रेड शहर के बीचों-बीच मॉडल टाउन में चल रहे 2 अस्पतालों पर हो रही है। इनमें एक अस्पताल तो बच्चों का है।

दिल्ली में अपार्टमेंट के सातवें फ्लोर पर आग लगी

नई दिल्ली। द्वारका सेक्टर-13 के शब्द अपार्टमेंट में सातवें फ्लोर पर आग लगने के बाद पिता और दो बच्चे बालकनी से कूद गए। उन्हें अस्पताल ले जाया गया, जहां उनकी मौत हो गई।

दिल्ली के द्वारका सेक्टर-13 स्थित शबद अपार्टमेंट की सातवीं मंजिल के एक फ्लैट में मंगलवार सुबह आग लग गई। फ्लैट के अंदर एक पिता अपने दो बच्चों (एक लड़का-एक लड़की) के साथ फंस गए थे। बचने के लिए 10 साल के दोनों बच्चों ने बालकनी से छलांग लगाई। उनके साथ उनके पिता यश यादव (35) ने भी छलांग लगा दी।

राजा की हत्या के बाद सोनम ट्रेन से इंदौर आई

इंदौर। इंदौर के ट्रांसपोर्ट कारोबारी राजा रघुवंशी (29) हत्याकांड में मंगलवार को नया खुलासा हुआ। पति राजा की हत्या के बाद सोनम रघुवंशी 25 मई को शिलॉन्ग से सिलीगुड़ी के रास्ते ट्रेन से इंदौर पहुंची थी। शिलॉन्ग एसपी विवेक स्येम ने योगेश पाण्डे को बताया कि सोनम इंदौर आने के बाद किराए के कमरे में रुकी थी। सोनम को एक ड्राइवर ने वाराणसी में ड्रॉप किया था, जहां से वह गाजीपुर पहुंची थी। इस बीच, इंदौर में क्राइम ब्रांच और मेघालय पुलिस की टीम आज आरोपी विशाल को लेकर उसके घर पहुंची। वारदात के समय पहने गए कपड़े जब्त किए। क्राइम ब्रांच के एसीपी पूनम चंद्र यादव ने बताया कि राजा रघुवंशी पर पहला वार विशाल ने ही किया था। मेघालय पुलिस सोनम को लेकर पटना एयरपोर्ट से रवाना हो चुकी है। टीम पहले कोलकाता पहुंचेगी फिर गुवाहाटी होते हुए शिलॉन्ग पहुंचेगी। सोनम करीब 6 घंटे तक पटना के थाने में रही, वह टेबल पर सिर रखकर रोती रही। चाय तक नहीं पी। राजा-सोनम की 11 मई को शादी हुई।

21 मई को राजा-सोनम शिलॉन्ग पहुंचे

जयराम बोले- शाह का कश्मीर-मणिपुर में शांति का दावा निराधार

नई दिल्ली। कांग्रेस ने मंगलवार को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के जम्मू-कश्मीर और पूर्वोत्तर में शांति स्थापित करने के दावे को विचित्र बताया। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने कहा- शाह के जम्मू-कश्मीर-मणिपुर में शांति को लेकर किए गए दावे बेतुके और निराधार हैं।

ये दावे वास्तव में उनकी अपनी बड़ी विफलताओं से ध्यान हटाने के लिए किए गए हैं। नरेंद्र मोदी सरकार के 11 साल पूरे होने पर 9 जून को अमित शाह ने एक्स पोस्ट की थी। इसमें लिखा था- राष्ट्रीय सुरक्षा की दिशा में भी मील का पत्थर साबित हुआ है। उन्होंने लिखा था कि देश में नक्सलवाद अपने अंतिम चरण में है, जम्मू-कश्मीर और पूर्वोत्तर में शांति स्थापित हुई है। भारत अब आतंकवादियों के घर में घुसकर आतंकवादी हमलों का जवाब देता है। यह मोदी सरकार के तहत भारत की बदलती तस्वीर को दर्शाता है। मणिपुर अभी भी जल रहा है। यहां कानून-व्यवस्था की स्थिति खराब है। राज्य में राष्ट्रपति शासन पूरी तरह विफल साबित हुआ है। आम लोगों की रोजमर्रा की जिंदगी और आजीविका की बदहाली ने उनमें पीड़ा, निराशा और गुस्सा पैदा किया है। जिसे हर जगह महसूस किया जा सकता है।

चिनाब ब्रिज के निर्माण का श्रेय लेने से इनकार

श्रीनगर। दुनिया के सबसे लंबे चिनाब रेल ब्रिज के निर्माण को लेकर सोशल मीडिया पर इंजीनियर डॉक्टर माधवी लता को लोग बधाई दे रहे हैं। अब इसको लेकर उन्होंने एक लिंक्डइन पोस्ट शेयर किया है। इसमें उन्होंने कहा कि चिनाब ब्रिज के निर्माण का श्रेय मुझे न दें। इसकी प्लानिंग, डिजाइन और निर्माण का सारा श्रेय भारतीय रेलवे और आईएफसीओएनएस को जाता है। इसमें मेरा रोल जिओ टेक्निकल के तौर पर रहा है, जिसका काम ढलान पर नींव के डिजाइन पर काम करना था। माधवी लता ने कहा;- मुझे बेवजह मशहूर न बनाया जाए, क्योंकि यह एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि हजारों लोगों की सामूहिक मेहनत का परिणाम है। मिशन के पीछे महिला, असंभव को संभव बनाया और पुल बनाने के लिए चमत्कार किया जैसे सभी मीडिया कथन निराधार हैं। दरअसल, दरअसल, बिजनेसमैन आनंद महिंद्रा समेत हजारों लोगों ने माधवी लता को लेकर सोशल मीडिया पर पोस्ट लिखकर तारीफ की थी। लोग उन्हें ब्रिज के प्रोजेक्ट पर 17 साल देने के लिए लोग बधाई दे रहे थे।

6 जून को पीएम मोदी ने दुनिया के सबसे

ममता बोलीं- पहलगाम आतंकी हमला केंद्र की लापरवाही का नतीजा

कोलकाता। पश्चिम बंगाल विधानसभा में मंगलवार को सशस्त्र बलों की प्रशंसा करने वाला प्रस्ताव पेश किया गया। इस दौरान सीएम ममता ने केंद्र सरकार पर निशाना साधा। ममता ने कहा- पहलगाम आतंकी हमला केंद्र की लापरवाही का नतीजा था। ममता ने पूछा- आतंकी हमले वाली जगह पर सुरक्षाकर्मी क्यों नदारद थे। ममता ने कहा कि भाजपा सशस्त्र बलों की वीरता का राजनीतिकरण करने की कोशिश कर रही है, भाजपा सरकार को चले जाना चाहिए क्योंकि वह देश के लोगों को सुरक्षा देने में नाकाम है। उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी पर कटाक्ष करते हुए आरोप लगाया कि पीएम मोदी केवल अपने बारे में विज्ञापन देने में बिजी हैं। आतंकवाद का कोई धर्म, जाति या पंथ नहीं होता; हम इसका समर्थन नहीं करते।

आतंकवादियों को सबक सिखाने की जरूरत थी, हम सशस्त्र बलों की बहादुरी को सलाम करते हैं। ममता ने विधानसभा में यह भी कहा कि पहलगाम हमले के बाद पाकिस्तान पर किया की गई एयर स्ट्राइक और ऑपरेशन सिंदूर पीओके (पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर) को वापस लेने का एक अच्छा मौका था।

शरद बोले- कभी नहीं सोचा था एनसीपी टूटेगी

पुणे। शरद गुट की नेशनलिस्ट कांग्रेस पार्टी मंगलवार को अपना 26वां स्थापना दिवस मना रही है। इस मौके पर पुणे में बालगंधर्व ऑडिटोरियम में आयोजित पार्टी के कार्यक्रम में एनसीपी चीफ शरद पवार ने कहा कि मैंने कभी नहीं सोचा था कि एनसीपी में दरार आएगी। शरद ने कहा, 26 सालों के दौरान पार्टी को कुछ चुनौतियों का भी सामना करना पड़ा, लेकिन आप (नेता-कार्यकर्ता) बिना हौसला गंवाए पार्टी को आगे बढ़ाते रहे। हमने कभी नहीं सोचा था कि पार्टी टूट जाएगी, लेकिन ऐसा हुआ। एनसीपी चीफ ने कहा, कुछ लोग दूसरी विचारधाराओं के साथ चले गए, लेकिन जो लोग पार्टी के प्रति वफादार रहे, वह हमारी पार्टी की विचारधारा के कारण ही साथ रहे। पार्टी टूटने की चिंता मत कीजिए, जो बीत गया उसकी चिंता नहीं करनी है। अगर हम एकजुट रहेंगे और लोगों के प्रति अपना समर्पण बनाए रखेंगे, तो कोई दिक्कत नहीं होगी।

दूसरी तरफ, पुणे में उसी कार्यक्रम में एनसीपी-एसपी के महाराष्ट्र अध्यक्ष जयंत पाटिल ने पद छोड़ने के संकेत दिए। उन्होंने शरद पवार के सामने अपने संबोधन में कहा- पवार साहब ने मुझे बहुत मौके दिए। मुझे सात साल के लिए जिम्मेदारी सौंपी गई, लेकिन अब नए चेहरों को मौका देना जरूरी है।

बनारस-नदी में डूबने से जयपुर के 8 युवकों की मौत

टोंक। टोंक की बनास नदी में डूबने से 8 लोगों की मौत हो गई है। तीन युवकों को बचा लिया गया। पुलिस और बचाव दल मौके पर पहुंचा था। मरने वाले सभी लोग जयपुर के रहने वाले थे। ये पिकनिक मनाने गए थे। एसपी विकास सांगवान ने बताया कि हादसा आज (मंगलवार) दोपहर सदर थाना क्षेत्र के कच्चा बांध, पुराना बनास पुलिया पर हुआ। 11 युवक नदी में डूबे थे, 8 की मौत हो गई और तीन को स्थानीय लोगों ने बचा लिया है। जयपुर पुलिस से कॉन्टैक्ट किया गया है। एसपी ने बताया कि ये सभी दोस्त थे। प्रारंभिक जानकारी में सामने आया कि इनमें से कुछ युवक नहाने के लिए नदी में उतरे थे और डूबने लगे। इन्हें बचाने के लिए बाकी दोस्त भी नदी में उतर गए और वे हादसे का शिकार हो गए। सभी की उम्र 25 से 30 साल है।

देश में 6800 कोरोना केस, 68 मौतें

नई दिल्ली। देश में कोरोनावायरस के केस तेजी से बढ़ रहे हैं। एक्टिव केसों की संख्या 6815 पहुंच गई है। बीते 24 घंटे में 324 नए मामले सामने आए हैं। केरल में सबसे ज्यादा 2053 केस हैं। स्वास्थ्य विभाग के अनुसार, कोरोना के नए वैरिएंट्स से 12 राज्यों में 68 मरीजों की मौत हुई है। सोमवार को केरल, दिल्ली और झारखंड में 1-1 मरीज ने जान गंवाई है। महाराष्ट्र में सबसे ज्यादा 18 मौतें हुई हैं। मध्य प्रदेश के ग्वालियर में सोमवार को 3 डॉक्टर समेत 6 नए केस सामने आए। इसके बाद से जिला प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग हाई अलर्ट पर है। एमपी में फिलहाल 43 एक्टिव केस हैं। कोरोना के बढ़ते मामले के बीच पश्चिम बंगाल की सीएम ममता बनर्जी ने सोमवार को राज्य के सभी प्रमुख विभागों के अधिकारियों से बैठक की। ममता ने कहा- उम्मीद है कि महामारी दोबारा न लौटे, लेकिन हमें तैयार रहना होगा। राज्य के सरकारी अस्पतालों में इलाज की पूरी व्यवस्था है, ऐसे में लोगों को घबराने की जरूरत नहीं है। गुजरात- राज्य सरकार ने कहा- हम कोविड से लड़ने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं। अस्पतालों में बेड, वेंटिलेटर और ड्रष्ट बेड की व्यवस्थाएं कर ली हैं। हम अलर्ट पर हैं, किसी भी स्थिति को नियंत्रित कर सकते हैं। स्वास्थ्य मंत्री रुशिकेश पटेल ने बताया कि मौजूदा वैरिएंट ओमिक्रॉन वायरस कोविड परिवार का ही है, लेकिन यह इतना गंभीर नहीं है। केरल- स्वास्थ्य विभाग ने अस्पतालों को कोविड-19 और इन्फ्लूएंजा के लक्षणों वाले मरीजों का इलाज करते समय जून 2023 में जारी की गई कोविड गाइडलाइन पालन करने के निर्देश दिए गए हैं। अस्पतालों में सभी को मास्क लगाना अनिवार्य है। साथ ही जुकाम, खांसी और बुखार जैसे लक्षण वाले मरीजों का कोविड टेस्ट अनिवार्य कर दिया गया है।

6 राज्यों में लू का अलर्ट, बारिश की संभावना नहीं

नई दिल्ली। देश के उत्तरी राज्यों में तेज गर्मी का दौर जारी है। देश के 6 राज्यों के 18 शहरों का तापमान सोमवार को 45 डिग्री के ऊपर रहा। इन राज्यों में राजस्थान, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, दिल्ली और ओडिशा शामिल हैं। राजस्थान का श्रीगंगानगर 47.3 सेल्सियस के साथ देश में सबसे गर्म रहा। दिल्ली-एनसीआर समेत पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश के ज्यादातर जिलों में मंगलवार को भी हीट वेव और तेज गर्मी की चेतावनी है। दिल्ली में आज भी तापमान 45 सेल्सियस के पास जा सकता है।

राज्य में अगले दो दिन के लिए हीट वेव-गर्मी का ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है। मौसम विभाग ने राजस्थान में तेज हीट वेव का रेड अलर्ट जारी किया है। सबसे ज्यादा असर पश्चिमी जिलों जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, पाली, जालोर, सिरोही में है।

हरियाणा में भी सोमवार

शिवसेना यूबीटी-मनसे गठबंधन- संजय राउत बोले-हममें कोई अहंकार नही

मुंबई। शिवसेना यूबीटी और मनसे गठबंधन की चर्चा पर राज्यसभा सांसद संजय राउत ने कहा कि शिवसेना (यूबीटी) एक कदम आगे या पीछे भी बढ़ाने को तैयार है और इसमें कोई राजनीतिक अहंकार नहीं है। संजय ने कहा मराठी मानुस (मराठी भाषी लोगों) के फायदे के लिए और मुंबई पर अपना दावा फिर से सुनिश्चित करने के लिए जो भी संभव होगा, शिवसेना वह सब करेगी। दरअसल, अलग-थलग पड़े चचेरे भाई उद्धव और राज के बयानों ने सुलह की अटकलों को हवा दी है। जिससे यह लगने लगा है कि वे मामूली मुद्दों को नजरअंदाज करके, दो दशक बाद हाथ मिला सकते हैं। राज ठाकरे ने 2006 में शिवसेना से अलग होकर मनसे बनाई थी। महाराष्ट्र में इस साल सितंबर तक निकाय चुनावों होने की संभावना है। 2024 विधानसभा चुनावों में शिवसेना (यूबीटी) और मनसे के खराब प्रदर्शन के चलते दोनों पार्टियों के बीच गठबंधन की चर्चा तेज है। मनसे चीफ राज ठाकरे ने कहा था कि मराठी मानुष के हित में एकजुट होना मुश्किल नहीं है। वहीं उद्धव ने भी कहा था कि वह छोटी-मोटी लड़ाइयों को किनारे रखने तैयार हैं

खड़गे की लोकसभा डिप्टी स्पीकर चुनाव कराने की मांग

नई दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने मंगलवार को पीएम मोदी को लेटर लिखा है। इसमें लोकसभा के डिप्टी स्पीकर (उपाध्यक्ष) के चुनाव की प्रक्रिया शुरू करने को कहा है। स्वतंत्र भारत के इतिहास में पहली बार यह पद लगातार दो लोकसभा कार्यकालों के लिए खाली रहा है। 17वीं लोकसभा के दौरान कोई उपाध्यक्ष नहीं चुना गया था। यह चिंताजनक मिसाल मौजूदा 18 लोकसभा में भी जारी है। यह भारत की लोकतांत्रिक राजनीति के लिए शुभ

संकेत नहीं है और संविधान के प्रावधानों का उल्लंघन करता है। देश में अबतक 14 डिप्टी स्पीकर रह चुके हैं। इतिहास रहा है कि डिप्टी स्पीकर का पद विपक्ष को दिया जाए। जिससे संसद में संतुलन और निष्पक्षता बनी रहे। हालांकि यह कोई संवैधानिक बाध्यता नहीं है। 16वीं लोकसभा (2014) में एनडीए में शामिल रहे अन्नाद्रमुक के थंबीदुरई को यह पद दिया गया था। जबकि 17वीं लोकसभा (2019) में किसी को भी डिप्टी स्पीकर नहीं बनाया गया था। 18वीं लोकसभा (2024) में भी किसी को डिप्टी स्पीकर नहीं बनाया गया है। खड़गे ने लिखा- मैं लोकसभा में उपाध्यक्ष के पद के खाली होने के संबंध में मौजूदा अत्यंत चिंताजनक मामले की ओर आपका ध्यान आकर्षित करने के लिए लिख रहा हूं। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 93 में लोकसभा के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष दोनों के चुनाव का प्रावधान है। संवैधानिक रूप से उपाध्यक्ष, अध्यक्ष के बाद सदन का दूसरा सबसे बड़ा पीठासीन अधिकारी होता है।

संक्षिप्त समाचार

भारत के खिलाफ दूसरे टेस्ट से वापसी कर सकते हैं आर्चर

लंदन (एजेंसी)। इंग्लैंड के तेज गेंदबाज जोफ्रा आर्चर इसी माह 20 जून से भारतीय टीम के खिलाफ शुरु हो रही पांच टेस्ट मैचों की सीरीज से वापसी कर सकते हैं। अंगूठे में हुए फ्रेक्चर के कारण टीम से बाहर चल रहे आर्चर को जल्द ही इससे उबरने की उम्मीद है। आर्चर ने अपना अंतिम टेस्ट चार साल पहले खेला था। इंग्लैंड के राष्ट्रीय चयनकर्ता ल्यूक राइट ने कहा है कि आर्चर दो से छह जुलाई तक एजबस्टन में होने वाले दूसरे टेस्ट से वापसी कर सकते हैं। आर्चर ने बार-बार चोटिल होने के कारण ही साल 2021 से प्रथम श्रेणी क्रिकेट नहीं खेला। इसी कारण हेडिंग्ले में पहले टेस्ट के लिए उन्हें शामिल नहीं किया गया। हाल ही में आईपीएल के दौरान उनके अंगूठे में फ्रेक्चर हो गया था जिससे वह उबरने का प्रयास कर रहे हैं। राइट ने कहा, 'आर्चर काफी अच्छी तरह से अपनी चोट से उबर रहे हैं पर उनके लिए अच्छा ये है कि वह कुछ प्रथम श्रेणी मैच खेलकर लय हासिल करें। ससेक्स की दूसरी टीम का हिस्सा बनें और डरहम के खिलाफ ससेक्स के लिए खेलें। सब कुछ ठीक रहा तो वह दूसरे टेस्ट के लिए उपलब्ध हो सकेंगे।' अंगूठे की चोट के कारण ही वह 29 मई से तीन जून के बीच वेस्टइंडीज के खिलाफ हुई एकदिवसीय सीरीज से भी बाहर रहे थे। आर्चर और तेज गेंदबाज मार्क वुड के नहीं होने से टीम की गेंदबाजी कमजोर हुई है। वुड मार्च में लगी घुटने की चोट के बाद से ही खेल से दूर हैं।

इंग्लैंड के तेज गेंदबाज ब्राइडन अपने चयन को सही साबित करने उतरेंगे

लंदन (एजेंसी)। भारत के खिलाफ टेस्ट सीरीज के लिए इंग्लैंड की टीम में शामिल तेज गेंदबाज ब्राइडन कार्स का लक्ष्य सीरीज में बेहतर प्रदर्शन कर अपने चयन को सही साबित करना रहेगा। ब्राइडन के अनुसार उनका राष्ट्रीय टीम में पहुंचने तक का सफर बेहद दर्दनाक रहा है। उन्होंने कहा कि एक समय ऐसा भी था जब अपने पैर के दर्द से उबरने के लिए वह अपना अंगूठा कटवाने की भी सोच रहे थे। इस समस्या के कारण वह महीनों तक नहीं खेल पाये थे। ब्राइडन ने अब तक केवल पांच टेस्ट मैच में 27 विकेट लिए हैं और वह इंग्लैंड के सबसे उभरते हुए तेज गेंदबाजों में से एक हैं। इस तेज गेंदबाज के बाएं पैर के अंगूठे में गेंदबाजी करते हुए चोट लग गयी थी। इस साल की शुरुआत में इंग्लैंड के भारत दौरे के दौरान यह समस्या सामने आई थी जिसके कारण उन्हें चैंपियंस ट्रॉफी से भी बाहर होना पड़ा और तीन महीने तक वह मैदान से दूर रहे। इस तेज गेंदबाज ने कहा, ''एक समय मैं यह सोचकर बिस्तर पर जा रहा था कि मुझे लगता है कि मैं वास्तव में ऐसा कर सकता हूं। तब मुझे लगता था कि मैं अपने पैर के अंगूठे को कटवाकर दर्द से राहत पा सकता हूं पर फिर डॉक्टरों ने कहा कि आपको संतुलन के लिए इसकी जरूरत है, इसलिए ये विचार छोड़ दे।'' ब्राइडन अब ठीक हो गये हैं और भारत के खिलाफ सीरीज की तैयारी में लगे हैं।

पनेसर ने शुभमन को हैरी ब्रूक से कहीं बेहतर बल्लेबाज बताया

लंदन (एजेंसी)। इंग्लैंड के पूर्व क्रिकेटर मॉन्टी पनेसर ने भारतीय क्रिकेट टीम के नये कप्तान शुभमन गिल की जमकर प्रशंसा की है। पनेसर का मानना है कि शुभमन इंग्लैंड के सीमित ओवरों के कप्तान हैरी ब्रूक से कहीं बेहतर हैं। साथ ही कहा कि टेस्ट क्रिकेट में उनका भविष्य काफी अच्छा है। पनेसर ने कहा कि शुभमन का टेस्ट क्रिकेट में भविष्य बेहतर है और मुझे उम्मीद है कि कप्तानी मिलने के बाद उसका प्रदर्शन और बेहतर होगा। शुभमन का टेस्ट रिकॉर्ड उतना अच्छा नहीं है पर उनकी कप्तानी अच्छी रहना तय है। वहीं इस दिग्गज स्पिनर के अनुसार अगर विराट कोहली और जो रुट में तुलना करें तो विराट अधिक अच्छे हैं। उन्होंने कहा कि कोहली की मौजूदगी, प्रभाव और व्यक्तित्व को का प्रभाव रुट से कहीं अधिक है। पनेसर ने कहा कि अगर बोला जाये तो मैं विराट कोहली को चुनूंगा। वह बेहतर बल्लेबाज़ हैं। वह व्यक्तित्व और आभा के कारण अन्य सभी से आगे है। वहीं पनेसर ने जेम्स एंडरसन को भारत के जसप्रीत बुमराह से कही बेहतर टेस्ट गेंदबाज़ बताया। उन्होंने कहा कि एंडरसन मेरी राय में बेहतर हैं। उन्होंने हर हालातों में शानदार प्रदर्शन किया है। एंडरसन ने 188 टेस्ट में 704 विकेट लिए जबकि बुमराह अपने करियर में बार बार चोटिल होने से कई बार बाहर हुए हैं। पनेसर ने सचिन तेंदुलकर को भारत का सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज़ बताया। उन्होंने कहा कि यह सभी जानते हैं। सचिन ने सुनील गावस्कर के स्तर को और ऊंचा किया। वह भारत के महानतम बल्लेबाज हैं। जब उनसे पूछा गया कि क्या कोई सचिन की विरासत को आगे ले गया, तो पनेसर ने कहा कि कोई भी पूरी तरह से उनकी बराबरी नहीं कर सका पर महेन्द्र सिंह धोनी और विराट कोहली उनके सबसे करीब पहुंचे। उन्होंने कहा कि केवल धोनी और कोहली ही लोकप्रियता, शांत स्वभाव और प्रतिभा के मामले में सचिन की तरह नजर आये।

सुदर्शन को तीसरे नंबर पर उतारे भारतीय टीम : लार्क

सिडनी (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान माइकल क्लार्क ने कहा है कि आईपीएल में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज साई सुदर्शन को भारतीय टीम तीसरे नंबर पर उतारे। सुदर्शन ने आईपीएल के 18 वें सत्र में 15 मैचों में सबसे ज्यादा 759 रन बनाए हैं। इसी के बाद सुदर्शन को इंग्लैंड के लिए भारतीय टीम में जगह मिली थी। वहीं भारतीय टेस्ट कप्तान शुभमन गिल इस सीरीज में विराट कोहली की जगह पर चौथे नंबर पर बल्लेबाजी करते हुए नजर आ सकते हैं।

आईपीएल से करोड़ों कमाने वाले अनकैप्ड खिलाड़ी घरेलू क्रिकेट की उपेक्षा कर रहे - गावस्कर

मुम्बई (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान सुनील गावस्कर ने आईपीएल में खेलने वाले अनकैप्ड खिलाड़ियों पर निशाना साधा है। गावसकर के अनुसार इन युवाओं ने इस लीग से कुछ ही समय के अंदर करोड़ों रुपये कमा लिए हैं। ऐसे में इनका पूरा ध्यान लीग पर है और ये घरेलू क्रिकेट के शीर्ष टूर्नामेंट रणजी ट्रॉफी की भी उपेक्षा करने लगे हैं। गावस्कर ने कहा कि इन खिलाड़ियों की किस्मत अच्छी है जिससे इन्हें करोड़ों की कमाई हुई है हालांकि ये उसके योग्य नहीं हैं। गावस्कर ने अपने लेख में आईपीएल 2025 में करोड़ों रुपये कमाने वाले अनकैप्ड खिलाड़ियों जैसे रसिक डार, नमन धीर, नेहाल वढेरा, अब्दुल समद, अंशुल कंबोज, प्रियांश आर्य और आशुतोष शर्मा का जिक्र करते हुए कहा कि इनमें से अधिकतर ने भारतीय टीम की ओर से विशेष प्रदर्शन का कोई प्रयास नहीं किया है। उन्होंने कहा कि बाजार के दबाव के चलते बोली लगती है कहना ठीक नहीं है। उन्होंने कहा कि कि बीसीसीआई और राज्य क्रिकेट संघों को रणजी ट्रॉफी जैसे बड़े टूर्नामेंट में लगातार अच्छा प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को अधिक प्रोत्साहन देना चाहिए। गावस्कर ने रणजी खिलाड़ियों की मैच फीस बढ़ाए जाने को सही दिशा में एक कदम बताया पर साथ ही ये भी कहा है कि यदि कोई स्लैब सिस्टम लाया जाए जिसमें ज्यादा मैच खेलने वाले को ज्यादा पैसे मिलें, तो इससे रणजी ट्रॉफी में भागीदारी बढ़ेगी और गंभीरता भी आएगी। गावस्कर ने गुजरात के पूर्व कप्तान प्रियांक पांचाल की प्रशंसा करते हुए कहा कि उन्होंने लगभग दो दशक तक अपनी टीम से खेला, रणजी ट्रॉफी जीतने वाली टीम के सदस्य भी रहे पर उन्हें भारतीय टीम से खेलने का अवसर नहीं मिल पाना निराशाजनक रहा। उन्होंने पांचाल के समर्पण की प्रशंसा करते हुए कहा है कि ऐसे खिलाड़ियों को भी बराबरी का सम्मान और अवसर मिलना चाहिए। इससे एक बार फिर आईपीएल और घरेल क्रिकेट में से किसे अधिक महत्व दिया जाये उसपर चर्चाएं शुरु हो गयी हैं।

शेफर्ड और होल्डर ने आदिल के एक ही ओवर में बनाये 31 रन

लंदन (एजेंसी)। इंग्लैंड ने वेस्टइंडीज के खिलाफ दूसरे टी-20 मैच को चार विकेट से जीत लिया। वेस्टइंडीज ने इस मैच में पहले बल्लेबाजी करते हुए छह विकेट पर 196 रन बनाये। इसे बाद इंग्लैंड ने ये लक्ष्य छह विकेट के नुकसान पर हासिल कर लिया। इंग्लैंड के लिए इस मैच में ल्यूक वुड ने शानदार गेंदबाजी करते हुए दो विकेट लिए। वहीं आदिल राशिद बेहद महंगे साबित हुए। राशिद ने एक ही ओवर में 31 रन दे दिये। यह टी-20 में किसी भी इंग्लैंड के गेंदबाज द्वारा किया गया दूसरा सबसे महंगा ओवर बन गया, इससे पहले 2007 टी20 विश्व कप के दौरान स्टुअर्ट ब्रॉड के ओवर में युवराज सिंह से छह छक्के लगाकर 36 रन बनाये थे। राशिद ने पारी का 19 ओवर जेसन होल्डर और रोमारियो शेफर्ड को किया। उनके ओवर की पहली ही गेंद पर होल्डर ने छक्का लगा दिया। इसके बाद दूसरी गेंद पर भी छह रन गये। वहीं तीसरी गेंद पर लॉन्ग-ऑन पर छक्का लगा। चौथी गेंद पर होल्डर ने एक रन बनाया। इसके बाद शेफर्ड ने पांचवीं गेंद और छठी गेंद पर छक्का लगाकर ओवर समाप्त किया। इस मुकाबले में इंग्लैंड ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी की। एविन लुईस जल्दी आउट हो गए पर शाई होप और जॉनसन चार्ल्स ने 90 रन बनाकर पारी संभाली। होप 49 रन बनाकर आउट हुए। रोवमैन पॉवेल और जेसन होल्डर ने वेस्टइंडीज को 20 ओवर में छह विकेट पर 196 रनों तक पहुंचा दिया। इंग्लैंड की ओर से टॉम बैंटन ने 30 रन और जैकब बेथेल ने 26 रन बनाये। दूसरे मैच जीतने के साथ ही इंग्लैंड को तीन मैच की सीरीज में 2-0 की बढ़त हासिल कर ली है।

विराट, रोहित की जगह लेने भारतीय टीम के पास पर्याप्त प्रतिभाएं : पोंटिंग

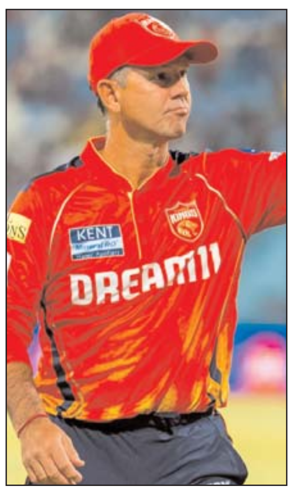

मुंबई (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान रिकी पोंटिंग ने कहा कि कहा है कि इंग्लैंड के खिलाफ शुरु हो रही पांच टेस्ट मैचों की सीरीज में भारतीय टीम को अनुभवी बल्लेबाजों रोहित शर्मा और विराट कोहली की कमी महसूस होगी पर इनकी जगह लेने के लिए उसके पास पर्याप्त प्रतिभाएं हैं। पोंटिंग के अनुसार दिग्गज बल्लेबाजों की जगह लेना हमेशा ही कठिन होता है पर भारतीय टीम के पास पर्याप्त प्रतिभाएं हैं जो इस चुनौती को अच्छे से सामना कर सकती हैं। भारत और इंग्लैंड के बीच 20 जून से लीड्स में पहला टेस्ट शुरु होगा। ये सीरीज अगस्त 2025 तक चलेगी और प्रशंसकों व खिलाड़ियों के लिए इसमें एक भावनात्मक चुनौती भी रहेगी। पूर्व कप्तान के अनुसार रोहित और विराट के टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लेने के बाद नये कप्तान शुभमन गिल की टीम को इंग्लैंड के कठिन हालातों में अपने को साबित करना रहेगा। इस दोरे में ध्रुव जुरेल, करुण नायर, अभिमन्यु ईस्वरन और साई सुदर्शन जैसे प्रतिभाशाली युवाओं के पासा अपने को साबित करने का अवसर है। पोंटिंग ने कहा कि इतने लंबे समय तक खेलने वाले खिलाड़ियों की जगह लेना हमेशा ही मुश्किल रहा है पर इसमें अगर कोई टीम तेज से ऐसा कर सकती है तो वह भारतीय टीम है, क्योंकि उनके पास अभी काफी युवा प्रतिभाएं हैं। उन्होंने कहा कि मैंने 10 साल तक आईपीएल में यह देखा है। इससे निकले यशस्वी जायसवाल जैसे खिलाड़ी अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में आते ही धूम मचा रहे हैं। भारत स्किल को आसानी से बदल सकता है हालांकि अनुभव की कमी रहेगी। शुभमन जैसे युवा कप्तान के साथ, केएल राहुल और जसप्रीत बुमराह जैसे अनुभवी खिलाड़ी भी हैं जिनका लाभ टीम को मिलेगा। पोंटिंग ने कहा कि पुनर्निर्माण के दौर का सामना भारतीय टीम बेहतर तरीके से कर सकती है। रोहित और विराट ने पिछले माह ही अचानक टेस्ट क्रिकेट से संन्यास की घोषणा कर दी थी।

वसीम अकरम की मूर्ति को लेकर खड़ा हुआ विवाद

हैदराबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान के हैदराबाद शहर स्थित नियाज स्टेडियम में स्थापित दिग्गज तेज गेंदबाज वसीम अकरम की मूर्ति को लेकर विवाद खड़ा हो गया है। हालांकि, मूर्ति का अनावरण अप्रैल 2025 में होना प्रस्तावित था, लेकिन इससे पहले ही इसकी तस्वीरें सोशल मीडिया पर वायरल हो गईं, जिसके बाद प्रशंसकों ने मूर्ति के चेहरे की बनावट पर सवाल उठाते हुए जमकर आलोचना की। मूर्ति में अकरम को उनके विशिष्ट गेंदबाजी एक्शन में दिखाया गया है, जिसमें वह 1999 के आईसीसी पुरुष क्रिकेट विश्व कप की पाकिस्तान टीम की आधिकारिक जर्सी पहने नजर आ रहे हैं। वायरल हुई तस्वीरों में मूर्ति का चेहरा वसीम अकरम से मेल नहीं खा रहा, जिस वजह से यह इंटरनेट पर मीम्स और मजाक का

विषय बन गया है। एक यूजर ने एक्स (पूर्व ट्विटर) पर कमेंट करते हुए लिखा कि ऐसा लगता है मानो वसीम अकरम को सिल्वेस्टर स्टेलोन के चेहरे के आधार पर गढ़ा गया हो। वहीं, एक अन्य यूजर ने अकरम की पाकिस्तान सुपर लीग के दौरान की एक तस्वीर शेयर की, जिसमें वे अपनी टीम के खराब प्रदर्शन से खिन्न दिख रहे हैं, और मजाक में लिखा, वसीम अकरम अभी। कुछ सोशल मीडिया यूजर्स ने इस मूर्ति को अपडेट कराने की सलाह तक दे डाली। वसीम अकरम का क्रिकेट में योगदान बेहद अहम रहा है। उन्होंने 1984 से 2003 के बीच पाकिस्तान की राष्ट्रीय टीम का प्रतिनिधित्व किया और अपने करियर में 414 टेस्ट और 502 वनडे विकेट चटकाए। उन्हें न केवल पाकिस्तान का बल्कि विश्व क्रिकेट का सर्वश्रेष्ठ बाएं हाथ का तेज गेंदबाज माना जाता है। 1992 के विश्व कप में उनकी भूमिका निर्णायक रही थी, जहां उन्होंने 10 मैचों में 18 विकेट लेकर पाकिस्तान को पहली और अब तक की एकमात्र वनडे विश्व कप ट्रॉफी जिताने में बड़ी भूमिका निभाई थी। इसके अलावा, उन्होंने 1999 में पाकिस्तान को विश्व कप फाइनल तक पहुंचाया, हालांकि वह खिताब जीतने में असफल रहे। मगर जिस मूर्ति के जरिए उनकी उपलब्धियों को सम्मानित किया जाना था, वही अब आलोचना का विषय बन गई है।

इस बार दक्षिण अफ्रीकी टीम के पास डब्लूटीसी फाइनल जीतने का अवसर - डिविलियर्स

जोहांसबर्ग (एजेंसी)। दक्षिण अफ्रीका के पूर्व कप्तान एबी डिविलियर्स ने कहा है कि इस बार उनकी टीम के पास विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्लूटीसी) फाइनल जीतने का अच्छा अवसर है। डब्लूटीसी फाइनल 11 जून से लॉर्ड्स में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ होगा। इसके लिए दोनो ही टीमें अभी तैयारियों में लगी हैं।ऑस्ट्रेलियाई टीम गत चैंपियन है इसी कारण वह अपने खिताब को बरकरर रखना चाहेगी। वहीं दक्षिण अफ्रीकी टीम पहली बार फाननल में पहुंचकर उत्साहित है।

डिविलियर्स ने कहा कि यह दक्षिण अफ्रीका के क्रिकेट के लिए एक बहुत खास पल है। पूरा देश हमारी टीम के साथ खड़ा होगा। उम्मीद है कि हम जीतने में सफल रहेंगे। डिविलियर्स ने कहा कि इस मैच के लिए दक्षिण अफ्रीका की टीम संतुलित है और ऑस्ट्रेलिया को हराने की पूरी क्षमता उसके अंदर है। उन्होंने कहा कि मैं इस चुनौती के लिए तैयार हूं। यह एक संतुलित टीम है और मुझे पूरा भरोसा है कि हम ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ उलटफेर करने में सक्षम हैं। साथ ही कहा कि मैं ये इसलिए कह रहा हूं क्योंकि वे स्पष्ट रूप से इस आईसीसी विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप फाइनल को जीतने के प्रबल दावेदार है। वहीं ऑस्ट्रेलिया के सीमित ओवरों के पूर्व कप्तान आरोन फिंच का मानना है कि आक्रामक बल्लेबाज ट्रेविस हेड से उन्हें फाइनल में एक और बेहतरीन पारी की उम्मीद है। हेड ने पिछले बार फाइनल में भी काफी अच्छी पारी खेली थी। फिंच ने कहा कि हेड ने अब के अपने प्रदर्शन से साबित किया है कि वह कम समय में मैच को विरोधी टीम से छीन सकते हैं। उन्होंने कहा कि ऑस्ट्रेलिया के अधिकतर खिलाड़ी पहले से ही इंग्लैंड में है और टीम को इसका भी लाभ होगा। उन्होंने कहा कि बल्लेबाजी क्रम तैयार होगा। हाल में कई खिलाड़ी आईपीएल से लौटे हैं। जिससे भी उनका बल्लेबाज का अभ्यास बेहतर हुआ है।

ऋषभ और वेंकटेश ही नहीं , नटराज भी मोटी रकम मिलने के बाद फ्लाप रहे

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल के इस सत्र में लखनऊ सुपर जायंट्स के कप्तान और विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत और कोलकाता नाइट राइडर्स के बल्लेबाज वेंकटेश अय्यर खराब प्रदर्शन के लिए सबसे निशाने पर रहे हैं। इसका कारण है कि करोड़ों की राशि मिलने के बाद भी ये रन नहीं बना पाये। वहीं एक खिलाड़ी ऐसा है जिसपर किसी का ध्यान नहीं गया क्योंकि उसने केवल 3 ओवर फेंके हैं और उसे करीब 11 करोड़ मिले हैं। इसके बाद भी वह आलोचना से बचा हुआ है। ये खिलाड़ी तेज गेंदबाज टी नटराज है। ऋषभ आईपीएल के सबसे महंगे खिलाड़ी बने, जिन्हें लखनऊ सुपर जायंट्स से 27 करोड़ मिले। वहीं, वेंकटेश अय्यर इस लीग के इतिहास के चौथे सबसे ज्यादा कीमत पर बिकने वाले खिलाड़ी थे। उनको कोलकाता नाइट राइडर्स ने 23 करोड़ 75 लाख रुपये में खरीदा था। ऋषभने 14 मैचों में 269 रन बनाए और वेंकटेश अय्यर ने 11 मैचों की 7 पारियों में 142 रन बना सके। वहीं नटराजन को दिल्ली कैपिटल्स ने 10.75 करोड़ रुपये में नीलामी में खरीदा था पर इस गेंदबाज को केवल दो मैचों में खेलने का ही अवसर मिला। इनमें से भी एक मैच में गेंदबाजी की जरूरत नहीं पड़ी, क्योंकि मैच बारिश में धुल गया था। एक मैच में गेंदबाजी आई, जिसमें अपने कोटे के चार ओवरों में से सिर्फ 3 ओवर किए और 49 रन दिए। इसमें भी उसे कोई विकेट भी नहीं मिला। इस तरह नटराज दिल्ली कैपिटल्स के सबसे महंगे गेंदबाज रहे।

डब्ल्यूटीसी फाइनल खेलने के लिए बेहद उत्साहित है स्टीव स्मिथ

सिडनी (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के दिग्गज बल्लेबाज स्टीव स्मिथ ने खुलासा किया है कि वह वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) फाइनल खेलने के लिए बेहद उत्साहित हैं। उन्होंने बताया कि दो महीने तक उन्होंने न्यूयॉर्क में छुट्टियां बिताईं और इस दौरान उन्होंने एक बार भी बल्ला हाथ में नहीं लिया। स्मिथ ने कहा कि आमतौर पर वह घर में एक बल्ला रखते हैं और कभी-कभी शैडो बैटिंग भी कर लेते हैं, लेकिन इस बार उन्होंने पूरी तरह क्रिकेट से ब्रेक लेने का निर्णय लिया। स्मिथ ने बताया, मैंने यहां (डब्ल्यूटीसी फाइनल की तैयारी के कैंप में) आने से पहले एक बार भी बल्ला नहीं छुआ। पहली बार बैट पकड़ना वाकई में अच्छा लगा। आमतौर पर यह थोड़ा अजीब लगता है, लेकिन मैं जल्दी लय में लौट आया। दोनों अभ्यास सत्र शानदार रहे और सब कुछ अपने आप क्लिक करता चला गया। दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ होने वाले वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल के लिए स्मिथ अब पूरी तरह तैयार हैं और उनका आत्मविश्वास सातवें आसमान पर है। उन्होंने यह भी बताया कि वे शारीरिक रूप से पहले से बेहतर स्थिति में हैं। स्मिथ ने कहा, मैं 2014 के बाद पहली बार खुद को इतना फिट महसूस कर रहा हूं। मेरे कूल्हे एकदम ठीक हैं, मैं बेहतर तरीके से झुक सकता हूं, जो स्लिप में फील्डिंग करते समय मदद करेगा। यह शायद मेरी अब तक की सबसे अच्छी शारीरिक स्थिति है। स्मिथ के इस बयान से यह साफ है कि उन्होंने न सिर्फ मानसिक रूप से खुद को तरोताजा किया है, बल्कि शारीरिक रूप से भी खुद को नई ऊंचाई पर पहुंचाया है। अब यह देखना दिलचस्प होगा कि मैदान पर वापसी के साथ वे अपनी बल्लेबाजी से क्या कमाल दिखाते हैं। मालूम हो कि स्मिथ काफी समय से क्रिकेट से दूर थे और इस दौरान उन्होंने जानबूझकर बल्ला तक नहीं उठाया। चैंपियंस ट्रॉफी में ऑस्ट्रेलिया के सेमीफाइनल से बाहर होने के बाद स्मिथ ने वनडे क्रिकेट से संन्यास की घोषणा कर दी थी और इसके बाद से वे पूरी तरह क्रिकेट से दूर रहे।

डबल्यूटीसी फाइनल में स्मिथ और रबाडा के बीच होगा कड़ा मुकाबला

लंदन (ईएमएस)। ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका के बीच लॉर्ड्स में होने वाले आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डबल्यूटीसी) के फाइनल में ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज स्टीव स्मिथ और दक्षिण अफ्रीकी तेज गेंदबाज कैगिसो रबाडा के बीच कड़ा संघर्ष होने की संभावना है। स्मिथ जहां बड़ा स्कोर बनाने उतरेंगे वहीं रबाडा की नजरें उनके विकेट पर रहेंगी। अब तक इन दोनो के बीच 15 पारियों में टक्कर हुई है। इस दौरान स्मिथ ने 262 गेंद में 128 रन बनाये हैं। वहीं रबाडा ने उन्हें चार बार आउट किया है। रबाडा के खिलाफ स्मिथ का स्ट्राइक रेट 32.00 रहा है। इस दौरान स्मिथ ने 16 चौके और दो छक्के लगाये हैं। वहीं लॉर्ड्स की बात करें तो इसमें रबाडा का प्रदर्शन अच्छा रहा है। उनका औसत 19.38 है, जो फाइनल में खेलने वाले सभी गेंदबाजों में सर्वश्रेष्ठ है)।

कमिश्नर ने वीडियो कान्फ्रेंसिंग से की आपदा प्रबंधन की समीक्षा

आपदा प्रबंधन से जुड़ी महत्वपूर्ण सूचनाएं तत्काल दें

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कमिश्नर कार्यालय में वीडियो कान्फ्रेंसिंग से रीवा संभाग के कमिश्नर बीएस जामोद ने बाणसागर परियोजना से जुड़े जिलों में बाढ़ की स्थिति में राहत एवं बचाव तैयारियों की समीक्षा की। कमिश्नर ने कहा कि सभी जिलों के अधिकारी बाढ़ संभावित क्षेत्रों का दौरा करके 25 जून तक राहत एवं बचाव कार्य से जुड़ी तैयारियां पूरी कर लें। बाढ़ की स्थिति में राहत शिविर लगाने के लिये स्थान के चयन से लेकर बचाव दल, राहत के उपकरण, दवाओं, खाद्य सामग्री की आपूर्ति तथा बिजली एवं पानी की व्यवस्था से जुड़ी कार्यवाहियां सुनिश्चित करें। बाढ़ पर नियंत्रण के लिये समय पर सूचनाओं का आदान-प्रदान आवश्यक है। जिला तथा तहसील स्तर पर बाढ़ नियंत्रण केन्द्र स्थापित करके इनमें प्रशिक्षित कर्मचारी तैनात कर दें। सूचनाओं का एक दूसरे को लगातार आदान-प्रदान करते रहें। बांधों से पानी छोड़े जाने अथवा लगातार वर्षा की स्थिति में सभी जिले सतत संपर्क में रहें। बाढ़ से जुड़ी महत्वपूर्ण सूचनाएं तत्काल दें।

कमिश्नर ने कहा कि बाणसागर बांध की अप स्ट्रीम तथा डाउन स्ट्रीम में बाढ़ संभावित क्षेत्र चिन्हांकित हैं। सभी एसडीएम अपने क्षेत्र के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का दौरा कर लें। बाढ़ से बचाव के लिये व्हाट्सएप ग्रुप बनाकर विभिन्न विभागों के संबंधित अधिकारियों को जोड़ें। इस ग्रुप में गांव के कुछ व्यक्तियों तथा पटवारी, ग्राम पंचायत सचिव, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता जैसे मैदानी कर्मचारियों को भी शामिल करें। समय पर सही सूचना मिलने से राहत और बचाव कार्य में आसानी होगी। बाणसागर बांध की डाउन स्ट्रीम में सीधी तथा सिंगरौली जिले के 129 गांव बाढ़ संभावित हैं। आपदा प्रबंधन के लिये संबंधित विभागों के अधिकारियों को निर्देश पत्र जारी कर दिये गये हैं। इनके अनुरूप कार्यवाही करें। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों के लिए पर्याप्त दवाएं भण्डारित करा दें।

बैठक में आईजी रीवा रेंज गौरव राजपूत ने कहा कि बाढ़ से बचाव के लिए समय रहते तैयारियां कर ली गईं तो कोई परेशानी नहीं होगी। बाणसागर बांध में अधिकत जल स्तर तक पानी आने से पहले ही उसे नियंत्रित रूप से छोड़ना शुरू कर दें। एनडीआरएफ और एसडीआरएफ की टीम के सदस्यों तथा होमगार्ड्स एवं राहत और बचाव से जुड़े अधिकारियों के मोबाइल नम्बर व्हाट्सएप ग्रुप में अपडेट कर लें। बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में नाव के साथ-साथ पर्याप्त संख्या में लाइफ जैकेट भी भण्डारित कराएं। जल संसाधन विभाग, राजस्व विभाग तथा पुलिस विभाग के अधिकारी तत्परता से बाढ़ संबंधी सूचनाओं का आदान-प्रदान करें। सभी कंट्रोल रूम एक दूसरे की सूचनाएं साझा करें।

बैठक में मुख्य अभियंता गंगा कछार अशोक डेहरिया ने बाणसागर बांध के संबंध में जानकारी देते हुए बताया कि बांध के जल भराव क्षेत्र में 79 गांव आंशिक रूप से डूब में आते हैं। इन गांवों में ही बाढ़ की समस्या होती है। बांध के पूरे क्षेत्र को 6 जोन में बांट कर जोनल अधिकारी तैनात कर दिये गये हैं। कटनी जिले के 27 गांव तथा उमरिया जिले के 18 गांव बांध के बैक वाटर से प्रभावित होते हैं। बैठक में लोक निर्माण विभाग को अति वर्षा की स्थिति में जलमग्न होने वाले पुल-पुलियों में संकेतक तथा बैरियर लगाने के निर्देश दिये गये। बैठक में अपर कमिश्नर नीतू माथुर, चीफ इंजीनियर पीडब्ल्यूडी संजय खाण्डे, कार्यपालन यंत्री मनोज तिवारी, कार्यपालन यंत्री आरपीएस कंवर, क्षेत्रीय संचालक स्वास्थ्य डॉ एमएल गुप्ता, उपायुक्त श्रेयस गोखले, संयुक्त आयुक्त दिव्या त्रिपाठी तथा संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे। बैठक में वर्चुअल माध्यम से आईजी शहडोल, डीआईजी शहडोल, कलेक्टर शहडोल, कलेक्टर सीधी, कलेक्टर मैहर तथा विभिन्न जिलों के पुलिस, राजस्व एवं जल संसाधन विभाग के अधिकारी शामिल हुए।

हाई-वोल्टेज लाइन की चपेट में आया डंफर, चालक की मौत

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना जिले की बिरसिंहपुर तहसील के रिमारी गांव में मंगलवार देर रात बड़ा हादसा हो गया। एक डंफर 11 हजार वोल्ट की बिजली लाइन की चपेट में आ गया, जिससे उसमें आग लग गई। हादसे में डंफर चालक की मौके पर ही मौत हो गई।

जानकारी के मुताबिक डंफर निर्माणाधीन घर में मिट्टी गिराने आया था। इसी दौरान वह घर के ऊपर से गुजर रही 11 हजार केवीए की लाइन के संपर्क में आ गया। हादसा रात 11 बजे के करीब हुआ।

जैसे ही डंफर ने मिट्टी गिराने के लिए ट्रॉली को ऊपर किया तभी उसकी बास्केट का ऊपरी हिस्सा 11 हजार केवीए की लाइन के संपर्क में आ गया। और तुरंत ही उसमें आग लग गई। बताया गया कि हादसे के करीब आधे घंटे बाद तक न तो बिजली विभाग का कोई कर्मचारी पहुंचा, न ही फायर ब्रिगेड और पुलिस मौके पर आई।

आग की चपेट में आने से डंफर चालक की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। मृतक डंफर रामराज सिंह बिहरा का बताया जा रहा है। स्थानीय लोगों का कहना है कि अगर समय पर विभागीय टीमें पहुंचती, तो शायद जान बच सकती थी। ग्रामीणों ने बिजली विभाग पर लापरवाही का आरोप लगाया है।

सतना में अवैध शराब की बड़ी खेप पकड़ी, एक आरोपी गिरफ्तार

बोलेरो से 117 लीटर शराब जब्त, दूसरा आरोपी फरार

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना जिले की कोठी थाना पुलिस ने सोमवार रात अवैध शराब की बड़ी खेप पकड़ी है। मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने एक बोलेरो वाहन से 117 लीटर अवैध देसी और अंग्रेजी शराब बरामद की। पुलिस ने मौके से एक आरोपी को गिरफ्तार किया है।

थाना प्रभारी गिरजाशंकर बाजपेयी के नेतृत्व में पुलिस टीम ने झाली क्षेत्र से आ रही सफेद बोलेरो (एमपी 19 सीबी 1035) को रोका। वाहन में खाकी रंग के 13 कार्टून में शराब भरी थी। पुलिस ने कुल 10 लाख 87 हजार 800 रुपए का माल जब्त किया है।

पुलिस ने वाहन चालक दिलीप सिंह उर्फ दिप्पू (37) को गिरफ्तार किया है। वह लोखरिहा, थाना कोठी का रहने वाला है। उसके साथी अतुल शर्मा अंधेरे का फायदा उठाकर मौके से फरार हो गया। अतुल रनेही, थाना कोठी का निवासी है।

गिरफ्तार आरोपी दिलीप को न्यायालय में पेश किया गया। वहां से उसे न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया गया है। पुलिस फरार आरोपी अतुल शर्मा की तलाश कर रही है।

कृषि वैज्ञानिक विकसित कृषि संकल्प अभियान में दे रहे उन्नत खेती की जानकारी

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले के सभी विकासखण्डों में विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत लगातार शिविर लगाए जा रहे हैं। इन शिविरों में कृषि विभाग के अधिकारी और कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक किसानों को उन्नत खेती का मंत्र दे रहे हैं। शिविरों में किसानों को कृषि, पशुपालन तथा मछली पालन विभाग की योजनाओं की जानकारी देने के साथ-साथ जल प्रबंधन और जल संरक्षण के लिए भी जागरूक किया जा रहा है। इस संबंध में उप संचालक कृषि यूपी बागरी ने बताया कि 10 जून को रीवा विकासखण्ड के ग्राम सुमेधा और बिहरा में शिविर लगाए गए। इनमें कृषि वैज्ञानिक डॉ चन्द्रजीत सिंह ने किसानों को फसलों की कतार से कतार में बोनी, खरपतवार नियंत्रण तथा फसल में खाद के संतुलित उपयोग की जानकारी दी। किसानों को उनके खेतों की माटी का परीक्षण कराकर मृदा हेल्थ कार्ड बनाने की समझाइश दी गई। शिविर में किसानों को मिल रही उपयोगी जानकारी की प्रशंसा करते हुए सरपंच बिहरा तथा प्रगतिशील किसान अजय सिंह ने कहा कि किसानों को वैज्ञानिक तरीके से खेती करने की सलाह दी गई।

दिव्यांग कुंजबिहारी को तत्काल वैशाखी उपलब्ध कराने के कलेक्टर ने दिये निर्देश

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्ट्रेट में आयोजित जनसुनवाई में कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने 129 आवेदकों की समस्यायें सुनी तथा संबंधित आवेदनों को विभागीय अधिकारियों को प्रेषित कर संतुष्टिपूर्वक कार्यवाही किये जाने के निर्देश दिये। कलेक्टर ने जनसुनवाई के दौरान डिहिया निवासी दिव्यांग कुंजबिहारी वर्मा को तत्काल वैशाखी उपलब्ध कराने के निर्देश सामाजिक न्याय विभाग के अधिकारी को दिये।

कलेक्ट्रेट के मोहन सभागार में आयोजित जनसुनवाई में घूमन निवासी अवधराज पाण्डेय, चोरगड़ी निवासी रामप्रसाद पटेल, भाटी निवासी गोपालशरण पाण्डेय तथा तिघरा निवासी बालमीक शुक्ला के सीमांकन कराने के आवेदनों को संबंधित तहसीलदार को प्रेषित कर कार्यवाही करने के निर्देश कलेक्टर द्वारा दिये गये। इसी प्रकार मदरी के संतोष पटेल ने सीमांकन कराकर नक्शा तरमीम किये जाने का आवेदन दिया जिसे तहसीलदार गंगेव को तथा देवगांव निवासी ममता तिवारी के नामांतरण के आवेदन को तहसीलदार मनगवां को कार्यवाही करने हेतु प्रेषित किया गया।

जनसुनवाई में प्रदीप कुमार शाहपुर ने खसरा सुधार का आदेश कम्प्यूटर में फीड कराने का आवेदन दिये जिस पर एसडीएम सिरमौर को कार्यवाही करने हेतु निर्देशित किया गया। रामलाल श्रीवास्तव मझिगवां ने पुलिस की उपस्थिति में सीमांकन कराने का आवेदन प्रस्तुत किये कलेक्टर ने तहसीलदार हुजूर को कार्यवाही के निर्देश दिये। इसी प्रकार पिपरी जोकहा के निवासियों के प्रचलित रास्ता से अतिक्रमण हटाकर पुनः प्रारंभ करने तथा मिट्टीकरण कराने आवेदन को तहसीलदार सिरमौर को, बालेन्द्र शेखर गौतम जुड़वानी निवासी के अतिक्रमण हटाने के आवेदन को तहसीलदार सेमरिया को तथा स्थगन के उपरांत सीमांकन की जांच के संबंध में चुनरी निवासी प्रतिभा सिंह के आवेदन को एसडीएम त्योंथर को कार्यवाही किये जाने हेतु प्रेषित किया गया। अंबिका प्रसाद तिवारी अतरैला ने मुआवजा राशि का बैंक द्वारा प्रेषण न करने का आवेदन दिया। कलेक्टर ने एलडीएम को कार्यवाही करने के निर्देश दिये।

जनसुनवाई में तमरा निवासी अल्कारानी सिंह के लाड़ली लक्ष्मी योजना के तहत प्रमाण पत्र दिलाये जाने के आवेदन पर कलेक्टर ने जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग को कार्यवाही करने के निर्देश दिये। कलेक्ट्रेट में आयोजित जनसुनवाई में सीईओ जिला पंचायत मेहताब सिंह गुर्जर तथा संयुक्त कलेक्टर पी.के. पाण्डेय ने भी लोगों की समस्यायें सुनीं।

किसानों को डीएपी के स्थान पर एनपीके के उपयोग की सलाह

मीडिया ऑडीटर, रीवा /सतना (निप्र)। जिले के कृषकों को सलाह दी गई है कि वह डीएपी के स्थान पर एनपीके उर्वरकों का प्रयोग करें। कृषि वैज्ञानिकों ने अपनी सलाह में कहा है कि डीएपी में केवल दो तत्व नाइट्रोजन व फास्फोरस प्राप्त होते हैं। जबकि एनपीके उर्वरक से फसलों के लिए आवश्यक सभी तीन मुख्य पोषक तत्वों नत्रजन, स्फुर एवं पोटाश की उपलब्धता होती हैं। इस प्रकार एनपीके उर्वरक से नत्रजन एवं स्फुर के अलावा पौधों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व पोटाश की पूर्ति किसान भाई सफलतापूर्वक कर सकते हैं। अतः एनपीके उर्वरक का प्रयोग करने पर किसान भाईयों को अलग से पोटाश डालने की जरूरत नहीं पड़ती है व लागत में कमी आती है। उप संचालक कृषि यूपी बागरी ने किसान भाईयों के लिए डीएपी के स्थान पर एनपीके खाद का उपयोग करने की सलाह दी है। उप संचालक ने कहा है कि फसलों में उर्वरकों का संतुलित उपयोग लाभदायक होता है। डीएपी के स्थान पर सिंगल सुपर फास्फेट और एनपीके का उपयोग अधिक लाभदायी है। इससे जमीन को सल्फर की प्राप्ति होती है। सिंगल सुपर फास्फेट का उपयोग खेत की तैयारी के समय किया जाता है। जिससे यह फसलों में अधिक कारगर रहता है। डीएपी में उपलब्ध 18 प्रतिशत नाइट्रोजन में से केवल 15 प्रतिशत नाइट्रोजन तथा 46 प्रतिशत फास्फोरस में से 39 प्रतिशत फास्फोरस पानी में घुलकर मिट्टी को प्राप्त होता है। शेष फास्फोरस मिट्टी में जमा हो जाता है जिससे मिट्टी कठोर हो जाती है। इसकी जल धारण क्षमता घटती है। उप संचालक ने बताया है कि आगामी फसल में शंकर धान एवं शंकर मक्का के लिए नाइट्रोजन, फास्फोरस एवं पोटाश एनपीके खाद का उपयोग अधिक लाभकारी होगा। दलहन एवं तिलहन फसलों में 80:40:30 एनपीके तथा सल्फर का उपयोग लाभदायी होगा।

उप संचालक ने बताया है कि किसान नैनो तकनीक पर आधारित खाद का भी उपयोग कर सकते हैं। फसलों के लिए 20 प्रतिशत नाइट्रोजन से युक्त नैनो यूरिया तथा 8 प्रतिशत नाइट्रोजन एवं 16 प्रतिशत फास्फोरस से युक्त नैनो डीएपी उपलब्ध है। इनके निर्धारित मात्रा में उपयोग से फसलों को संतुलित मात्रा में पोषक तत्व प्राप्त होते हैं। सामान्य तौर पर एक स्वस्थ पौधे में नाइट्रोजन की मात्रा 1.5 से 4 प्रतिशत तक होती है। फसलों की बढ़वार की स्थिति में इनमें नैनो यूरिया एवं नैनो डीएपी का पत्तियों में छिड़काव करने से पौधों को कारगर तरीके से नाइट्रोजन और फास्फोरस की उपलब्धता हो जाती है।

बिजली तार चोरी की कोशिश, गाड़ी और कटर छोड़कर भागे बदमाश

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना के हलावन गांव में मंगलवार तड़के बिजली तार चोरी की कोशिश नाकाम हो गई। ग्रामीणों और बिजली विभाग की टीम को आता देख बदमाश मालवाहक वाहन, कटर और तार छोड़कर भाग गए। वाहन में 53 खंभों की तार भरी थी। बिजली कंपनी के जेई ने अज्ञात के खिलाफ थाना सभापुर में शिकायत दी है।

बिजली कंपनी के जेई सुनील मिश्रा को सुबह 3.40 बजे सूचना मिली कि हलावन गांव के तिराहे पर कुछ लोग मालवाहक वाहन के साथ खड़े हैं। उन्हें तार चोरी की आशंका हुई। सूचना मिलते ही जेई अपनी टीम के साथ मौके पर रवाना हुए और ग्रामीणों को भी सतर्क किया गया। ग्रामीणों और कर्मचारियों की हलचल देखकर बदमाश भाग गए। वे वाहन, बिजली तार और कटर मौके पर ही छोड़ गए। वाहन में भारी मात्रा में बिजली के तार और कटर मिला है। मौके से 53 खंभों की तार बरामद हुई है। जेई ने बताया कि इस क्षेत्र में तार चोरी की घटनाएं पहले भी हुई हैं। दो दिन पहले अमुआ गांव के पास से भी कटी हुई तार बरामद की गई थी। अभी तक अमुआ बिजली केंद्र क्षेत्र में चोरी की तीन घटनाएं हो चुकी हैं। इनमें से दो बार तार बरामद कर लिए गए हैं।

जेई सुनील मिश्रा ने बताया कि बिजली तार चोरी रोकने के लिए उन्होंने कर्मचारियों और ग्रामीणों का एक व्हाट्सएप ग्रुप बनाया है। इसी ग्रुप से तत्काल सूचना मिली और कार्रवाई हो सकी। उन्होंने बताया कि मुखबिर तंत्र भी एक्टिव किया गया है, जिससे भविष्य में भी चोरी रोकी जा सकेगी।

मनगवां में आयोजित हुआ दिव्यांग शिविर, लाभान्वित हुए हितग्राही

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार द्वारा देश के विभिन्न जिलों के 75 आकांक्षी ब्लाको में क्रमबद्ध दिव्यांग उपकरण वितरण शिविर एडीप योजना अंतर्गत संचालित कर दिव्यांगों को निःशुल्क उपकरण प्रदाय किए जा रहे हैं, इसी क्रम में एलिम्को (भारतीय कृत्रिम अंग निर्माण निगम) जिला प्रशासन रेड क्रास एवं जिला पुनर्वास केंद्र रीवा के सहयोग से जनपद गंगेव, जनपद रायपुर कर्चुलियान, नगर परिषद मनगवां एवं गुढ के चिन्हित दिव्यांगजनों को उपकरण वितरण किए जाने हेतु दिनांक 10.06.2025 को शासकीय महाविद्यालय मनगवां में दिव्यांग उपकरण वितरण शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में उपस्थित मुख्य अतिथि सांसद रीवा जनार्दन मिश्रा एवं मंनगवा विधायक नरेन्द्र प्रजापति ने दिव्यांगों को सहायक उपकरण वितरण कर दिव्यांगजनों से चर्चा कर उनकी विभिन्न समस्याओं को दूर करने का आश्वासन दिया। एस.डी.एम. मनगवां पी.एस. त्रिपाठी के निर्देशन में जनपद सी.ई.ओ. गंगेव प्राची चौबे एवं जनपद सी.ई.ओ. संजय सिंह के द्वारा दिव्यांगो के लिए भोजन, पानी, बैठक आदि की आवश्यक समुचित व्यवस्था की गई। शिविर में मंडल अध्यक्ष मनगवां अरुणेन्द्र मिश्रा, जन भागीदारी समित के अध्यक्ष संजय दुबे, सदस्य जनभागीदारी समिति शत्रुध्न द्विवेदी, विधायक प्रतिनिधि शजगजीवन लाल तिवारी, किसान मोर्चा मण्डल अध्यक्ष लक्ष्मीकांत शर्मा सहित अन्य पदाधिकारी और प्राचार्य शा. महाविद्यालय मनगवां राजवती दीपांकर, तहसीलदार मनगवां सुमित गुप्ता, सामाजिक सुरक्षा अधिकारी जनपद गंगेव अरविन्द तिवारी सामाजिक सुरक्षा अधिकारी जनपद रायपुर कर्चुलियान श्रीमती अंकिता त्रिपाठी, सहित अन्य अधिकारी कर्मचारी की सहभागिता रही।

जिला दिव्यांग पुर्नवास केन्द्र के लेखा व भण्डार प्रभारी संदीप चतुर्वेदी से प्राप्त जानकारी अनुसार शिविर में कुल 72 चिन्हित दिव्यांगजनों को विभिन्न सहायक उपकरण प्रदाय किए गए जिसमें 11 नग बैटरी चलित ट्राईसाइकिल, 48 नग हस्तचलित ट्राईसाइकिल, 70 नग बैशाखी, 14 नग व्हीलचेयर, 14 नग एल्बो क्रच, 11 नग वाकिंग स्टिक,03 नग रोलेटर्स, 02 नग सुगम्य केन, 05 नग टी.एल.एम. किट एवं 22 नग हियरिंग ऐड (कान की मशीन) निःशुल्क रुप से प्रदाय की गई है। कार्यक्रम का कुशल संचालन अरविन्द तिवारी सामाजिक सुरक्षा अधिकारी जनपद गंगेव के द्वारा किया गया।

किसान संघर्ष समिति ने विंध्य क्षेत्र में शुरू की पांच दिवसीय किसान मजदूर आदिवासी अधिकार यात्रा

डॉ सुनीलम ने गांधी प्रतिमा स्थल से यात्रा का किया शुभारंभ

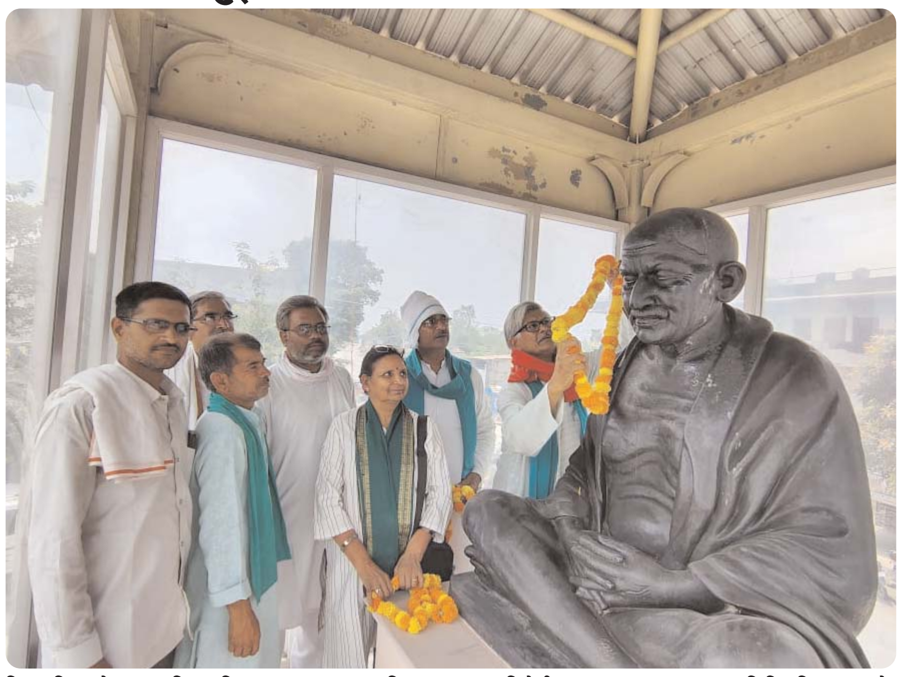

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। किसान संघर्ष समिति ने विंध्य इलाके के पांच जिलों में किसान मजदूर आदिवासी अधिकार यात्रा का शुभारंभ छिजवार जेपी चौराहा गांधी प्रतिमा स्थल से सुबह 10 बजे किसान संघर्ष समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष पूर्व विधायक डॉ सुनीलम ने गांधी प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर शुभारंभ किया उक्त अवसर पर राष्ट्रीय प्रवक्ता एड शिव सिंह प्रदेश अध्यक्ष एड आराधना भार्गव कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष इंद्रजीत सिंह शंखू प्रदेश सचिव संतकुमार पटेल एवं शत्रुघन यादव ग्वालियर पूर्व जिला पंचायत सदस्य अशोक सिंह सरपंच ज्ञानेंद्र सिंह गुड्डू मोर्चे के नेता के के शुक्ला शोभनाथ सेन मैहर प्रदीप बंसल मोहम्मद तौहीद इंद्रपाल सिंह मयंक सिंह आदि उपस्थित रहे इसके बाद यात्रा सतना रामपुर बघेलान के ग्राम जमुना पहुंची जहां डालमिया सीमेंट प्लांट लगाए जाने के विरोध में किसानों ने बड़ी सभा का आयोजन किया जिसकी अध्यक्षता वरिष्ठ समाजसेवी रामकरण सिंह ने किया यात्रा प्रमुख राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ सुनीलम ने डालमिया के खिलाफ लड़ाई का ऐलान करते हुए कहा कि एकजुट होकर के हम लड़ाई लड़ेंगे डालमिया को रोकेंगे डॉ सुनीलम ने यह भी कहा कि किसान संघर्ष समिति की यात्रा जल जंगल जमीन की लूट को रोकने किसानों को एम एस पी की कानूनी गारंटी दिलाने कर्जा मुक्ति कराने भूमि अधिग्रहण रोकने के संघर्ष को तेज करने के उद्देश्य से निकाली जा रही है राष्ट्रीय प्रवक्ता शिव सिंह ने कहा कि यदि आप एकजुट रहे तो किसान बिल वापसी की तरह डालमिया को भी वापस भागकर ही दम लेंगे प्रदेश अध्यक्ष एड आराधना भार्गव ने कहा कि किसानों के साथ जिस दिन उनके घर की महिलाएं निकलकर आंदोलन का हिस्सा बनेगी उसी दिन हमारी हर लड़ाई जीत का हिस्सा बनेगी कार्यकारी अध्यक्ष इंद्रजीत सिंह ने कहा कि किसान संघर्ष समिति ही असली हक अधिकार की लड़ाई लड़ रही प्रदेश सचिव शत्रुघ्न यादव एवं संतकुमार पटेल ने कहा कि किसानों मजदूरों आदिवासियों के हक अधिकार की लड़ाई अंतिम दम तक जारी रहेगी संचालन सतना के अध्यक्ष नंदलाल सिंह ने किया अन्य वक्ताओं में बीकेयू के दयाशंकर द्विवेदी एड रामशिरोमणि सिंह एड कृष्णपाल सिंह सरपंच बैरिहा विनीत मिश्रा जयराम सिंह सत्यभान सिंह दयाशंकर द्विवेदी एड सैलेश सिंह तेजभान सिंह सेमरिया यात्रा प्रवेश दौरान समाजवादी नेता पूर्व सांसद स्वर्गीय यमुना प्रसाद शास्त्री की प्रतिमा पर राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ सुनीलम ने मोर्चे के नेताओं की उपस्थिति में श्रद्धा सुमन अर्पित किया दौरान सभा धान खरीदी का रुपया भुगतान न किए जाने का मामला किसानों ने उठाया दौरान सभा मोर्चे के नेता वीरभद्र सिंह अशोक सिंह छोटेलाल तिवारी शिवेंद्र सिंह लल्लू अनिल मिश्रा चंद्रभान सिंह नारेंद्र सिंह जागेंद्र सिंह छोटेलाल सिंह अशोक सिंह संतोष सिंह शिवशंकर कुशवाहा बालेंद्र सिंह आदि उपस्थित रहे सायंकाल यात्रा 6 बजे सिरमौर तहसील के ग्राम तिलखन पहुंची जहां किसान संघर्ष समिति के अध्यक्ष फौजी यदुवंश प्रताप सिंह के द्वारा सभा आयोजित की गई जहां अध्यक्षता पशु संरक्षण समिति तिलखन के अध्यक्ष रमेश प्रताप सिंह ने किया मुख्य वक्ता की हैसियत से मिशा बंदी बृहस्पति सिंह ने कहा कि पूरा इलाका आवारा पशु समस्या से ग्रसित है किसान स्थाई निदान चाहता है वहीं जिला पंचायत सदस्य मोर्चे के नेता लालमणि त्रिपाठी ने भी अपने विचार व्यक्त किए अन्य वक्ताओं में राजबहोरन सिंह गोरे कमलेश्वर सिंह अवधेश प्रताप सिंह राजबहोरन सिंह फ़ौजी रामराज मिश्रा सरपंच दिनेश कोल शिवनाथ सिंह बघेल सहित सैकड़ो की संख्या में किसान एवं गांव के प्रमुख उपस्थित रहे सभी ने राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ सुनीलम से आवारा पशु समस्या का स्थाई निदान करने की मांग रखी जिसको लेकर किसान संघर्ष समिति ने बड़ी लड़ाई का वादा किया है कार्यक्रम उपरांत यात्रा विश्राम तिलखन में किया गया।

कलेक्ट्रेट मऊगंज में 75 आवेदकों की हुई सुनवाई

मीडिया ऑडीटर, मऊगंज (निप्र)। मऊगंज 10 जून 2025.मऊगंज जिले में आयोजित साप्ताहिक जनसुनवाई के दौरान कलेक्ट्रेट सभागार में संयुक्त कलेक्टर राजेश मेहता ने 75 जनसुनवाई में राजस्व, बिजली, जल, स्वास्थ्य, शिक्षा, महिला एवं बाल विकास, बैंक, सहकारिता सहित कई विभागों से आए अधिकारियों की उपस्थिति में लोगों ने अपनी समस्याएं रखीं।

जनसुनवाई के दौरान सबसे जल संसाधन विभाग के कर्मचारियों के तीन माह से लंबित वेतन भुगतान का आवेदन दिया। संयुक्त कलेक्टर राजेश मेहता ने शिकायत को गंभीर मानते हुए विभागीय अधिकारियों को त्वरित संज्ञान लेने और वेतन भुगतान की प्रक्रिया शुरू करने के निर्देश दिए। ग्राम पंचायत बरहटा में आम रास्ते को निजी नाम पट्टे पर देने के जनसुनवाई में आवेदन पर कार्यवाही के निर्देश दिये गये। संयुक्त कलेक्टर ने इस संबंधित एसडीएम और राजस्व विभाग को तत्काल जांच कराकर जनहित में आवश्यक कार्वाई के निर्देश दिए।

घुरेहटा निवासी आशा सिंह ने गांव में ट्रांसफार्मर लगवाने की मांग की।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक/प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया ऑडीटर पब्लिकेशन प्रा.लिमि. राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से प्रकाशित, **संपादक संदीप द्विवेदी**, आर.एन.आई नं. 69082/97, डाक पंजीयन क्र.- म. प्र./ रीवा संभाग/ 46/2023-2025, प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9589645803, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।